बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी के शिक्षा-संकाय में

पी-एच०डी-उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

शोध विषय :-

"जनपद जालौन के अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों पर आर्थिक एवम् सामाजिक कारणों का आत्म-प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

शोध निर्देशक
डा० सतीश चन्द्र शर्मा
अध्यक्ष एवं रीडर
मनोविज्ञान विभाग
गांधी महाविद्यालय, उरई

अनुसंधित्सु
राधेश्याम पालीवाल
प्रवक्ता
गांधी महाविद्यालय, उरई

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री राधेश्याम पालीवाल प्रबक्ता बी०एड० विभाग गांधी महाविद्यालय उरई, के पी-एच० डी० उपाधि हेतु शोध शीर्षक "जनपद जालौन के अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों पर आर्थिक एवं सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन " के दौरान निरन्तर मेरे सम्पर्क में रहे और मेरे द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया है। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि उनका यह शोध कार्य मौलिक, उपयोगी तथा विश्वविधालय परिनियमावली द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप है।

शोध - निर्देशक

सतीश चन्द्र शर्मा

डॉ० सतीश चन्द्र शर्मा
रीडर एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग
गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई

पुरोवाक्
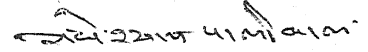
"जनपद जालौन के अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों पर आर्थिक एवं सामाजिक कारणों का आत्म-प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन " - विषय पर किये गये अनुसंधान के प्रथम अनुच्छेद में जनपद जालौन के अनुसूचित जाति के सवर्ण जाति के छात्रों के आर्थिक एवं सामाजिक सन्दर्भों में उनके आत्म-प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अनुसन्धान किया गया है । दूसरे अनुच्छेद में सामाजिक परिप्रेक्ष्य में सवर्ण एवम् अनुसूचित जाति के छात्रों के बीच आत्म-प्रत्यात्मक प्रभविष्णुता के सम्बन्ध में डा० बुच के समस्त सर्वेक्षणों तथा अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में अनुसंधान का प्रयास किया गया है । तीसरे अनुच्छेद में परीक्षणात्मक अध्ययन के माध्यम से आत्म-प्रत्यय सूची, वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली, शैक्षिक तथा व्यावसायिक अपेक्षा पैमाना तथा सामाजिक - स्तर मापनी के माध्यम से शोध का प्रयास किया गया है । चतुर्थ अनुच्छेद में आत्म-प्रत्यय संबंधी वर्तमान अध्ययन तथा सामाजिक एवम् आर्थिक परिस्थितियों का वैज्ञानिक सर्वेक्षण के माध्यम से अध्ययन किया गया है ।

अब तक का अछूता यह विषय अद्यतन परिस्थितियों में कितना महत्वपूर्ण है - यह बताने की आवश्यकता नहीं । अनुसंधित्सु ने वर्तमान भारतीय सामाजिक परिस्थितियों को दृष्ट्पथ पर रखते हुए सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के मध्य बढ़ती दूरियों के अन्तःनिर्गूढ़ तत्वों की तलाश की चेष्टा रही है । कहना न होगा कि सामाजिक सन्दर्भ आत्म-प्रत्यय को किस हद तक प्रमावित करते हैं - इसका निष्कर्ष अनुसंधायक ने निकालने का विनम्र उपक्रम किया है । इस शोध कार्य की प्रेरणा देने वाले मेरे स्वर्गीय पिताजी श्री शिवप्रसाद पालीवाल तथा पुण्यश्लोम मातुश्री श्रीमती रामकली पालीवाल को सश्रद्ध स्मरण करता हूँ । मैं अपने शोधनिर्देशक गांधी महाविद्यालय में मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष डा० सतीश चन्द्र शर्मा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ उन्होंने उत्साहवृद्धि तथा उपस्मारक आदि सन्दर्भ ग्रन्थ संकलित करवाने के अतिरिक्त इस शोधकार्य के दौरान समय और सहयोग देने में किसी प्रकार की कृपणता नहीं की है ।

इस प्रकार मैं. डी०वी० डिग्री कॉलेज में मनोविज्ञान के प्रवक्ता डा० तारेश भाटिया के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस अनुसंधान कार्य में मेरा सतत् सहयोग किया है। इस अवसर पर गांधी महाविद्यालय में बी०एड० विभाग के रीडर डा० अशोक कुमार तरसौलिया, सुरेन्द्र कुमार बाजपेयी व भूगोल विभाग के प्रवक्ता महेश चन्द्र शुक्ला का स्मरण करना स्वाभाविक है, उन्होंने इस शोधकार्य में मेरा निरन्तर उत्साहवर्धन किया है। मैं गांधी महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर डॉ० दिनेश चन्द्र द्विवेदी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। अंत में मैं अपनी मौसी श्रीमती रामदुलारी पालीवाल को यह शोध ग्रन्थ श्रद्धावूर्वक समर्पित करता हूँ। इस अवसर पर मैं अपने पुत्र आयुष्मान पंकज पालीवाल एम० एड० के सुलभ सहयोग को याद करके पुत्र के प्रति वात्सल्य भाव-धारा से अभिभूत हूँ। मेरी धर्मपत्नी कुन्ती देवी पालीवाल के - अनुसंधित्सु सहयोग को इस संदर्भ में भूलाना न्याय संगत न होगा। -.

सुन्दर आकर्षक छपाई के लिए सीताशरण गौतम जो मेरे शिष्य व ब्रज कम्प्यूटर के प्रोपराईटर है इनका सहयोग सदैव स्मर्णीय रहेगा।

अनुसंधित्सु

(राधेश्याम पालीवाल)

प्रवक्ता, बी०एड० विभाग

गांधी स्नातकोत्तर महा विद्यालय, उरई- जालौन

विषय-अनुक्रम

प्रथम अध्याय - प्रस्तावना

समस्या 1-40

सम्बन्धित परिवर्तियों का वर्णन

जाति

मूल्य

सामाजिक-आर्थिक स्थिति

आकांक्षा-स्तर

आत्म-प्रत्यय

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य

शून्य परिकल्पनायें

प्रस्तुत अध्ययन की परिसीमायें

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

द्वितीय अध्याय - सम्बन्धित अनुसंधानों का विवरण 41-57

अनुसूचित व सवर्ण जाति तथा आत्म-प्रत्यय

मूल्य तथा आत्म-प्रत्यय

सामाजिक-आर्थिक स्थिति व आत्म-प्रत्यय

शैक्षिक-व्यावसायिक आकंक्षा-स्तर का आत्म-प्रत्यय से सम्बन्ध

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

तृतीय अध्याय- अनुसन्धान पद्धति तथा अनुसन्धान अभिकल्प 58-71

जनसंख्या

प्रतिदर्श

अनुसंधान अभिकल्प

प्रयुक्त परीक्षणों का विवरण

प्रदत्त संकलन

सांख्यकीय पद्धति

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

चतुर्थ अध्याय - प्रदत्त विश्लेषण तथा विवेचन 73-154

भाग एक - अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय के सन्दर्ब में विश्लेषण

भाग दो - विभिन्न प्रकार के मूल्यों का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का विश्लेषण

भाग तीन - सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का विश्लेषण

भाग चार - शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का विश्लेषण

भाग पाँच - व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का विश्लेषण

पंचम अध्याय - प्राप्त परिणामों का शैक्षिक अनुप्रयोग तथा आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव 155-158

षष्ठम् अध्याय - संक्षिप्तीकरण 159-169

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

परिशिष्ट'अ'(i) - अनुसूचित जाति के छात्रों के सामाजिक-आर्थिक स्तर आकांक्षा-स्तर, मूल्य एवं आत्म-प्रत्यय पर मूल प्राप्तांक

(ii) सवर्ण जाति के छात्रों के सामाजिक-आर्थिक स्तर, आकांक्षा-स्तर, मूल्य एवं आत्म-प्रत्यय पर मूल प्राप्तांक

परिषिष्ट 'ब' - (i) सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी परीक्षण

(ii) व्यावसायिक आकांक्षा मापनी

(iii) शैक्षिक आकांक्षा मापनी

(iv) व्यक्तिगत मूल्य परीक्षण प्रशनावली

(v) आत्म-प्रत्यय प्रश्नावली

तालिका सूची

1- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के आत्म - प्रत्यय मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य

2- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रो का शारीरिक आत्म- प्रत्यय मध्यमान प्रामाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य

3- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों का सामाजिक आत्म -प्रत्यय मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एंवं 'टी' मूल्य

4- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों का स्वभावगत आत्म -प्रत्यय मध्यमान , प्रामाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य

5- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों का शैक्षिक आत्म -प्रत्यय मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा टी मूल्य

6- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों का नैतिक आत्म -प्रत्यय मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य

7- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों का बौद्धिक आत्म - प्रत्यय मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा 'टी' मूल्य

8- विभिन्न मूल्यों के चतुर्थांक एक (Q1) चतुर्थाक तीन (Q3) का निर्धारण

9- उच्च तथा निम्न धार्मिक मूल्य से सम्बंधित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म- प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिंक विचलन

10- प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म -प्रत्यय पर धार्मिक मूल्य एवं जाति का प्रभाव

11- उच्च तथा निम्न सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म -प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

12-प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म - प्रत्यय पर सामाजिक मूल्य एवं जाति का प्रभाव

13- उच्च तथा निम्न जनतंत्रात्मक मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

14-प्रसरम -विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म - प्रत्यय पर जनतंत्रान्तमक मूल्य एवं जाति का प्रभाव

15-उच्च तथा निम्न सौन्दर्यत्मक मूल्य से सम्वन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

16- प्रसरण -विसलेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म - प्रत्यय पर सौन्दर्यत्मक मूल्य एमं जाति का प्रभाव

17-उच्च तथा निम्न आर्थिक मूल्य से से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म -प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

18-प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म -प्रत्यय पर आर्थिक मूल्य तथा जाति का प्रभाव

19- उच्च तथा निम्न ज्ञान मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

20- प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म - प्रत्यय पर ज्ञान मूल्य तथा जाति का प्रभाव

21- उच्च तथा निम्न सुखबादी मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एमं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

22- प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म -प्रत्यय पर सुखवादी मूल्य तथा जाति का प्रभाव

23- उच्च तथा निम्न शक्ति मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

24- प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर शक्ति मूल्य तथा जाति का प्रभाव

25- उच्च तथा निम्न परिवार प्रतिष्ठा मूल्यसे सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

26- प्रसरण-विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर प्रतिष्ठा मूल्य तथा जाति का प्रभाव

27- उच्च तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

28- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर स्वास्थ्य मूल्य तथा जाति का प्रभाव

29- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थित के सवर्ण जातिं एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

30- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

31- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान और प्रामाणिक विचलन

32- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

33- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

34- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

35- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

36- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं जाति का प्रभाव

37- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

38- प्रसरण-विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं जाति का प्रभाव

39- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का नैतिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

40- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश नैतिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं जाति का प्रभाव

41- उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

42- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

43- उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

44- प्रसरण-विश्लेषण (2x2अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

45- उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रांमाणिक विचलन

46- प्रसरण-विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

47- उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

48- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

49- उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय मध्यमान और प्रामाणिक विचलन

50- प्रसरण विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर एवं जाति का प्रभाव

51- उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

52- प्रसरण विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

53- उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का नैतिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

54- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश नैतिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

55- उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

56- प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश बौद्धिक आत्म प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

57- उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

58- प्रसरण-विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

59- उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रो का शारीरिक आत्म -प्रत्यय मध्यमान प्रामाणिक विचलन

60 -प्रसरंण -विश्लेषण (2x2व्यापारिक अभिकल्प) परिणाम सारांश शारीरिक आत्म -प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

61- उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का सामाजिक आत्म -प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

62- प्रसरण- विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश सामाजिक आत्म -प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

63- उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर कें सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का स्वभावगत आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

64- प्रसरण - विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश स्वभावगत आत्म - प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

65- उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का शैक्षिक आत्म - प्रत्यय मध्यमान प्रामाणिक विचलन

66- प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश शैक्षिक आत्म - प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षास्तर तथा जाति का प्रभाव

67- उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का नैतिक आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

68- प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश नैतिक आत्म - प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षास्तर तथा जाति का प्रभाव

69- उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का बौद्धिक आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

70- प्रसरण - विश्लेषण (2x2कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश बौद्धिक आत्म - प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

प्रथम-अध्याय

प्रस्तावना

'जाति' अथवा अंग्रेजी शब्द 'कास्ट' विविध व्यावसायिक समूहों तथा आत्मसात हुए राष्ट्रीय तथा जनजातीय समूहों के सन्दर्भ में है । जाति प्रथा के अन्तर्गत समूह में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण आनुवंशिक होता है । प्रमुख रुप से जातियों का वर्गीकरण तीन समूहों में किया जा सकता है ।

(i) उच्चतर जातियाँ

(ii) पिछड़ी जातियाँ

(ii) निम्नतर जातियाँ

उच्चतर जातियों में ब्राम्हण, क्षत्रिय तथा वैश्य आते हैं जबकि निम्नतर जातियों में शूद्र, हरिजन अथवा दलित वर्ग को गिना जाता है । समाज सुधारकों तथा राष्ट्रवादियों ने खान -पान व शादी- विवाह के सन्दर्भों में कट्टरता को शिथिल करने तथा कठोर जातीय बन्धनों को तोड़ने का प्रयास किया । औद्योगीकरण तथा नगरीकरण से उत्पन्न नई परिस्थितियों ने जाति के साथ आनुवांशिकता के आधार पर जुड़ी व्यवसाय की परम्परा को तोड़ दिया है । इस प्रकार हिन्दू जनजीवन को एक नई जीवन शैली तथा एक नया परिवेश प्राप्त हुआ । इन क्रान्तिकारी परिवर्तनों ने हिन्दुओं के जीवन को कितना प्रभावित किया है । वस्तुतः इन परिस्थितियों का सम्यक निरीक्षण परीक्षण हमें यह कहने के लिए आधार प्रदान करता है कि इन परिस्थितियों को हिन्दुओं ने स्वीकार कर लिया है । वे ग्रामवासी हों या नगरवासी हों । हाँ यह अवश्य है कि जीवनीय समस्यायों से निपटने के लिए हिन्दू मानसिकता ने इस परिवर्तन को एक तेवर के रुप में ग्रहण किया है।

जीवित रहने के लिए इन परिस्थितियों के आधार पर जातीय कट्टरता को शिथिल या समाप्त करने को एक अनिवार्य आवश्यकता के रुप में स्वीकृति दी है। यही कारण है कि आज भी वह अपना जीवन अपने जाति समूह के रूप में जारी रखे हुए हैं। यद्यपि ऐसा करने में उसे बहुत सी कानूनी अड़चनों का सामना करना पड़ता है ।

इस प्रकार भारत में सामाजिक जीवन में क्रान्ति हुई है किन्तु फिर भी इस बात को पूर्ण विश्वास से नहीं कहा जा सकता है कि हम जाति से संयुक्त नहीं हैं। जैसा कि भास्करन ने व्यक्त किया है कि हमें यह मानना ही चाहिये कि जाति प्रथा अस्तित्व में है । यह अनेक विचारकों का मत है कि जातियां नये कार्य अपना रही हैं । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जाति का राजनीति पर प्रभाव

डालना है । जातीय समीकरण राजनीति का एक आवश्यक पहलू बन गया है । यधपि अनेक समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ तथा सामाजिक वैज्ञानिकों ने राजनीति पर जाति पर पड़ते हुए प्रभाव पर अपनी चिन्ता व्यक्त की है साथ ही सामाजिक जीवन के अन्य अनेक क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभाव पर या जाति प्रथा पर अधिक लिखा जा रहा है । फिर भी यह सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए अनुसन्धान के प्रमुख विषयों में से एक है ।

सामाजिक कारकों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति का भी अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि इनके अनुसार ही व्यक्ति के जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होती है जब तक इन आधारभूत आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति सरल व सुन्दर ढंग से होती रहती है, तब तक बच्चे में असुरक्षा की भावना पनप नहीं पाती । उस अवस्था में व्यक्ति के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास सम्भव होता है। इसके विपरीत जब व्यक्ति मौलिक आवश्यकताओं तक को पूरा नहीं कर पाता है , तब उसमें मानसिक तनाव, चिन्तायें तथा असुरक्षा की भावना घर कर जाती हैं । इसलिए जिन बच्चों का जन्म गरीब परिवारों में होता है उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पाता है। वे निराशा का अनुभव करते हैं तथा जीवन के प्रति उनका स्वाभाविक आकर्षण कम हो जाता है । प्रतिकूल आर्थिक दशायें बच्चे को अपराधी या बाल-अपराधी बनने में सहायता देती हैं अर्थात उसके व्यक्तित्व में अपराधी प्रवृत्तियां पनप जाती हैं । निर्धन बच्चा जब अपने से अधिक सम्पन्न परिवारों के बच्चों को नाना प्रकार की सुविधाओं तथा विलासिता की वस्तुओं का उपभोग करते देखता है और चाहने परभी अपनी निर्धनता के कारण उन वस्तुओं को प्राप्त नही कर पाता तो उसमें हीनता की भावना ही नही पनपती वरन लालच, द्वेष अथवा जलन की भावनायें भी पैदा हो जाती हैं । पहले वह वैध तरीकों से उन वस्तुओं का प्राप्त करने का प्रयत्न करता है और जब वह इन प्रयत्नों में असफल हो जाता है तो चोरी जैसे अवैध तरीके अपनाता है । निर्धनता का दूसरे प्रकार का प्रभाव यह होता है कि माता पिता दोनों को नौकरी करने के लिंए निकलना पड़ता है इस प्रकार माता पिता व बच्चे एक दूसरे से दूर रहते हैं । फलतः बच्चों पर नियन्त्रण ढीला पड़ जाता है । साथ ही ऐसे माता पिता न तो अच्छे मकान में रह पाते हैं और न बच्चों को कायदे की शिक्षा ही दे पाते हैं ।

इसी प्रकार व्यक्ति के मूल्य उसकी जीवन-शैली को प्रभावित करते हैं । मानव को जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते हैं जो समय की गति के साथ बढ़ते जाते हैं । इन्हीं अनुभवों

में से कुछ सामान्य सिद्धान्त जन्म लेते हैं जो मानव के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। ऐसे सामान्य सिद्धान्तों जो समस्त जीवन को एक दर्शन के रुप में परिवर्तित कर देते हैं तथा समस्त जीवन जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देते हैं एवं उनके पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं 'मूल्य' कहलाते हैं। व्यक्ति के मूल्य इस बात का दर्पण होते हैं कि वे अपनी सीमित शक्ति एवं समय में क्या करना चाहते हैं जीवन के पथ-प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ-साथ अधिक परिपक्व होते जाते हैं। मूल्य व्यक्ति की रुचियों, प्रेरणाओं एवं अभिवृत्तियों की ओर भी प्रकाश डालते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आकांक्षा या महत्वकांक्षा होती है। इसका सम्बन्ध जीवन के कार्यों से होता है, आकांक्षा का स्तर प्रत्येक व्यक्ति में एक समान नहीं होता तथा व्यक्ति इसके अधार पर अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है। यह व्यक्ति की उस सीमा की ओर संकेत करता है, जिस सीमा तक व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य स्थापित करना चाहता है। आकांक्षा-स्तर उच्च होने पर अनेक बार मनुष्य अधिक प्रेरित होकर कार्य करता है। सफलता को प्राप्त करने के उपरान्त आकांक्षा-स्तर भी ऊँचा हो जाता है। परन्तु कभी-कभी इसी के कारण मनुष्य में आन्तरिक अन्तर्द्वन्द भी उत्पन्न हो जाता है। जैसे एक व्यक्ति का आकांक्षा-स्तर तो काफी उच्च है परन्तु योग्यता की कमी या अन्य कारणों से उस स्तर पर पहुंचने में असमर्थ है तो उसमें इस असमर्थता की चिन्ता उत्पन्न हो जाती है जो कभी-कभी मानसिक असुन्तलन का कारण बन जाती है। प्रायः यह देखा गया है कि आशावादी व्यक्तियों का आकांक्षा-स्तर सदैव ऊंचा होता है जबकि निराशावादी व्यक्ति का कम। इसी प्रकारव्यक्ति की सफलता असफलता का प्रभाव भी पड़ता है इसके माध्यम से लक्ष्य निर्धारण का अध्ययन किया जाता है। इसे एक प्रकार का सामाजिक प्रेरक भी माना जाता है जिसके अन्तर्गत अहम् के प्रति लगाव तथा आत्मसम्मान की प्रतिक्रियायें देखने को मिलती हैं। जिस संस्कृति में व्यक्ति का पालन-पोषण होता है उसी के अनुरुप वह अपनी सफलताओं का निर्धारण करता है।

अनुसंधान समस्याः-

सामाजिक प्राणी के रूप में ये व्यक्ति समाज में रहता है समाज में ही में पलता है। यह समाज व्यक्ति को लेकर नहीं बनता। समाज में उनके व्यक्ति होते हैं और प्रत्येक व्यक्तिअपने सामाजिक जीवन में अन्य अनेक व्यक्तियों द्वारा घिरा रहता है। इन व्यक्तियों से उसका सामाजिक सम्बन्ध

होता है और इसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति अपने चारों ओर सम्बंधों के एक जाल की रचना करता है। यह जाल जन्म से मृत्यु तक उसे घेरे रहता है और उसके व्यक्तित्व के विकास पर अपना प्रभाव डालता है। साथ ही अनेक प्रकार के व्यवहारों, आचरणों, आदतों तथा अभिवृत्तियों आदि का विकास होता रहता है। इनमें से अनेक व्यवहारों, आदतों तथा अभिवृत्तियों को व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों से ग्रहण करता है या सामाजिक अन्तः क्रियाओं के दौरान सीखता है। उनकी सहायता से व्यक्ति न केवल दूसरों को पहचानता है वरन् अपने को भी पहचानने लगता है अर्थात् व्यक्ति स्वयं अपने बारे में कोई न कोई धारणा बनाने में सफल होता है जिसे आत्म-प्रत्यय कहते हैं।

आत्म- प्रत्यय को व्यक्तित्व की संरचना का एक आवश्यक अंग माना जाता है। वास्तव में हम व्यक्ति के आत्म को उसके व्यक्तित्व का केन्द्र कह सकते हैं, क्योंकि आत्म के चारों ओर ही व्यक्तित्व के अन्य तत्व या लक्षण संगठित होते हैं। तब व्यक्ति अपने स्वयं आत्म के सम्बंध में कुछ निश्चित धारणा (आत्म-प्रत्यय) बनाने में सफल नहीं होता, तब तक वह अपने चारों ओर की दुनिया को भी उचित रूप से सम्बंधित नहीं कर पाता है। इस प्रकार आत्म-प्रत्यय सामाजिक परिस्थितियों में सामाजिक अन्तः क्रियाओं के फल स्वरूप विकसित होता है और व्यक्ति की व्यवहार-व्यवस्था की एक महत्व पूर्ण विशेषता बन जाती है।

प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत अनुसंधान कर्ता यह जानना चाहता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थीयों के आत्म- प्रत्यय तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थीयों के आत्म-प्रत्यय में क्या अन्तर है ? क्या आत्म-प्रत्यय को जाति प्रभावित करती है अथवा नही ? इसी प्रकार विभिन्न मूल्यों से प्रभावित विद्यार्थीयों की एक विशिष्ट जीवन/शैली बन जाती है। क्या विद्यार्थियों के मूल्यों का प्रभाव उनके आत्म-प्रत्यय पर पड़ता है अथवा नही ? इसी तरह एक महत्वपूर्ण कारक सामाजिक आर्थिक-स्थिति से विद्यार्थीयों के आत्म-प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है। अर्थात् सामाजिक-आर्थिक स्थिति से कमजोर विद्यार्थीयों का आत्म-प्रत्यय तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सबल विद्यार्थीयों का आत्म-प्रत्यय कुछ अन्तर सार्थक रूप में रखता है अथवा नहीं ? विद्यार्थीयों की अपनी शैक्षिक व्यावसायिक आकांक्षायें होती हैं। शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर भी विद्यार्थी के आत्म-प्रत्यय को प्रभावित कर सकती हैं।

प्रस्तुत अनुसंधान समस्या के रूप में उक्त तथ्यों के आधार पर निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया

" जनपद जालौन के अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों पर आर्थिक एवं सामाजिक कारणों का आत्म-प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

प्रस्तुत अनुसंधान से सम्बंधित परिवर्तियों का विवरण -: प्रस्तुत अनुसंधान से सम्बंधित परिवर्तियों का विवरण इस प्रकार हैं -

जाति CASTE :-

जाति के लिए अंग्रेजी में कास्ट शब्द का प्रयोग होता है । यह पुर्तगाली भाषा में कैस्टा शब्द से बना है जिसका अर्थ वंश, नस्ल या वर्ग से होता है । पुर्तगीज में होमेम डि बोआ कास्टा का मतलब होता है 'अच्छे परिवार का एक व्यक्ति' जिस सीमित अर्थ में आज इसका प्रयोग होता है सम्भवतः उस अर्थ में सबसे पहले इसका प्रयोग 1563 में हुआ जब गार्सिया डि आर्टा ने भारत की चमार जाति पर लिखा कि कोई अपने पिता का व्यावसाय नही छोड़ता और चमार जाति के सभी व्यक्ति जूता ही बनाते हैं । यूल और बर्नेल ने भी 1567 में गोवा की सीक्रेट कौंसिल की एक डिग्री का उल्लेख करते हैं जिसमें कहा गया है कि हिन्दुओं में बहुत सी नस्लें या जातियाँ हैं जिनके सम्मान की मात्रा अधिक या कम है । जो ईसाइयों को अपने से छोटा मानते हैं और ऊँची जाति का कोई व्यक्ति नीची जाति के व्यक्ति के साथ खान-पान का सम्बन्ध नहीं रखता ।

जाति की परिभाषा तो इसकी शाब्दिक व्युत्पत्ति से भी कठिन है । रिजले ने इसकी परिभाषा दी है कि, "जाति ऐसे परिवारों या परिवार समूहों का संग्रह है जिनके समान नाम हों । जो अपनी जाति उत्पत्ति किसी पौराणिक या ऐतिहासिक व्यक्ति से मानते हों । जो एक ही पुश्तैनी व्यवसाय करने का प्रदर्शन करते हों । एक समान बिरादरी मानते हों । जाति नाम खास-खास पेशों से सम्बन्ध रखते हैं और एक जाति के लोग एक सीमित दायरे में ही विवाह करते हैं । ब्राम्हण अपनी जाति ही नहीं उसी उपजाति में विवाह करेगा ।"

रिजले की इस परिभाषा पर आपत्ति की जा सकती है । किसी एक ही पौराणिक पुरूष से उत्पत्ति मानना तो गोत्र हुआ । गोत्र के बाहर विवाह किया जाता है, जबकि विवाह जाति में होता है। जातीय विवाह जाति प्रथा की विशेषता है । किन्तु अकेले ब्राम्हण शब्द का एक जाति के अर्थ में

प्रयोग सन्देहास्पद है । यह कथन इतना अस्पष्ट है कि इसका कोई मूल्य नहीं, क्योंकि ब्राम्हण ऋग्वेद समाज के चार वर्णों अथवा रंगों में एक तो है किन्तु वह कास्ट नहीं है, जिसके लिए हिन्दी में जाति शब्द का प्रयोग होता है ।

केतकर के अनुसार, ''जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है'' जिसकी दो विशिष्टतायें होती हैं-

1- इसके वही सदस्य हो सकते हैं, जो किसी सदस्य के बेटे हों और इसमें ऐसे सभी व्यक्ति शामिल हैं जो इस प्रकार जन्मे हों ।

2- सदस्य ऐसे सामाजिक कानून के जरिये इस समूह के बाहर विवाह नहीं कर सकते। इनमें से हर समूह का अपना अलग-अलग नाम है । इस प्रकार के अनेक समूहों का एक सामान्य नाम होता है ये विशाल समूह उससे भी बड़े समूह का अंग होता है जिनके स्वतंत्र नाम होते हैं । इस प्रकार हम देखते हैं कि समूहों के कई चक्र होते हैं और इनमें से किसी भी समूह के किसी भी चक्र को जाति कहा जा सकता है । जाति और उपजाति शब्द भी निरपेक्ष शब्द नहीं है अपितु सापेक्ष है । बड़े समूह को जाति तथा छोटे समूह को उपजाति कहा जाता है । जब हम मराठा ब्राम्हण या कोंकण ब्राम्हण की बात कहते हैं तो इसमें पहला जाति है और दूसरा उपजाति । किन्तु सामान्य ढंग से दोनों को जाति कह सकते हैं । इन भेदों और उपभेदों की कल्पना विभिन्न सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर की गयी है । इस प्रकार बीस करोड़ हिन्दू का इस रूप में विभाजन और पुनर्विभाजन किया गया है कि कोई कोई तो ऐसी भी है कि जिसमें सदस्य पन्द्रह परिवारों से बाहर विवाह नही कर सकते ।"

किन्तु यह परिभाषा भी पूरी तरह से सन्तोषजनक नहीं है क्योंकि अनेक ऐसी जातियां हैं, विशेषकर दक्षिण में जिनकी सदस्यता दो ऐसी जातियों की सम्मलित सन्तानों से मिलकर बनी है जो स्वयं उस जाति के नहीं होते । इनके अलावा उनके भी सदस्य होते हैं जिनकी उत्पत्ति इसी प्रकार हुई है और वे उन्हें उस जाति की सदस्यता पहले से ही प्राप्त होती है । मालावार के अंबलबासी, उड़ीसा के शागिर्द पेशा, चासा और करन ऐसी ही जातियां हैं । ध्यान देने की बात यह हैकिउपर्युक्त चारों जातियों में पहली मन्दिर के नौकर होते हैं जबकि अन्य तीन व्यावसायिक जातियां हैं। शागिर्द पेशा घरेलू नौकर होते हैं, चासा कृषक और करन दिविर होते हैं जो उत्तर भारत के कायस्थों जैसे होते हैं, किन्तु सामान्य रूप से यह परिभाषा ठीक है । यद्यपि भारत के अनेक भागों में जाति व्यवस्था अभी इतनी तरलावस्था में है कि उसमें ऐसा व्यक्ति भी शामिल हो सकता है जो इसमें

न पैदा हुआ हो। पूर्वी बंगाल में वैधों की एक उपजाति है जो कायस्थों में विवाह करती है और उनके बराबर मानी जाती है। सुनरियों के बारे में कहा जाता है कि ये पिता की जाति ग्रहण करते हैं। (रिजले) यद्यपि सभी जातियां और उपजातियां अपने अन्दर ही विवाह करती हैं, किन्तु अनेक उपजातियां ऐसी नही है। वे अपनी ही जाति में दूसरी उपजातियों से विवाह करती हैं।

एन० के० दत्त ने जाति की परिभाषा देने से अपने को रोका है, किन्तु उन्होंने जाति की विशेषतायें बतायीं हैं। किसी जाति के सदस्य दूसरी जाति में विवाह नहीं कर सकते। इसी प्रकार दूसरी जाति के साथ खान-पान के मामले में भी निषेध हैं पर वे उतने कड़े नहीं है। अनेक जातियों के निश्चित पेशे हैं, जातियों में कुछ ऊँची और कुछ नीची भी मानी जाती है, ब्राम्हण सबसे ऊँचे सोपान पर हैं। जन्म मनुष्य की जाति का निश्चय करता है जिसका वह आजीवन सदस्य रहता है, बशर्ते कि वह उसके प्रतिष्ठित नियमों को तोड़ने के कारण जाति च्युत न किया गया हो। अन्यथा एक जाति से दूसरी जाति में परिवर्तन सम्भव नहीं है। यह पूरी व्यवस्था ब्राम्हण के सम्मान के चारों ओर घूमती है।

दत्त का यह वर्णन सामान्य तौर पर सटीक और समूचे भारत पर लागू है। इसमें यदि किसी विशेषक की आवश्यकता है तो वह जाति परिवर्तन के बारे में है, क्योंकि उड़ीसा के चासा करन बन सकते हैं, इनके अलावा भारत की सीमाओं पर ऐसे भी स्थान हैं, जहाँ किसी ऊंची जाति के पिता की किसी नीची जाति की स्त्री से उत्पन्न संतति कुछ पीढ़ियों के बाद उस ऊंची जाति की सदस्य मान ली जाती है (रौज) जैसा कि मनु ने व्यवस्था दी है, यद्यपि मनु की यह व्यवस्था सैकड़ों वर्षों से अमान्य चली आ रही है। ऐसी रियायतें भी हैं जहाँ राजा किसी को जाति दे सकता या उसकी जाति छीन सकता है। मणिपुर की लोई को वहाँ के महाराजा की आज्ञा से मणिपुरी क्षत्रिय का दर्जा मिल सकता है और उसे यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार भी मिल सकता है। सेनार्ट के विवरण के अनुसार "हमें एक ऐसे समूह की कल्पना करनी होगी जो संयुक्त, बंद और कम से कम सिद्धान्त रूप में आनुवांशिक है, इसका एक संघटन जैसा भी है जो पारम्परिक और स्वतंत्र है, और संघटन का एक चौधरी होता है और एक पंचायत आवश्यकता पड़ने पर इस पूरे समूह की बैठक होती है यह बैठक अक्सर किसी तीज त्यौहार के अवसर पर होती है, इस समूह का कोई एक आम पेशा होता है इनके रीत रिवाज, कम से कम विवाह, खान- पान, छुआछूत के बारे में एक होते हैं और अन्तिम बात यह

है कि यह ऐसा समूह होता है जो अपना अधिकार, जो कि घटता जा रहा है - मनवा सकता है, बिरादरी अपने अधिकार का प्रयोग कर किसी सदस्य पर दंड कर सकती है या दूसरी तरह से दंड दे सकती है इसमें स्थाई तौर पर या कुछ समय के लिए किसी को बिरादरी से निकाला जा सकता है । इस निचोड़ को जैसा कि - हमें लगता है कि जाति कहते हैं"। सच बात यह है कि जाति यहाँ के अर्द्ध संगठित समाज में एक सामाजिक ईकाई है, जिसे भारत में पहचाना जा सकता है । इस इकाई का स्वरूप इतना भिन्न-भिन्न है कि इसकी कोई निश्चित परिभाषा देना कठिन है । यदि इसकी परिभाषा देना अनिवार्य हो तो इतना पर्याप्त होग । कि जाति व्यवस्था वह है जिसमें एक समाज अनेक आत्मपूर्ण और नितान्त अलग-अलग इकाईयों (जातियों) में विभक्त हैं जिनके बीच आपसी सम्बन्ध संस्कारों की दृष्टि से क्रमवद्ध सोपानों से निश्चित किया जाता है । किन्तु इस बात का दावा करना कठिन है कि जाति को इस प्रकार की अनेक इकाईयों में एक बताकर परिभाषित करना पूर्णतया संतोषजनक था।

जाति की परिभाषा करने के मार्ग में एक कठिनाई यह भी है कि इसमें एक तरह की तरलता है जिसका दर्शन प्रायः विघटनकारी प्रवृत्तियों में मिलता है किन्तु हाल में सामाजिक और राजनैतिक प्रभाव प्राप्त करने के लिए समान जातियों में मिलकर एक हो जाने की प्रवृत्ति दिखलाई पड़ती है । इस प्रकार **1941** में एक व्यापक आन्दोलन चला जिसके जरिये पशुपालकों की उनके जातियों जैसे अहीर, अहार, ग्वाला, गोल्ला, गोप, इडैयन आदि जातियों में एकता का भाव आया और इन सबने अपना एक सम्मलित नाम 'यादव' माना । किन्तु यह कहना कठिन है कि इस आन्दोलन से ये आपस में किस सीमा तक विवाह कर सकेंगी इसके विपरीत अनेक जातियों में बहुत प्राचीन काल से अनेक खण्ड ऐसे होते गये हैं । जो अपने में ही विवाह सम्बन्ध सीमित करते गये हैं । रिजले ने इस ओर ध्यान दिलाते हुए जाति व्यवस्था की गिरावट और भारतीय कला की जड़ता को इस विघटनकारी प्रवृत्ति का कारण माना है । उसका कथन है कि मध्य कालीन व्यापारिक श्रेणियों में विस्तार और विकास की क्षमता थी । उनमें कलात्मक प्रेरणा के प्रस्फुटन के लिए पूरी स्वतंत्रता थी । जबकि जाति नामक संघटन एक निम्न तरह का है । यह विखंडन में विकसित होता है और इसके विकास का प्रत्येक कदम इसके आगे बढ़ने की ओर उस कला को सुरक्षित रखने की शक्ति को घटाता है, जिसका एक व्यवसाय करते हैं । कर्कपैट्रिक ने भी जातियों के अनेक ऐसे समूहों में बटने की ओर ध्यान दिलाया है जो आपस में ही विवाह सम्बन्ध करती हैं । उसकी

मान्यता है कि दक्षिण-पूर्व पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश की अनेक जिप्सी जातियाँ मूल्यता एक ही परिवार की थीं और आपस में विवाह करती थी । व्यवसाय में परिवर्तन ने भी जातियों केअनेक उपजातियों को जन्म दिया इस प्रकार कसाईयों की एक जाति खटिक है इसकी कई उपजातियाँ हो गयी हैं जैसे बेकन वाला जो सूअर कसाई है, जो राजगर,जो राजमिस्त्री का काम करते हैं, सोमवट्ट जो रस्सी बटते हैं मेवाफरोश जो फल बेंचते हैं आदि आदि पूर्व काल में इस प्रकार के विघटन प्रायः आवादी के एक स्थान से दूसरे स्थान को चले जाने या किसी राजनैतिक या सामाजिक कारणों से होते थे किन्तु हाल में इस प्रवृत्ति का कारण यह रहा है कि नीची समझी जाने वाली जातियों में जो लोग खुशहाल हो जाते हैं वे अपनी पुस्तैनी पेशों वाले भाइयों से अलग हो जाने की कोशिश करते हैं और कोई नया नाम धारण कर और अपनी उत्पत्ति ऊंची जाति से जोड़कर अपना सामाजिक दर्जा ऊपर उठाने की कोशिश करते हैं ।

अक्सर ही वर्ण और जाति को एक मान लिया जाता है किन्तु इन दोनों में अन्तर है। ऐसा प्रतीत होता है कि मूलतः ऋग्वेद समाज चार वर्णों में विभाजित था अर्थात ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन द्विजवर्ण और चौथा सूद्र इनके अतिरिक्त अवर्ण थे । द्विजों का उपनयन होता है, उपनयन के साथ पुनर्जन्म माना जाता है और वे यज्ञोपवीत धारण करते हैं जबकि शूद्र को उपनयन का अधिकार नहीं । अधिक सम्भव यह है कि वैदिक काल में वर्ण की रेखा अलध्य न थी । अनुश्रुति है कि क्षत्रिय ब्राम्हण हो सकते थे और हुए भी । विश्वामित्र अपने तपवल के बल पर क्षत्रिय से ब्राम्हण नहीं हुए अपितु गोत्र-ऋषि भी बन गये । हरिवंश-पुराण के अनुसार नाभागरिष्ट के दो पुत्र वैश्य से ब्राम्हण बने । यहां तक कि शूद्रों ने भी ब्राम्हणत्व पाया क्योंकि राजपूताना के पोखर सेवक ब्राम्हणों का पूर्वज एक मेड़ था । इसे एक मुनि ने यजुर्वेद पढ़ाया था और बंगाल के व्यासोक्त ब्राम्हण शूद्रों की संतान माने जाते हैं जिसे ऋषि व्यास ने ब्राहम्ण बनाया था स्वयं व्यास भी बौद्ध ग्रन्थ बज्रशूचि के अनुसार धीवर-कन्या के पुत्र थे अब भी इस प्रकार की सीमायें अलध्य नहीं है क्योंकि कायस्थ बंगाल में ब्राम्हणों के ठीक नीचे स्थान माना जाता है, द्विजवर्ण में गिने जाते हैं और अपने को क्षत्रिय मानते हैं, यद्यपि सौ वर्ष पूर्व इन्हें शुद्ध शूद्र माना जाता था और इनकी गणना द्विजों में नहीं की जाती थी । सम्भवतः ये मूलतः एक व्यावसायिक जाति है और दिवरों के रूप में ये चारों वर्णों से भर्ती किये जाते थे ।

ऋग्वेदिक आक्रमण के समय में चार वर्ण समाज के चार वर्गों में विभाजन के प्रतिनिधि थे । ब्राम्हण जो पुरोहित का कार्य करते थे, क्षत्रिय या राजन जो शासक, अभिजात वर्ग और सैनिक थे वैश्य (विश) अन्य जनता यानि ग्रहस्त और शूद्र सेवक वर्ग जो इस देश के निवासियों के लिए गये थे । शूद्र का उल्लेख ऋग्वेद के प्राचीन मंत्रों में नहीं आया (विल्सन) ब्राम्हण मंत्रों का गान करते थे और पुरोहित थे । किन्तु इनके अपने कोई विशेषाधिकार न थे । इनका सबसे बड़ा सम्मान तब होता था जब ये किसी राजा के पुरोहित बन जायें । राजन्य राज और क्षत्र अर्थात अधिकार के अगार थे । ऐसा प्रतीत होता है सबसे ऊंचे धार्मिक अधिकार ऋषियों को प्राप्त थे जो मंत्रकार थे । ये ऋषि किसी भी वर्ण के हो सकते थे । कभी-कभी तो स्थानीय जनता में भी ऋषि पैदा होते थे। वैश्य और राजन्य दोनों को कई तरह के यज्ञ करने का अधिकार था जो ब्राम्हणों तक सीमित न था । ब्राम्हणों का वर्चस्व तो वेदांगों के निर्माण के साथ बाद में स्थापित हुआ । चारों वर्णों के साथ कुछ रंगों का सम्बन्ध बताया गया है जैसे ब्राम्हणों के साथ सफेद क्षत्रियों के साथ लाल, वैश्यों के साथ पीले और शूद्रों के साथ काले रंग का योग मिलता है । वर्ण का अर्थ ही रंग है । सम्भवतः वर्ण का सम्बंध नस्ल से रहा हो । प्राचीन परम्परा के अनुसार मिश्र के प्राचीन निवासी लाल रंग के थे, एशिया के निवासी पीले, उत्तरवाशी के सफेद और हब्शी काले थे । होकार्ट ने इस स्थापना पर गहरी आपत्ति की है । उसका मत है कि चारों वर्णों के साथ जो रंगों का सम्बंध जोड़ने की परम्परा है उसका सम्बंध कर्मकांड से है न कि नस्ल से । उत्तर दिशा का सम्बंध सफेद, पूर्व का लाल, दक्षिण का पीले और पश्चिम का काले रंगों से माना गया है । इसी प्रकार गांव में चारों वर्णों के लिए स्थान रखे जाते थे । अवर्ण गांव के बाहर भी रहता था।

वर्ण को जाति का स्वरूप ही नहीं मानते बल्कि कुछ सीमा तक जाति ही मानते हैं । कम से कम ब्राम्हण और क्षत्रिय तो आज प्रथम दृष्ट्या जातियों के नाम हैं । वैश्य शब्द का प्रयोग होने लगा है । सामान्यतः कोई न कोई विशेषण अवश्य जोड़ते हैं और कतिपय जातियों के साथ इसका प्रयोग होता है । वस्तुतः सच तो यह है कि अब वर्ण के लिए चारों शब्दों में कोई भी कतिपय जातियों के समुच्चय के अतिरिक्त अन्य किसी अर्थ में प्रयुक्त नहीं होता । सभी ब्राम्हण आपस में विवाह सम्बन्ध नहीं करते । ब्राम्हणों में अनेक जातियां हैं जो अपनी-अपनी जाति में विवाह करती हैं। राजपूत शब्द राजन्य या क्षत्रिय के बहुत पास है किन्तु ऐसी कई अनेक जातियां हैं जो अपना मूल क्षत्रिय बतलाती हैं । ये द्विज वर्णों के लिए विहित यज्ञोंपवीत धारण करते हैं । किन्तु आपस में

विवाह सम्बन्ध नही करते । उदारणार्थ, पंजाब, उत्तरप्रदेश, विहार के खत्री अपने को क्षत्रिय मानते हैं, किन्तु राजपूतों में इनके विवाह नहीं होते हैं । ये जातियाँ अपने ही भीतर विवाह सम्बंध करती हैं । ऐसी सम्भावना अधिक है कि वैदिक युग में वर्ण वर्ग का समानार्थी था न कि जाति का। उत्तर वैदिक काल के विद्वानों ने वर्ण के स्वरूप को जाति व्यवस्था के अर्थ में ग्रहण किया । जिससे वे परिचित थे । जो भी हो आज वर्ण जाति नहीं है । इसे हम जातियों का समूह मान सकते हैं । आज के सुधारकों में यह प्रवृत्ति मिलती है कि जाति-व्यवस्था में सम्मिलित तीन हजार या इससे अधिक जातियों के स्थान पर जो अपनी-अपनी जाति में ही विवाह सम्बन्ध करती हैं, चारों वर्णों का प्रयोग करें । यदि यह आन्दोलन सफल रहा तो हो सकता है कि वर्ग संघर्ष बढ़े। इन लोगों ने जाति की शक्ति और जाति व्यवस्था के महत्व उसकी उत्पत्ति और भारतीय समाज के एकीकरण में जो भूमिका अदा की है उसको घटा कर देखा है ।

जाति की भांति वर्ण भी कतिपय मात्रा में तरल है । प्रारम्भ में सम्भवतः ब्राम्हण कर्म और जन्म दोनों के आधार पर होते थे । ब्राम्हण - परम्परा के अनुसार परशुराम ने समूचे क्षत्रिय वर्ण का संहार कर दिया था । यदि ऐसी बात हुई थी तो उसके स्थान पर नये क्षत्रिय बने । जो भी हो क्षत्रियत्व का दावा बहुत से लोग जन्म से अधिक कर्म के आधार पर करते हैं । अनेक शूद्र जातियों ने यज्ञोपवीत धारण करना प्रारम्भ कर दिया है जो द्विजों का विशेषाधिकार रहा है । इसमें कुछ को तो कालान्तर में इसकी स्वीकृति मिल गई । संक्षेप में वर्ण भी जाति की भांति एक ऐसा शब्द है जिसकी परिभाषा करना कठिन है । किसी क्षेत्र में कुछ लोग एक वर्ण में गिने जाते हैं तो दूसरे क्षेत्रों में उनकी गणना किसी दूसरे वर्ण में होती है । वर्ण जाति से विस्तृत पर उससे भी अधिक अस्पष्ट शब्द है । जाति की भांति वर्ण भी सामाजिक इकाई के रूप में परिवर्तनशील है ।

मूल्यः-

मानव के जीवन में मूल्यों का एक महत्वपूर्ण स्थान है । ये वे प्रतिमान या प्रत्यय, इच्छाऐं या उद्देश्य हैं जो सामाजिक रूप से स्वीकृत या अस्वीकृत होती हैं जिनके द्वारा वस्तुओं का निर्माण या उसकी स्वीकृत व अस्वीकृत होती है । इनकी उत्पत्ति समूह से होती है तथा प्रत्येक मूल्य के माध्यम से समाज की रूचियों की अभिव्यक्ति होती है । दुर्खीम ने अपनी पुस्तक 'समाजशास्त्र एवं दर्शन शास्त्र' के अन्तर्गत मूल्य निर्धारण तथा सत्यता निर्धारण के बारे में लिखा है कि केवल

नैतिक मूल्य ही नही बल्कि समूह द्वारा प्रदान किये गये प्रतिमानों, आदर्शों या वस्तुओं के प्राप्त प्राथमिकता ही सामाजिक मूल्य का रूप ले लेते हैं। कुछ व्यक्तिगत मूल्य भी होते हैं जिनका जन्म व विकाश अनुभव के विकास के साथ ही साथ होता है, क्योंकि अनुभव के ही आधार पर व्यक्तिकुछ सामान्य सिद्धान्तों का निर्माण करता है जो धीरे-धीरे जीवन-दर्शन का रूप ले लेते हैं तथा इन्हें ही मूल्यों की संज्ञा दी जाती है। सामाजिक मूल्य समाज के माध्यम से स्थापित प्राथमिकताओं के संस्तरण **(Hierarchy of preferences)** की अभिव्यक्ति है जिसमें व्यक्तिगत पसन्द या नापसन्द का कोई योगदान नहीं है।

जी० ई० मूर तथा चार्ल्स मोरिस ने बताया कि मूल्य जैसे प्रत्यय को परिभाषित करना एक कठिन कार्य है। मूल्यों की दार्शनिक परिभाषायें इस तथ्य पर जोर देती हैं कि मूल्य में सभी सुखदाई भावनाओं एवं सिद्धान्तों का समावेश होता है। अन्य शब्दों में, किसी भी समय जिसके द्वारा हमें आनन्द प्राप्त होता है हम उसे वास्तव में पसन्द करते हैं, उसकी इच्छा करते हैं या उसे स्वीकार करते हैं उसे मूल्य कहते हैं। यह वह वास्तव में अनुभव है जिसे किसी इच्छित वस्तु या क्रिया को करने से प्राप्त किया जा सकता है। यह आनन्द,हर्ष,सन्तोष का अनुभव है तथा यह प्रत्यक्षतया तर्क के नियन्त्रण में नही रहते (ब्राइट मैन)।

वी० एस० सन्याल ने दार्शनिक परिभाषाओं का अध्ययन कर स्पष्ट किया कि "मूल्य आंशिक रूप से भाव हैं जो आंशिक रूप से तर्क से सम्बंधित होते हैं, जो स्थिर प्रकृति के होते हैं।" मूल्यों के मनोवैज्ञानिक स्वरूप की व्याख्या करते हुए मर्फी, मर्फी एवं न्यूकोम्ब का मत है कि " मूल्य सामान्य रूप से किसी उद्देश्य की प्राप्ति का विन्यास है।" आलपोर्ट के मतानुसार" मूल्य वह क्रिया है जो किसी उद्दीपक से उद्दीप्त होती है " एवरैट के दृष्टिकोण में, "मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होती है।" कलूकहोन के शब्दों में " मूल्य इच्छाओं के वे प्रत्यय हैं जो चयनात्मक व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। ये एक विशेष प्रकार की अभिवृत्तियां भी होती हैं जो प्रतिमानों के रूप में कार्य करती हैं तथा जिसके द्वारा निर्णयों का मूल्यांकन होता है।"

ननली के विचार में, "मूल्य जीवन लक्ष्यों तथा जीवन के तरीकों के प्रति प्राथमिकता से सम्बन्धित होते हैं।" इस प्रकार सामान्य रूप से मूल्य व्यक्ति की भावनाओं, विन्यासों, क्रियाओं या अभिवृत्ति की उत्पत्ति है।

मूल्य के प्रकार :-

आलपोर्ट, वर्नन, लिण्डजे का मूल्य अध्ययन मूल रूप से स्प्रेंगर **(1928)** के वर्गीकरण पर आधारित है । स्प्रेंगर का विश्वास था कि व्यक्ति के मूल्यों से उसका व्यक्तित्व जाना जा सकता है । इसलिए उसने अपनी पुस्तक **' Types of men'** में ६प्रकार के व्यक्तियों का उल्लेख किया है। इसी वर्गीकरण को मानते हुए आलपोर्ट, वर्नन एवं लिण्डजे ने अपने मूल्य अध्ययन में **6** निम्नलिखित प्रकार के मूल्यों को सम्मलित किया -

1- सैद्धान्तिक मूल्य :-

जिस व्यक्ति में सैद्धान्तिक प्रमुख होते हैं उसकी सत्य की खोज में प्रमुख रूचि होती है । इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह विशेषतः एक संज्ञानात्मक अभिवृत्ति अपनाता है, वह समताओं व विषमताओं का अध्ययन करता है । किसी वस्तु के सौन्दर्य या उपयोगिता के सम्बंध में निर्धारण करते समय उसको विस्तार से जानने का प्रयास है । उसकी रूचियां अनुभवपरक, आलोचनात्मक व तार्किक होती हैं। वह आवश्यक रूप से बुद्धिजीवी होता है। ऐसे व्यक्ति अक्सर वैज्ञानिक या दार्शनिक होते हैं । उनके जीवन का प्रमुख उद्देश्य अपने ज्ञान को क्रमबद्ध व व्यवस्थित करना होता ह

2- आर्थिक मूल्य :-

आर्थिक मूल्य की प्रमुखता वाला व्यक्ति इस बात में रूचि रखता है कि क्या लाभप्रद है । वह व्यवसाय में रूचि रखता है। वस्तुओं के उत्पादन,क्रय,विक्रय,संग्रहित पूँजी में बृद्धि आदि पर उसका अधिक ध्यान रहता है। वह पूर्णता व्यावहारिक होता है। वह शिक्षा को भी पूर्णतः व्यावहारिक बनाना चाहता है तथा सैद्धान्तिक ज्ञान को व्यर्थ की चीज समझता है । वह सम्पत्ति के क्षेत्र में दूसरों से आगे बढ़ना चाहता है । यधपि वह पूजा-पाठ या ईश्वर में विश्वास रख सकता है पर वह इसलिए, क्योकि वह ईश्वर को अपनी धन सम्पदा में बृद्धि करने वाला समझता है ।

3-सौन्दर्यात्मक मूल्य :-

जिस व्यक्ति में सौन्दर्यात्मक मूल्य प्रमुख होता है, वह आकार तथा अनुरूपता को महत्व देता है। वह प्रत्येक चीज का मूल्यांकन उसकी सुन्दरता समरूपता तथा उपयुक्तता के आधार पर करता है । यह आवश्यक नहीं कि ऐसा व्यक्ति सृजनात्मक कलाकार ही हो वरन् कलाकार न होने पर भी

उसकी कलात्मक चीजों में प्रमुख रूचि पाई जा सकती है । ऐसा व्यक्ति सत्य को सौन्दर्य का समकक्ष का मानता है अथवा मैकेन की भांति विचार रखता है कि "किसी चीज को सुन्दर बनाना उसकी सत्यता स्थापित करने से करोड़ गुना अधिक महत्वपूर्ण है ।"

4- सामाजिक मूल्य :-

सामाजिक मूल्य की प्रमुखता वाले व्यक्ति में दूसरों के प्रति प्रेम पाया जाता है । वह दयालु, सहानुभूति पूर्ण तथा निःस्वार्थी होता है । वह प्रेम को ही शक्ति का एक मात्र उपयुक्त रूप मानता है । उसकी सामाजिक रूचियां निःस्वार्थ होती हैं तथा प्रायः धार्मिक अभिवृत्ति से सम्बन्धित होती है ।

5- राजनैतिक मूल्य :-

जिस व्यक्ति में राजनैतिक मूल्य प्रमुख होता है उसकी शक्ति में रूचि होती है । उसकी क्रियायें केवल राजनीति के क्षेत्र से ही सम्बन्धित नहीं होती वरन् वह जिस भी व्यवसाय में होता है, अपने को शक्ति सम्पन्न महसूस करता है । नेताओं में प्रायः यह मूल्य अधिक पाया जाता है ।

6- धार्मिक मूल्य :-

धार्मिक मूल्य की प्रमुखता वाला व्यक्ति एकता को सर्वोपरि स्थान देता है । वह रहस्य वादी होता है वह संसारिक चीजों को समग्र रूप में समझने की कोशिश करता है । स्प्रेंगर के अनुसार, "धार्मिक व्यक्ति वह है जिसकी मानसिक संरचना उच्चतम एवं पूर्णतः सन्तोषजनक मूल्य अनुभवों की उत्पत्ति की ओर स्थाई रूप से निर्देशित होती है ।"

क्लीयरेन्स एम० ने मूल्य को चार भागों में वर्गीकृत किया है -

(1) **आंगिक मूल्य-** जैसे आग, पानी,वजन आदि ।

(2) **विशिष्ट मूल्य** - जैसे व्यक्तिगत विशेषतायें, अभिवृत्तियां विचार आदि ।

(3) **सामाजिक मूल्य** - इन मूल्यों का सम्बन्ध विभिन्न सामाजिक जीवन के पक्षों से होता है।

(4) **सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य** - सत्य, सुन्दरता या सौन्दर्य, उपयोगिता आदि ।

सुपर (1962) ने 15 मूल्यों का उल्लेख अपनी सूची में किया है -

आन्तरिक मूल्य (Intrinsic values) :-

1-परहितवाद

2-रचना-शक्ति

3-स्वतन्त्रता

4-बौद्धिक उदीप्तीकरण

5-सौन्दर्यपरक

6-निष्पत्ति

7-व्यवस्थापन

बाह्य मूल्य-पुरस्कार :-

8-जीवन राह

9-सुरक्षा

10- प्रतिष्ठा

11-आर्थिक प्राप्ति

बाह्य मूल्य :-

12-वातावरण

13- सहयोगी

14-पर्यवेक्षकीय सम्बन्ध

15-विविधता

मूल्य-मापन :-

मूल्य-अध्ययन की सर्व प्रथम रचना1931में आलपोर्ट वर्नन ने की थी तथा 1951में लिण्डजे के सहयोग से उन्होने इसे संशोधित किया । आलपोर्ट वर्नन तथा लिण्डजे का मूल्य अध्ययन मूल रूप से स्प्रेंगर के वर्गीकरण पर आधारित है । स्प्रेंगर का विश्वास था कि व्यक्ति के मूल्यों से उसका व्यक्तित्व जाना जा सकता है । इसीलिए उन्होंने अपनी पुस्तक **Types of men** में 6प्रकार के मूल्यों को सम्मलित किया ।

भारत में सर्वप्रथम कार्तिक राय चौधरी ने 1958में आलपोर्ट वर्नन लिण्डजे के मूल्य अध्ययन का भारतीय स्थितियों में अनुकूलन किया । इसी परीक्षण पर आधारित हिन्दी भाषा में मूल्य परीक्षण की रचना एवं मानकीकरण का कार्य मुरादाबाद के आर० के० ओझा ने किया । अंग्रेजी भाषा में एक भारतीय अनुकूलन केरल के वी०जी० मैथ्यु ने किया । आर० पी० भटनागर तथा आर० के० टण्डन, एस० पी० कुलश्रेष्ट ने भी इसका हिन्दी में अनुकूलन किया ।

बंगलौर के ए० हफीज तथा शकीला वेगम (1963)ने वयस्क पुरूषों के व्यावसायिक चयन के लिए व्यक्तिगत तथा सामाजिक मूल्यों के एक प्रक्षेपण परीक्षण की रचना की । उदय पारीख तथा एस० एन० चट्टोपाध्याय (1965)ने चार बिन्दु मापनी पर आधारित एक 'फारमर्स वैल्यु ओरिएन्टेशन स्केल की रचना की । सत्यपाल रूहेला (1969)ने कालेज छात्रों तथा अन्य शिक्षित व्यक्तियों के लिए एक ट्रेडिशनल इंडियन वैल्यु चैक लिस्ट की रचना की । अनवर अंसारी (1971)ने कॉलेज छात्रों के लिए एक वैल्यू ओरियेन्टेशन स्केल का निर्माण किया । एस० पी० कुलश्रेष्ठ (1971)ने भारतीय संस्कृति, स्थितियों तथा जनतन्त्रतात्मक स्वरूप के अनुसार एक जनतंत्रात्मक मूल्य मापनी' की रचना की। जी०पी० शैरी तथा आर०पी० वर्मा (1972)ने व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली की रचना की । मेडिकल डाक्टरों के लिए एक फिजिशियन वर्क वैल्यू क्येशचनायर की रचना राव तथा पारीख (1973)ने की । के० जी० अग्रवाल (1978)ने विस्तृत मूल्य मापनी की रचना की ।

मूल्य का स्थायित्व :-

टौड (1941)ने पाया कि हाईस्कूल तथा कॉलेज के वर्षों में बीच विद्यार्थियों के धार्मिक तथा वैज्ञानिक मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । जेकब (1957)ने नवागत तता उच्च कला के बीच वैज्ञानिक तथा धार्मिक मूल्य में थोड़ा परिवर्तन पाया । कैली ने कॉलिज विद्यार्थियों के धार्मिक तथा वैज्ञानिक मूल्य में प्राप्त अंकों का सहसम्बन्ध २० वर्ष बाद प्राप्त अंकों से देखा तथा उनमें सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः .60तथा .50पाया ।

मूल्य से सम्बन्धित कारक :-

परिवार का प्रभाव :- बच्चे माता-पिता से ही मूल्यों का अर्जन करते हैं । माता-पिता जितना ही बच्चे का ध्यान रखने वाले हैं, उतना ही यह सम्भावना रहती है कि बच्चा उनके मूल्यों को सीखेगा। साथ ही माता-पिता में से जिससे बच्चा अधिक निकट होगा तथा जिससे वह तादात्मय करेगा , उसके मूल्यों को ग्रहण करने की सम्भावना अधिक होगी । फिशर (1948)ने माता-पिता तथा बच्चों के मूल्यों में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया तथा निम्नलिखित परिणाम प्राप्त किये।

	माता		पिता		मध्यांक
मूल्य का स्वरूप	पुत्री	पुत्र	पुत्री	पुत्र	
धार्मिक	.49	.40	.60	.45	.47
आर्थिक	.32	.27	.31	.27	.29
सैद्धान्तिक	.30	.15	.26	.18	.24
सौन्दर्यात्मक	.38	.16	.13	.26	.21
मध्यांक	.35	.22	.29	.27	

उक्त परिणामों से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं ।

(1) माता-पिता तथा बच्चों के धार्मिक मूल्य में समानता अन्य मूल्यों की तुलना में अधिक है ।

(2) माता तथा पुत्री के मूल्यों में समानता सबसे अधिक है, उससे कम पिता तथा पुत्री के मूल्यों में, तत्पश्चात पिता तथा पुत्र के मूल्य में तथा सबसे कम सहसम्बन्ध माता तथा पुत्र के मूल्य में हैं ।

धर्म :-

राडके ने पाया कि बच्चे जिस धर्म को मानते हैं, उनमें उसी धर्म के बच्चों के प्रति वरीयता पाई जाती है।

व्यवसाय :-

व्यक्तियों के व्यवसाय तथा उनके मूल्यों में भी कुछ सम्बन्ध पाया जाता है । बैटी मावारडी ने विभिन्न व्यावसायिक समूहों के मूल्यों का अध्ययन किया तथा पाया कि व्यापारिक लोगों में आर्थिक मूल्य प्रमुख था तथा सैद्धान्तिक मूल्य निम्न । मेडिकल क्षेत्र के लोगों में सैद्धान्तिक मूल्य प्रमुख था तथा आर्थिक मूल्य व राजनीतिक मूल्य निम्न था । साहित्यक कार्य करने वालों में सैद्धान्तिक व सौन्दर्यात्मक मूल्य प्रमुख तथा आर्थिक मूल्य निम्न था । कलाकारों में सौन्दर्यात्मक मूल्य उच्च तथा सामाजिक मूल्य निम्न पाया गया । वैज्ञानिक लोगों में सैद्धान्तिक मूल्य उच्च व सामाजिक मूल्य निम्न पाया गया । धार्मिक कार्यकर्ताओं में धार्मिक मूल्य प्रमुख तथा राजनैतिक मूल्य निम्न था । इसी प्रकार सामाजिक कार्यकर्ताओं में सामाजिक मूल्य उच्च पाया गया ।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति :-

व्यक्ति के जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होनी आवश्यक होती है । जब तक इन आधारभूत आर्थिक सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति सरल व सुन्दर ढंग से होती रहती है । तब तक बच्चे में असुरक्षा की भावना पनप नहीं पाती । उस अवस्था में व्यक्ति के व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास सम्भव होता है । इसके विपरीत जब व्यक्ति मौलिक सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताओं तक को पूरा नही कर पाता, तब उसमें मानसिक तनाव, चिन्तायें तथा असुरक्षा की भावनायें घर कर जाती हैं । इसीलिए जिन बच्चों का जन्म गरीब परिवारों में होता है, उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो पाता है । यदि इस तरह के बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं, और न ही खाली समय बिताने के लिए

मनोरंजन के स्वस्थ साधन जुटा पाते हैं, उनके लिए रास्ते पर खेलना या आवारागर्दी करना और बुरी संगत में फँसकर बुरी आदतों व आचरणों को विकसित करना स्वभाविक हो जाता है। श्री बर्ट के अध्ययन से पता चलता है कि आधे से अधिक बाल-अपराधी निर्धन परिवारों के सदस्य होते हैं। इसी प्रकार निर्धनता के कारण जब माँ को प्रतिदिन घर से बाहर रहना पड़ता है, तो परिवार का संगठन बिगड़ जाता है और बच्चे बरबाद हो जाते है। निर्धनता के कारण जब छोटे बच्चों को भी नौकरी करना, विशेषकर सड़कों पर वस्तुयें बेचने का काम करना पड़ता है तो उनके नैतिक-शारीरिक स्वास्थ्य का पतन हो जाता है।

इसके विपरीत जिन बालकों का पालन-पोषण समृद्ध परिवारों में होता है, उनमें आशावादिता रहती है, सुरक्षा की भावना को देखने को मिलती है तथा नये कार्यों को करने के उत्साह की प्रचुरता होती है। वे हीनता की भावना के शिकार नही होते और गरीब बच्चों की तरह आत्मग्लानि, संकोच और बेचैनी का अनुभव नही करते।

परन्तु इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष न निकालना चाहिए कि व्यक्तित्व के विकास के लिए गरीबी अभिशाप है और अमीरी वरदान। वास्तव में आर्थिक परिस्थितिओं का सम्भावित प्रभाव व्यक्तित्व की अपनी योग्यता व आन्तिरिक गुणों तथा सामाजिक प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करता है। अगर माता-पिता धीरज से काम लेकर समय पूर्वक अपनी प्रतिकूल आर्थिक स्थितियों का सामना करते और वर्तमान अवस्थाओं से सन्तुष्ट रहते हैं, तो गरीबी का कोई प्रभाव बुरे रूप में बच्चे के व्यक्तित्व के विकास पर नही पड़ता है। अब्राहम लिंकन, लेनिन, लालबहादुर शास्त्री, प्रेम चन्द्र आदि की जीवनी इस बात का प्रमाण है कि व्यक्तित्व के पूर्णतम विकास में गरीबी किसी तरह का कोई रोड़ा नही बनी। आर्थिक कठिनाई के कारण व्यक्ति में संघर्ष करने की परिस्थितियों से जूझने की, कठिनाईयों पर विजय पाने की तथा स्वावलम्बी बनने की भावना बन जाती है और इन सभी गुणों से व्यक्तित्व का और अधिक विकास होता है। जबकि दूसरी ओर समृद्ध परिवारों के बच्चे आलसी, विलासी, फिजूलखर्च, दुर्व्यसरी और चरित्रभृष्ट भी हो सकते हैं। यदि बच्चों में योग्यता व आन्तरिक गुण हैं तो वही पैसा उन्हें उन्नति के किसी भी स्तर पर पहुँचा सकता है और उनके व्यक्तित्व को आदर्श बनाने में सहायक हो सकता है।

यदि सामान्य रूप से देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को लिया जाय तो भी हम यह कह सकते हैं कि व्यक्तित्व पर आर्थिक परिस्थितियों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है । उदाहरणार्थ यदि देश में पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था है तो समाज में निजी सम्पत्ति, प्रतिस्पर्धा, बड़े पैमाने में उत्पादन, श्रमिकों का शोषण आदि विशेषतायें देखने को मिलेंगी । निजी सम्पत्ति के महत्व पर बल देने से व्यक्तिवाद का विकास होता है । इसके कारण व्यक्ति अपने सुख व समृद्धि को अधिक प्रधानता देने की प्रवृत्ति को विकसित करता है । इसी प्रकार संचय की प्रवृत्ति भी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में पनपती है, क्योंकि पूँजी के संचय के आधार पर ही व्यक्ति की सामाजिक स्थिति निर्धारित होती है। पूँजीवाद में प्रतिस्पर्धा के तत्व का विस्तार व्यक्ति के जीवन के हर पक्ष में हो जाता है, अर्थात प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक अंग बन जाती है । बड़े पैमाने पर किया जाने वाला उत्पादन व्यक्ति को अधिक कठोर परिश्रम करने के योग्य बनाता है और नई आदतों का निर्माण करता है। मशीन पर काम करते -करते स्वयं मनुष्य भी मशीन बन जाता है । इसी प्रकार वर्ग तथा वर्ग-संघर्ष, राष्ट्रीय धन के असमान वितरण, श्रमिकों के शोषण, बेकारी, गन्दी बस्तियों के विकास और औधोगिक झगड़ो जैसे पूँजीवाद के कुछ सामाजिक परिणामों का भी व्यक्तिकेव्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है । इसी प्रकार गन्दी वस्तियों में रहने से व्यक्तियों की अभिवृत्तियों विचार व मूल्य भी गन्दे हो जाते है और उनके व्यक्तित्व का स्वस्थ विकास रूक जाता है । इतना ही नही पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में जो बेकारों की संख्या बढ़ती है, उसका भी प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ता है । बेरोजगारी अनेक मानसिक रोगों को जन्म देती है । व्यक्ति रोटी कपड़े के लिए सदैव चिन्तित रहता है और चिन्ता रूपी नागिन उसके जीवन में निरन्तर विष घोलती रहती है और उसके व्यक्तित्व को नष्ट कर देती है। बेकारी की अवस्था व्यक्ति के नैतिक स्तर को भी प्रभावित करती है। वह अपने तथा अपने आश्रितों के भरण-पोषण के लिए चोरी, डकैती, जालसाजी, वेश्यावृत्ति, भिक्षावृत्ति आदि अपना लेता है या हर तरफ से निराशा और असफल होने पर शराब पीकर अपनी समस्त निराशाओं व असफलताओं को भूलने की कोशिश करता है ।

वास्तविकता यह है कि मौलिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन हो जाने से उसका प्रभाव सामाजिक जीवन व संस्थाओं पर भी पड़ता है । फलस्वरूप व्यक्तित्व- संरचना में भी परिवर्तन या परिवर्द्धन हो जाता है । उदाहरणार्थ पहले भारत वर्ष कृषि-अर्थव्यवस्था के स्तर पर था । उस समय जाति-प्रथा संयुक्त परिवार,पंचायत, धर्म, प्रथा, परम्परा,ग्रामीण समुदाय आदि सामाजिक

जीवन का आधार था इन आधारो का प्रभाव व्यक्तित्व पर पड़ना स्वभाविक ही था । जाति-प्रथा विभिन्न जातियों - विशेषकर अस्पृश्य जातियों के प्रति विशेष अभिवृत्ति को जन्म देती है । संयुक्त परिवार बच्चे में सहयोग, त्याग, सहनशीलता, उदारता, सेवा, प्रेम, सद्भाव, आज्ञाकारिता आदि गुणों को विकसित करता है और धर्म, प्रथा, परम्परा व्यक्ति में रूढ़िवादिता, आदर्शवादिता भाग्यवादिता का भाव भरती है । अतः स्पष्ट है कि कृषि-स्तर पर भारत में जिस व्यक्तित्व का विकास होता था, उसका प्रतिमान या प्रारूप एक विशिष्ट प्रकार का ही होता था । उसके बाद भारत ने प्रौधौगिक स्तर पर कदम रक्खा, कृषि अर्थव्यवस्था बदल गई और उसके स्थान पर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का विकास हो गया । इस क्रम में औधीगीकरण तथा नगरीकरण तेजी से होता गया, जिसके फलस्वरूप जाति-प्रथा का प्रभाव घटा, संयुक्त परिवार में विघटन होने लगा, पंचायत का बोलबाला न रहा तथा धर्म प्रथा व परम्परा का शासन जाता रहा । इन सब बातों का प्रभाव व्यक्तित्व की प्रकृति पर पड़ना स्वभाविक था ।व्यक्तित्व के जो विभिन्न सामान्य लक्षण कृषि-स्तर पर देखने को मिलते थे वे अब परिवर्तित रूप में सामने आये । सहयोग के स्थान पर प्रतिस्पर्धा, दान के स्थान पर संचय, सेवा के स्थान पर स्वार्थ, उदारता के स्थान पर चतुरता, त्याग के स्थान पर भोग, भाग्यवादिता के स्थान पर विज्ञानवादिता और आदर्शवादिता के स्थान पर व्यक्तिवादिता के लक्षण आधारभूत व्यक्तित्व-संरचना के उल्लेखनीय अंग बन गये । अतः हम श्री किम्बूल यंग के इस कथन से सहमत हैं कि "समाज की मौलिक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन और उसी के साथ होने वाले सामाजिक संगठन में रूपान्तरण से आधारभूत व्यक्तित्व संरचना में भी परिवर्तन आ सकता है"।

सामाजिक -आर्थिक स्तर मापन :-

सामाजिक-आर्थिक स्तर का मापन अत्यन्त आवशयक है, क्योंकि इसे नियन्त्रित किया जा सकता है ताकि इसका प्रभाव अनुसंधान के परिणामों पर न डाल सकें । भारत में सामाजिक आर्थिक स्तर के मापन के लिए अनेक मापनियां उपलब्ध हैं । इनमें से कुछ मापनियां तो केवल शहरी जनसंख्या के लिए उपयुक्त हैं जैसे राहुदकर, कुप्पूस्वामी, जलोटा, श्रीवास्तव, कुलश्रेष्ठ आदि। जबकि कुछ मापनियाँ केवल ग्रामीण लोगों के लिए ही हैं जैसे पारीख एवं त्रिवेदी कुलश्रेष्ठ आदि। कुछ प्रमुख मापनियाँ इस प्रकार है :—

(1) **कुप्पूस्वामी** - सामाजिक - आर्थिक स्तर परिसूची किसी व्यक्ति के सामाजिक व आर्थिक स्तर का कम समय में सरलता से मापन करने के उद्देश्य से बंगलौर के० बी० कुप्पूस्वामी ने (1962)में इस परिसूची का निर्माण किया था । यह परिसूची विशेष रूप से शहरी लोगों के सामाजिक व आर्थिक स्तर का मापन करने के उद्देश्य से निर्मित की गयी है । इसके दो प्रारूप उपलब्ध हैं । प्रारूप Aशहरी वयस्कों के लिए व प्रारूप B शहरी अध्ययनरत छात्रों के लिए है । प्रत्येक प्रारूप सामाजिक व आर्थिक स्तर के तीन आयामों -शिक्षा, व्यवसाय व आय का मापन करता है। परिसूची के इन प्रत्येक आयामों में सात-सात पद अथवा कथन है । इन कथनों को उच्चतम से निम्नतम के क्रम में व्यवस्थित करके इनको क्रमशः7से 1तक अंक प्रदान किये जाते हैं । इस प्रकार परिसूची पर किसी व्यक्ति का अधिकतम प्राप्तांक 21व न्यूनतम प्राप्तांक 3हो सकता है। यह एक स्व प्रशासित प्रकार की अनुसूची है जिसके प्रशासन में बहुत कम समय होता है । इसकी विश्वसनीयता व वैधता बाह्य कसौटी के आधार पर निश्चित की गयी है ।

(2) **कुलश्रेष्ठ** - सामाजिक - आर्थिक स्तर परिसूची देहरादून के एस० पी० कुलश्रेष्ठ (1972) ने शहरी एवं ग्रामीण व्यक्तियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का विस्तृत मापन करने के उद्देश्य से दो प्रारूपों सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची (शहरी) फार्म aव सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची (ग्रामीण) फार्म b का मानकीकरण व प्रकाशन किया । इन दोनों प्रारूपों में 20-20पद हैं जो कि व्यक्ति के शहरी /ग्रामीण परिस्थतियों में सामाजिक-आर्थिक स्तर से सम्बन्धित हैं । दोनो ही प्रारूपों का प्रशासन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार से सम्भव है । फलांकन के लिए फलांकन कुंजियों का प्रयोग किया जाता है । प्रारूप 'ए' का मानकीकरण उत्तर प्रदेश के 1000शहरी छात्रों पर किया गया । इसकी पुनर्परीक्षण वैधता (10 दिन के समय अन्तराल से) .87प्राप्त हुई । इसकी विषय वस्तु वैधता व प्रत्यय वैधता समाजशास्त्रियों, मनोविज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों व शिक्षाशास्त्रियों की राय के आधार पर सन्तोषजनक पायी गयी । डा०कुप्पूस्वामी की सामाजिक - आर्थिक स्तर परिसूची तथा पान्डेय की सामाजिक-आर्थिक स्तर प्रश्नावली के साथ इसका सह सम्बन्ध गुणांक क्रमशः .57व .89प्राप्त हुआ ।

इस परिसूची के प्रारूप बी का माननीकरण भी उत्तर प्रदेश के 1000ग्रामीण व्यक्तियों पर किया गया है । इसकी पुनर्परीक्षण विधि से विश्वसनीयता .85प्राप्त की गयी । विषय-वस्तु वैधता सन्तोषजनक पायी गयी तथा पारीख एवं त्रिवेदी के सामाजिक आर्थिक स्तर के साथ इसका सह सम्बन्ध गुणांक .81प्राप्त किया गया। दोनों ही प्रारूपों के स्टेन मानक ज्ञात किये गये ।

(3)दीर्घकालीन वंचन मापनी :-

सन् 1977में गोरखपुर के गिरीश्वर मिश्र तथा एल० बी० त्रिपाठी ने दीर्घकालिक वंचन मापनी का प्रकाशन किया । इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों के व्यक्तिगत रूप से, सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में दीर्घवंचन से सम्बन्धित 97प्रश्न हैं जो 15पहलुओं घर की स्थिति, घर का पर्यावरण, आर्थिक सम्पूर्णता, भोजन, वस्त्र, शैक्षिक अनुभव, बाल्यवस्था अनुभव, पोषक अनुभव, माता-पिता की विशिष्टतायें, माता-पिता के साथ पारस्परिक सम्बन्ध, प्रेरणात्मक अनुभव, संवेगात्मक अनुभव, धार्मिक अनुभव, यात्रा व मनोरंजन, अतिरिक्त सांस्कृतिक अनुभव का मापन करते हैं । यह दीर्घवंचन मापनी का अनुभव दोनों शहरी या ग्रामीण 15से 25वर्ष की आयु वाले व्यक्तियों के लिए निर्मित की गयी हैं । इस पाँच बिन्दुओं वाली मापनी पर न्युनतम प्राप्तांक 96व अधिकतम प्राप्तांक 440 हो सकता है । न्यूनतम प्राप्तांक दीर्घवंचन की अधिकतम मात्रा को बताता है । इस मापनी की विश्वसनीयता पुनर्परीक्षण व अर्द्ध-विच्छेदन विधि से क्रमशः .74से .97,.77व .91पायी गयी । मापनी की विषय-वस्तु वैधता या प्रत्यय वैधता सन्तोषजनक पायी गयी । इसके पदों का कारक विश्लेषण भी किया गया । इस मापनी के शंताशीय मानक मैनुअल में दिये गये हैं ।

(4) श्रीवास्तव : सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी :-

दरभंगा के जी० पी० श्रीवास्तव ने कुप्पूस्वामी व अन्य की शहरी व्यक्तियों के लिए निर्मित सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची का आधुनिकीकरण करने के उद्देश्य से 1979में 8पदों वाली मापनी का प्रकाशन हिन्दी भाषा में किया । यह 8पद सामाजिक-आर्थिक स्तर का पांच क्षेत्रों में मापन करते हैं - शिक्षा, व्यवसाय, आय, सांस्कृतिक रहन-सहन (जिसमें पद संख्या

4,5व 6सम्मिलित हैं व प्रत्येक में क्रमशः 3,4व 5श्रेणियां हैं), सामाजिक कार्यकर्ताओं में भाग लेना ।

इस मापनी पर अधिकतम प्राप्तांक 44हो सकते हैं । इस मापनी का आन्तरिक स्थिरता गुणांक .56 से .94 के मध्य पाया गया तथा चार सप्ताह के अन्तर से परीक्षण पुर्नपरीक्षण विश्वसनीयता गुणांक .94ज्ञात किया गया । इस मापनी की वैधता भी उच्च कोटि की पाई गई । विषय वस्तु वैधता विशेषज्ञों द्वारा निर्धारित की गई व अध्यापकों की रेटिंग के साथ इसका सहसम्बन्ध गुणांक .82 पाया गया । प्रत्यय वैधता भी सन्तोषजनक पायी गयी । इस मापनी पर उपलब्ध प्राप्तांको के आधार पर पाँच श्रेणियाँ / उच्च वर्ग (प्राप्तांक34से अधिक), उच्च मध्य वर्ग (प्राप्तांक 25से 33तक), निम्न मध्य वर्ग (प्राप्तांक16से 24 तक),निम्न वर्ग (9से 15 तक), अति निम्न वर्ग (प्राप्तांक 6से कम) बनाई गई हैं । इस मापनी प्रशासन व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों प्रकार से किया जा सकता है । बाद में इस मापनी को अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया गया जिसका विश्वसनीयता गुणांक (चार सप्ताह के अन्तर से) .96पाया गया ।

(5) भारद्वाज, गुप्ता एवं चौहान :-

सामाजिक-आर्थिक स्तर परिमाप आगरा के आर० एल० भारद्वाज, क्षमा गुप्ता व एन० एस० चौहान (1980)ने सामाजिक -आर्थिक व सामाजिक - आर्थिक स्तर का पृथक - पृथकमापन करने के उद्देश्य से इस परिमाप का प्रकाशन किया । यह परिमाप स्तर के 9 प्रकारों -सामाजिक - स्तर (आरोपित),सामाजिक स्तर (उपलब्ध), सामाजिक स्तर (पूर्ण रूप से), आर्थिक स्तर (आरोपित), आर्थिक स्तर (उपलब्ध) आर्थिक स्तर (पूर्ण रूपेण) , सामाजिक आर्थिक स्तर (आरोपित) , सामाजिक आर्थिक स्तर (उपलब्ध) सामाजिक -आर्थिक स्तर (पूर्ण रूप से) का मापन करता है । इसके पद/प्रश्न सात श्रेणियों - सामाजिक परिप्रेक्ष्य , पारिवारिक परिप्रेक्ष्य , शिक्षा परिप्रेक्ष्य , व्यवसाय परिप्रेक्ष्य , सम्पत्ति परिप्रेक्ष्य , मासिक आय परिप्रेक्ष्य , जाति परिप्रेक्ष्य से सम्बन्धित हैं तथा इन क्षेत्रों सें सम्बन्धित प्रश्नों व उत्तर सम्भावनाओं की संख्या प्रथक – प्रथक है ।

यह परिमाप शिक्षित व्यक्तियों के लिए पर सामूहिक व अशिक्षित व्यक्तियों पर व्यक्तिगत रूप से प्रशाशित किया जा सकता है । इसकी पुनर्परीक्षण (21दिन के अन्तर से) विश्वसनीयता .67 से.92 के मध्य पाई गयी । विषय-वस्तु वैधता निर्धारण की गयी जो कि सन्तोषजनक पायी गयी । इसके प्रशासन में 10-15मिनट का समय लगता है तथा फलांकन कुँजी का प्रयोग किया जाता है । प्राप्तांको का विश्लेषण मैनुअल में दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार करके 9स्तर प्रकारों पर व्यक्ति की स्थिति का अध्ययन किया जा सकता है ।

आकांक्षा- स्तर :-

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आकांक्षा या महत्वकांक्षा होती है । इसका सम्बन्ध जीवन के कार्यों से होता है । आकांक्षा का स्तर प्रत्येक व्यक्ति में समान नहीं होता है तथा व्यक्ति इसके आधार पर अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है । यह व्यक्ति की उस सीमा की ओर इंगित करता है जिस सीमा तक व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य स्थापित करना चाहता है । आकांक्षा स्तर उच्च होने पर अनेक बार मनुष्य अधिक प्रेरित होकर कार्य करता है । सफलता को प्राप्त करने के उपरान्त आकांक्षा का स्तर भी ऊँचा होता है । परन्तु कभी-कभी इसी के कारण मनुष्य में आन्तरिक अर्न्तद्धन्द्व भी उत्पन्न हो जाता है । जैसे एक व्यक्ति का आकांक्षा - स्तर तो काफी उच्च है परन्तु योग्यता की कमी या अन्य कारणों से उस स्तर में पहुँचने में असमर्थ है तो उसमें इस असमर्थता की चिन्ता उत्पन्न हो जाती है , जो कभी-कभी मानसिक असुन्तलन का कारण बन जाती है । प्रायः यह देखा गया है कि आशावादी व्यक्तियों का सदैव आकांक्षा स्तर काफी ऊँचा होता है, जबकि निराशावादी का कम । इसी प्रकार इसकी सफलता व असफलता का भी इस पर प्रभाव पड़ता है । इसके माध्यम से प्रायः लक्ष्य निर्धारण का अध्ययन किया जाता है। इसे एक प्रकार का सामाजिक प्रेरक भी माना जाता है, क्योंकि इसके अन्तर्गत अहम् के प्रति लगाव व आत्मसम्मान की क्रियायें देखने को मिलती हैं । जिस संस्कृति में व्यक्ति का पालन पोषण होता है उसी के अनुरूप वह अपनी सफलताओं का निर्धारण करता है ।

आकांक्षा-स्तर का अर्थ :-

आकांक्षा -स्तर के प्रत्यय को सर्वप्रथम हॉपी (1930) एवं डेम्बो(1931) ने बताया।

फ्रेंक के अनुसार "किसी कार्य में अपने अतीत निष्पादन स्तर को जानते हुए, उस परिचित कार्य में भावी निष्पादन के जिस स्तर पर पहुँचने की व्यक्तिआशा रखता है, उसे ही आकांक्षा-स्तर कहते हैं।" **हरलॉक के शब्दों में,** "व्यक्ति का आकांक्षा-स्तर उसके द्वारा पहले प्राप्त किये गये लक्ष्य तथा आशा किये जाने वाले लक्ष्य के बीच भिन्नता है"

इसी प्रकार आकांक्षा-स्तर की सामान्य स्वीकृत संक्रियात्मक परिभाषा दी जा सकती है - "एक कार्य में निष्पादन का स्तर जानने के पश्चात जब कोई व्यक्ति अपने भावी प्रयास में निष्पादन के स्तर तक पहुँचने की प्रत्याशा करता है, तो उसे उसका आकांक्षा-स्तर कहते हैं"।

संक्षेप में व्यक्ति लक्ष्य की सफलता की मात्रा की अपेक्षा करता है तथा यही उसका आकांक्षा-स्तर होता है (स्टेगनर व कारवोस्की)

आकांक्षा तथा महत्वकांक्षा में अन्तर :-

हरलॉक के अनुसार "आकांक्षा का अर्थ अपने आप या अपनी वर्तमान स्थिति से अधिक ऊँचा उठाने की इच्छा अथवा प्रयास से हैं "जबकि दूसरी ओर महत्वकांक्षा का अर्थ किसी विशिष्ट लक्ष्य, पद या सम्मान, श्रेष्ठता या शक्ति को प्राप्त करने की उत्सुकता एवं प्रहल इच्छा से है । इस प्रकार आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा निहित रहती है, जबकि महत्वाकांक्षा में प्रेरणा ही लक्ष्य होता है

आकांक्षा तथा आकांक्षा स्तर में अन्तर :-

आकांक्षा द्वारा यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति क्या प्राप्त करना चाहता है अथवा उसका क्या लक्ष्य है, किन्तु व्यक्ति अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कितना सफल रहा यह आकांक्षा-स्तर से ही ज्ञात होता है। आकांक्षा-स्तर व्यक्ति द्वारा प्राप्त किये गये लक्ष्य तथा उसके भावी लक्ष्य निर्धारण में भिन्नता की ओर संकेत करता है । यह भिन्नता जितनी कम होगी, व्यक्ति का आकांक्षा-स्तर उतना ही वास्तविक होगा।

हॉपी ने अपने प्रयोगात्मक अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि लक्ष्य निर्धारित व्यवहार के अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इस पर वैयक्तिक भिन्नताओं का प्रभाव पड़ता है, क्योकि कुछ व्यक्तियों को आकांक्षा-स्तर सदैव उच्च होता है तो कुछ का निम्न । लेविन, डैम्बो,फेस्टिंगर व सियर्स ने

1944में एक प्रयोग किया । इसी प्रकार का प्रयोग सन्1948 में क्लुगमैन ने किया इन प्रयोग से निम्न उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त हुए

(1) अगर व्यक्तियों का आकांक्षा-स्तर वर्तमान स्तर से सदैव उच्च रहे तो वे व्यक्ति काल्पनिक होते हैं ।

(2) जिन व्यक्तियों की सफलता व लक्ष्य में अधिक अन्तर नहीं पाया जाता है वे यथार्थवादी होते हैं ।

(3) जो व्यक्ति सफलताओं व विफलताओं के आधार पर अपनी आकांक्षाओं में परिवर्तन नहीं करते वे जिद्दी प्रकृति के तथा परिणामों पर विचार न करने वाले व्यक्ति होते हैं ।

(4) जो व्यक्ति सफलताओं व विफलताओं के अनुसार अपने लक्ष्य को परिवर्तित कर लेते हैं वे समायोजित होते हैं या उनमें समायोजन की क्षमता होती है ।

आकांक्षाओं को प्रभावित करने वाले कारक : -

(अ) बुद्धि - उत्कृष्ट बुद्धि के व्यक्तियों में अधिक वास्तविक आकांक्षायें पायी जाती हैं । वे अपनी कमियों को पहचानते हैं तथा लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं के सम्बन्ध में जागरूक होते हैं । जबकि औसत से कम बुद्धि वाले अपनी योग्ताओं का अतिमूल्यांकन करते हैं, अतः वे अपनी आकांक्षाओं के अवास्तविक स्वरूप को नहीं पहचान पाते । उत्कृष्ट बुद्धि के किशोर ऐसे व्यावसायिक लक्ष्य स्थापित करते हैं जो उनकी रूचियों, योग्यताओं एवं प्रशिक्षण के अवसरों से सम्बन्धित होते है ।

(ब) यौन- लड़के तथा पुरूषों में स्कूल कार्य, खेल, व्यावसायिक उन्नतिं आदि के सम्बन्ध में उपलब्धि की अधिक आवश्यकता पायी जाती है, अतः वे इन क्षेत्रों में अपनी क्षमता से अधिक की आकांक्षा रखते हैं । लड़कियों एवं महिलाओं की प्रायः सामाजिक जीवन एवं विवाह आदि के सम्बन्ध में अधिक वास्तविक आकांक्षायें पायी जाती हैं ।

(स) रूचि - व्यक्ति की रूचि उसके कार्यों को प्रभावित करती है । अतः व्यक्ति की रूचियाँ उसके तात्कालिक एवं दूरस्थ लक्ष्यों को प्रभावित करती है । एक व्यक्ति जो खेल में रूचि रखता है एवं तत्सम्बंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी होता है । उसकी खेल के क्षेत्र में अधिक दृढ़ आकांक्षायें होंगी । कुछ रूचियों योग्यताओं से सम्बन्धित होती हैं । कुछ सामाजिक दबावों से उत्पन्न होती हैं

एवं कुछ प्रतिष्ठा की इच्छा से । योग्यताओं से सम्बन्धित रूचियां अधिक सन्तोषजनक होती हैं। यदि किसी व्यक्ति में गणित की अभिक्षमता है तो उसकी उस विषय में रूचि अधिक दृढ़ एवं स्थायी होगी । ऐसी आकांक्षायें जो योग्यता से सम्बन्धित रूचियों से विकसित होती है, वे सामाजिक दबावों से उत्पन्न रूचियों की अपेक्षा अधिक वास्तविक होती हैं । साथ ही वे आकांक्षायें जो ऐसी रूचियों से विकसित होती हैं जो व्यक्ति के जीवन में किसी आवश्यकता की सन्तुष्टि करती हों , उन आकांक्षाओं की अपेक्षा अधिक स्थायी होती हैं । जो अस्थायी रूचियों से विकसित हों । रूचियों में परिवर्तन के साथ आकांक्षाओं में भी परिवर्तन पाया जाता है । उदाहरणार्थ एक लड़का जिसकी आकांक्षायें विद्यार्थी जीवन में खेल में सफलता पर केन्द्रित है, प्रोढ़ावस्था में वे व्यवसाय में सफलता के लिए आकांक्षा पर परिवर्तित हो सकती हैं ।

(द) **मूल्य** - उन क्षेत्रों में जहां मूल्य अधिक प्रमुख हैं, जैसे व्यवसायिक एवं विवाह-साथी के चयन में आकांक्षायें प्रायः उच्च, कम वास्तविक एवं व्यक्ति की क्षमताओं से कम सम्बन्धित होती हैं । लड़कों के लिए व्यवसाय का अधिक मूल्य है अतः वे अधिक उच्च एवं प्रतिष्ठित व्यवसाय की ओर आकर्षित होते हैं । साथ ही लड़कियों में एक साथी की आकाक्षायें पायी जाती हैं ।

(च) **आत्म प्रत्यय** - सशक्त अहं वाले व्यक्तियों का आकांक्षा-स्तर प्रायः उच्च एवं दुर्बल अहं वाले व्यक्तियों का आकांक्षा स्तर प्रायः निम्न होता है । आकांक्षा-स्तर अहम् -शक्ति से सम्बन्धित है। अहम् के प्रति लगाव पर उल्लेखनीय कार्य आर० बी० कैटिल का हैं । अहम् शक्ति से यह ज्ञात होता है कि अहम् की दृष्टि से वह पूर्ण है या नहीं, अर्थात वे व्यक्ति जो उच्च प्रत्याशन रखते हैं, परन्तु निष्पत्ति उनकी उतनी नहीं होती अर्थात निम्न आकांक्षा-स्तर वाले होते हैं तो ऐसे व्यक्ति की अहम्-शक्तिपूर्ण नहीं होती । इसी प्रकार जिन व्यक्तियों का आकांक्षा-स्तर उच्च होता है ,उनका अहम् पूर्ण होता है । कैटिल के अनुसार अहं शक्ति का मुख्य लक्षण दृढ़ता, कार्यरत होना , आत्म-निर्भरता विश्वास आदि है । सामान्य आकांक्षा-स्तर वाले व्यक्तियों का आत्म-प्रत्यय अधिक वास्तविक होता है । अपनी योगयताओं का उचित मूल्यांकन करने के कारण ही वे अपना लक्ष्य अपनी योग्यता के अनुकूल निर्धारित करते हैं।

(छ) **पारिवारिक दबाव** - व्यक्ति की आकांक्षायें माता-पिता भाई-बहिन व अन्य सदस्यों द्वारा डाले गये दबावों से भी प्रभावित होती है । माता-पिता प्रायः बच्चे से पूर्णता की आशा करते हैं । वे बच्चों को व्यवसायिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपने से आगे बढ़ाना चाहते हैं परिवार में

अकेला बच्चा होने पर उस पर ये दबाव कुछ और अधिक ही होता है । छोटे बच्चों के लक्ष्य निर्धारण में पिता की अपेक्षा मां का प्रभाव अधिक होता है । बड़े होने पर विशेषकर लड़कों के लक्ष्य निर्धारण में पिता का प्रभाव अधिक रहता है । केवल उन परिस्थितियों में जहाँ माँ अधिक शिक्षित व कार्यरत है, बड़े बच्चों व किशोरों के लक्ष्य निर्धारण को प्रभावित करती है ।

(ज) आयु - छोटी आयु तथा किशोरावस्था में आकांक्षा-स्तर प्रायः कम वास्तविक होता है। टी० बी० माथुर ने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों का शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा का स्तर उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति की अपेक्षा ऊँचा था । परिपक्वता में बृद्धि के साथ आकांक्षा-स्तर अधिक वास्तविक हो जाता है ।

(झ) समूह कारक - जब व्यक्ति समूह में कार्य करता है तो प्रति स्पर्धा के कारण वह अपने लक्ष्य को ऊँचा निर्धारित करने का प्रयास करता है । सीयर्स के अनुसार- व्यक्ति की कार्य करने की वास्तविक क्षमता चाहे जितनी भी हो लेकिन सामान्तयः दूसरों के समक्ष अपनी योगयता को अधिक बताने में व्यक्ति को एक प्रकार का आन्तरिक सन्तोष प्राप्त होता है । दूसरी ओर असफलता के भय के कारण वह अपने लक्ष्य को निम्न निर्धारित करता है । फैस्टिगर ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के कार्यों की तुलना करके अपने को समायोजित करने का प्रयास करता है ।

(न) व्यक्तित्व विशेषतायें - प्रो० शाह, लेविन डेम्बो, फैस्टिंगर, सीयर्स तथा क्लुगमैन के परिणामों के अनुसार - जिन व्यक्तियों का आकांक्षा-स्तर उच्च होता है वे महत्वकांक्षी होते हैं । वे कार्य कम करते हैं । एवं कार्य की आशा अधिक करते हैं । इन्हें काल्पनिक एवं आदर्शवादी कहा जा सकता है। जिन व्यक्तियों का आकांक्षा-स्तर निम्न होता है उनमें निम्न प्रेरणा शक्ति, हीनता का भाव आदि विधमान रहते हैं । सामान्य आकांक्षा-स्तर वाले व्यक्ति यथार्थवादी होते हैं ।

आकांक्षाओं के प्रकार : -

प्रमुख रूप से आकांक्षाओं तीन रूपों में प्रदर्शित होती है :-

(1) सकारात्मक एवं नकारात्मक आकांक्षायें:-

नकारात्मक आकांक्षाओं का मुख्य लक्ष्य असफलता दूर करना होता है जबकि सकारात्मक आकांक्षायें सफलता प्राप्त करने की ओर उन्मुख होती हैं । यदि किसी व्यक्ति की आकांक्षायें सकारात्मक होती हैं तो वह उसी समय सन्तुष्ट होगा यदि उसकी उपलब्धि अपने वर्तमान स्थिति से अधिक होगी। यदि नकारात्मक आकांक्षायें हैं तो वह अपनी वर्तमान स्थिति को बनाये रखने का प्रयास करेगा ताकि उसकी स्थिति गिर न जाये । अधिकांश व्यक्तियों में सकारात्मक आकांक्षायें पायी जाती है, क्योंकि ये व्यक्ति के लिए अधिक सन्तोष प्रदान करने वाली तथा अपने आपको महत्वपूर्ण समझने की भावना उत्पन्न करने वाली होती हैं । केवल उसी समय जबकि व्यक्ति को निरन्तर विफलता का सामना करना पड़ा हो तो वह नकारात्मक आकांक्षाओं से ही सन्तुष्ट हो जाता है ।

(2) तात्कालिक एवं दूरगामी आकांक्षायें :-

प्रारम्भिक बाल्यवस्था से ही व्यक्ति ऐसे लक्ष्यों को स्थापित करता है, जिन्हें वह प्राप्त करना चाहता है । प्रारम्भ में यह लक्ष्य तात्कालिक होते हैं जैसे एक बच्चा किसी खिलौने या वस्तु को पकड़ता है जिसे प्राप्त करने की वह प्रत्याशा करता है तथा जो उसके समक्ष हो । बुद्धि के विकास के साथ बच्चा भावी लक्ष्यों के बारे में सोचने लगता है जैसे - जब मैं स्कूल जाऊँगा - - - - - - -। दूरस्थ लक्ष्य प्रायः कम वास्तविक होते हैं तात्कालिक लक्ष्यों की तुलना में ।

(3) वास्तविक एवं अवास्तविक आकांक्षायें :-

कुछ आकांक्षायें वास्तविक होती है क्योंकि वे व्यक्ति की योग्यता के अनुकूल होती हैं । पर कभी-कभी व्यक्ति ऐसी आकांक्षायें भी रखता है, जिन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में अपेक्षित योग्यता का अभाव हो । अतः अत्यधिक दृढ़ प्रेरणा होने तथा अत्यधिक प्रयास करने पर भी व्यक्ति उन्हें प्राप्त नहीं कर पाते । ऐसी आकांक्षायें अवास्तविक कहलाती हैं ।

आकांक्षा स्तर का मापन :-

आकांक्षा स्तर का मापन विभिन्न प्रकार की क्रियाओं अक्षर काटना, अंक प्रतिस्थापन, दर्पण चित्रांकन, वृत्त में मानव की मुखाकृति की रचना, आयताकार में सतिया बनाने आदि के द्वारा

किया जा सकता है । इस मापन प्रक्रिया में परिक्षार्थी से कई प्रयास करवाये जाते हैं । प्रथम प्रयास में प्राप्त अंकों को बता दिया जाता है तथा यह पूछा जाता है कि अगले प्रयास में वह कितने अंकों को प्राप्त करने की आशा करता है । इस प्रकार उससे कुल ग्यारह अथवा अधिक प्रयास करवाये जाते हैं । इनकी सहायता से तीन प्रकार के प्राप्तांक ज्ञात किये जाते हैं ।

लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांक - उपलब्धि भिन्नता प्राप्तांक :-

परिक्षार्थी द्वारा लक्ष्य प्राप्त किये गये प्रयासों की संख्या अलीगढ़ के अनवर अंसारी ने अक्षर काटने के आधार-पर एक आकांक्षा-स्तर परीक्षण का प्रयोग किया । पारीख एवं चट्टोपाध्याय ने किसानों के आकांक्षा-स्तर मापने के लिए एक अर्द्ध-प्रक्षेपण परीक्षण तैयार किया । इसके मानक विभिन्न आकांक्षा क्षेत्रों के शतांशीय वितरण के रूप में दिये गये हैं । रणजीत सिंह तथा टी०एस०सोहल ने किसानों के लिए एक अन्य आकांक्षा-स्तर परीक्षण का निर्माण किया । पारीख, राव, प्रभाराम लिंगास्वामी तथा शर्मा ने सन् 1970में छात्रों को संदर्शन प्रदान करने हेतु एक आकांक्षा-स्तर परीक्षण की रचना की। इसके द्वारा व्यक्तियों को उनकी आकांक्षाओं के आधार पर विभिन्न व्यक्तित्व प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है । सन् 1973में हरिमोहन सिंह एवं गोविन्द तिवारी ने एक आकांक्षा-स्तर परीक्षण की रचना की, जिसमें परिक्षार्थी को आयतों के अन्दर सतिया बनाने का कार्य करना होता है । भोपाल के जे० एस० ग्रेवाल ने सन् 1975में अपनी व्यवसायिक आकांक्षा- स्तर मापनी को हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित करवाया । 1973में एम० ए० शाह तथा महेश भार्गव ने आकांक्षा- स्तर परीक्षण की रचना की तथा 1975में बी०पी०भार्गव ने आकांक्षा- स्तर परीक्षण बनाया ।

आत्म-प्रत्ययः-

आत्म-प्रत्यय से तात्पर्य किसी व्यक्ति का किसी विशेष समाज में दूसरों की तुलना में अपने प्रत्यक्षीकरण से है । यह एक प्रकार की छवि है जो व्यक्ति की अपने स्वयं के प्रति होती है । जैसे वह योग्य है अथवा अयोग्य, समर्थ है अथवा असमर्थ, स्नेह योग्य है अथवा अस्वीकृत ।

बालक अपने चारों ओर के वातावरण में जैसा अपने आपको देखता है और जैसे उसके परिवार के लोग और परिचित उसे देखते हैं, इसी आधार पर वह अपने आत्म-प्रत्यय का निर्माण करता है। यही कारण है कि आत्म-प्रत्यय को दर्पण प्रतिमा **(Mirror image)**कहा गया है ।

एक बार आत्म -प्रत्यय के बनने के बाद यद्यपि यह स्थिर होते हैं, परन्तु नये अनुभवों के बड़ने के साथ-साथ इनमें भी संशोधन और परिवर्द्धन होता रहता है । आत्म-प्रत्ययों में क्रमबद्धता पायी जाती है । बालक में प्रारम्भिक अवस्था में जो आत्म-प्रत्यय बनते हैं । उन्हें प्राथमिक आत्म-प्रत्यय कहा जाता है । यह आत्म-प्रत्यय माता-पिता के शिक्षण के आधार पर अथवा परिवार के सदस्यों के शिक्षण के आधार पर बनते हैं । इन प्राथमिक आत्म-प्रत्ययों में भी शारीरिक और मनोविज्ञानिक दोनों प्रकार की आत्म-प्रतिमायें पाई जाती हैं । जब बालक दूसरे बच्चों के साथ खेलना प्रारम्भ करता है, स्कूल जाना प्रारम्भ करता है तब उसमें पहले से बने प्राथमिक प्रत्ययों का संशोधन और परिवर्द्धन होने लगता है । इस अवस्था में आत्म-प्रत्यय उद्दीपक आत्म-प्रत्यय कहलाते हैं । इस प्रकार के आत्म-प्रत्यय बहुधा इस बात पर आधारित होत हैं कि दूसरे लोग बालक को किस दृष्टि से देखते हैं । बहुधा यह देखा गया है कि समय-समय पर बालक अपने आत्म-प्रत्ययों में अपने सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों के मूल्यों,नियमों और प्रतिमानों के अनुसार संशोधन करते रहते हैं ।

आत्म-प्रत्यय मापनः-

आत्म-प्रत्यय मापन द्वारा व्यक्ति के आन्तरिक पहलुओं को अप्रत्यक्ष रूप से समझा जाता है। सर्वप्रथम केन्द्रीय व्यावसायिक एवं शैक्षिक निर्देशन ब्यूरो, देहली ने एक स्वतः सम्बोध सूची की रचना,निर्देशन एवं संदर्शन कार्य हेतु की ।इसमें तीन प्रारूप निहित हैं - वास्तविक आत्म, सामाजिक आत्म तथा आदर्श आत्म । प्रत्येक में **54**पद हैं, जिनके लिए **30**मिनट का कुल समय निर्धारित है । यद्यपि यह मुख्य रूप से हाईस्कूल छात्रों के लिए है, फिर भी इसका प्रयोग सभी लोगों पर किया जा सकता है । सागर शर्मा **(1960)**ने हाईस्कूल छात्रों (**11**एवँ **11**स्तर वाले) के लिए **68** पदों वाली एक एक सैल्फ कॉनसेप्ट इनवेन्ट्री का हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशन किया। यह आवृत्तियों की पाँच विन्दु मापनी पर आधारित है । इसमें फलांकन कुजियों का प्रयोग किया जाता है । आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों का पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक **.81** तथा आत्म आदर्श

डिसक्रिपेन्सीज का पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता गुणांक .72 ज्ञात किया गया। इसकी विषय वस्तु वैधता तथा देव की व्यक्तित्व सूची से कनवरजेण्ट वैधता ज्ञात की गयी। भागलपुर के **उदयप्रताप सिंह (1968)** ने अपराधियों के लिए एक सेल्फ रेटिंग इन्वेन्ट्री की रचना की। अहमदाबाद की **कुसुम भट्ट (1969)** ने किशोरों की स्वतः के प्रति अभिवृत्ति मापने के लिए 3 बिन्दु मापनी पर आधारित एक सैल्फ परसेप्शन सूची की रचना की। इसकी पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता .48 तथा अर्द्ध-विच्छेदन विश्वसनीयता .91 ज्ञात की गई। आपूर्ति वाक्य प्रपत्र से वैधता गुणांक .58 ज्ञात किया गया। **बी०एन० मुकर्जी (1969)** ने भी एक सैल्फ परसेप्शन प्रशनावली की रचना की। देहली **के०जी० अग्रवाल (1970)** ने सिमेष्टिक डिफरेंशियल पद्धति पर आधारित एक परसनेलिटी डिफरेंशियल मापनी के आंशिक तथा पूर्ण (मापनियों) की रचना की। यह 15 वर्ष की आयु से ऊपर के व्यक्तियों का आत्म-प्रत्यय करती हैं प्रत्येक प्रत्यय के लिए औसतन एक मिनट का समय लगता है।

त्रिपुति **के एम० वासवाना (1971)** ने कॉलेज छात्रों के लिए एक सैल्फ कॉनफिडेन्स इन्वेन्ट्री की रचना की। इसमें सौ पद सत्य/असत्य प्रकार के हैं। इसमें अधिक प्राप्तांक कम आत्म-विश्वास को इंगित करता। इसकी अर्द्ध-विच्छेदन विश्वसनीयता .91 तथा समस्त पदों की पद-वैधता .90 ज्ञात हुई। 800 कॉलेज छात्रों के लिए शतांशीय मानक ज्ञात किये गये। **राजकुमार वसन्ता (1972)** ने कॉलेज विद्यार्थीयों के लिए 'टेकनीफ मेजर आफ सैल्फ कनसेप्ट' की रचना की। पिथौरागढ के **वीरेन्द्र सिन्हा (1973)** ने एक आत्म-प्रकाशन सूची का निर्माण एवं मानकीकरण किया। यह सूची दोनों लिंगों के 12 से 18 वर्ष के ग्रामीण/शहरी किशोरों का आत्म-प्रकाशन करती है। यह आठ क्षेत्रों- धन, व्यक्तित्व, अध्ययन, शरीर, रूचि, भावना विचार, व्यवसाय, लिंगसम्बनधों में किशोरों का आत्म-प्रकाशन माता, पिता, भाई, बहिन, मित्र, अध्यापक के समक्ष करती है। प्रत्येक क्षेत्र में दस पद हैं। इसे करने के लिए लगभग 20 मिनट का समय दिया जाता है। इसका मानकीकरण ग्रामीण तथा शहरी 1,012 किशोर लड़के तथा लड़कियों पर किया गया। इसकी विश्वसनीयता तथा वैधता विभिन्न विधियों द्वारा ज्ञात की गयी। शैरी **वर्मा एवं गोस्वामी (1979)** ने एक स्वतः बोध परीक्षण का प्रकाशन किया जो कि आठ

क्षेत्रों में स्वतः बोध व्यक्त करता है । इसी वर्ष की **मुक्ता रानी रस्तोगी (1979)**ने एक सैल्फ कानसेप्ट सूची की रचना की ।

वीरेन्द्र सिन्हा (1982)ने अपने आत्म प्रकाशन सूची का व्यस्क प्रारूप, **पद्मा अग्रवाल तथा बी०डी० मिश्रा (1982)**ने स्व-प्रतिभा प्रश्नावली, **एस०बी० फक्कड़ (1984)**ने सेल्फ एक्सेप्टेस इन्वेन्ट्री, **राजकुमार सारस्वत (1984)**आत्म सम्बोध प्रश्नावली का आंग्ल तथा हिन्दी भाषाओं में **आर०पी०वर्मा एवं ऊषा उपाध्याय (1984)**ने आत्म अभिव्यक्ति सूची, केरल के टामस एवं राज **(1984)** ने हायर सेकेन्ड्री छात्रों के लिए एक सेल्फ ऐस्टीम सूची का प्रकाशन कराया।

पूणे की प्रतिभा देव (1985) ने आत्म-प्रत्यय के मापन हेतु सैल्फ कानसेप्ट सूची का चैक लिस्ट विधि तथा क्रमांकरण विधि से अध्ययन करने के लिए अलग-अलग रूपों की रचना की। **एस०पी० अहलुवालिया (1986)**ने **12**से **18**वर्ष के बच्चों के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन करने के लिए पिइर्स तथा हेरिस की मापनी पर आधारित चिल्ड्रन सैल्फ कानसेप्ट मापनी का मानकीकरण किया ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के उद्देश्य :-

प्रस्तुत अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1- अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ में शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा वौद्धिक विमाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना ।

2- अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थीयों के आत्म-प्रत्यय पर मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन करना ।

अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर विभिन्न प्रकार के मूल्यों :- धार्मिक, सामाजिक, जनतंत्रात्मक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, सुखवादी, शक्ति, परिवार, स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन करना ।

3- अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म -प्रत्यय के सामाजिक - आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना ।

अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय अन्तर्गत सामाजिक, स्वभाव, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक विभाओं पर सामाजिक -आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना ।

4- अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना ।

अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत शारीरिक, सामाजिक, स्वभाव, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक विभाओं पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना ।

अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत शारीरिक, सामाजिक, स्वभाव, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक विभाओं पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना ।

परिकल्पना :-

अनुसंधान के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं की रचना की गयी :-

1 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

1.1 अनुचूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं ।

1.2 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

1.3 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

1.4 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

1.5 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

1.6 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर मूल्यों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.1 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर धार्मिक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.2 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.3 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर जनतंत्रात्मक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.4 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सौन्दर्यात्मक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.5 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर आर्थिक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.6 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर ज्ञान मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.7 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सुखवादी मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा।

2.8 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शक्ति मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा

2.9 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर परिवार प्रतिष्ठा मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

2.10 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर स्वास्थ्य मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।

3 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

3.1 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा ।

3.2 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक- आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

3.3 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

3.4 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक- आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

3.5 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक -आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

3.6 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक- आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

4 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

4.1 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा -स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

4.2 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा ।

4.3 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म -प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

4.4 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

4.5 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा- स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

4.6 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के वौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा- स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

5. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा ।

5.1 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थीयों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

5.2 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

5.3 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

5.4 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा - स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

5.5 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

5.6 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के वौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा - स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

प्रस्तुत अनुसन्धान की परिसीमायें :-

प्रस्तुत अनुसन्धान में न्यादर्श के रूप में केवल जनपद जालौन (उ०प्र०) के विद्यार्थियों का चयन किया गया है । अतः प्राप्त परिणाम केवल इसी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रति ही तर्क संगत होगें ।

प्रस्तुत अनुसन्धान में छात्र तथा छात्राओं के परिणामों के मध्य अन्तर का अध्ययन नहीं किया गया है, जिसके कारण लिंग का प्रभाव नहीं देखा जा सकता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हटन, जे०एच०(1946),"भारत में जाति -प्रथा -हिन्दी अनुवाद मंगल नाथ सिंह, मोती लाल बनारसी दास, दिल्ली

केतकर, एस००वी०(1909)हिस्ट्री आफ कॉस्ट इन इंडियां, न्यूयार्क रिजले,

एच०एच० (1903)रिपोर्ट आन दि सेंसस ऑफ इंडिया (1901)खंड ,एथ्नोग्राफिक अपेंडिसेज,कलकत्ता

दत्त एन० के०(1931)ओरिजन एंड ग्रोथ ऑफकास्ट इन इंडियां कलकत्ता रोज,एच०ए०(1911) गलोसरी ऑफ दि ट्राइल्स एंड कास्टम ऑफ दि पंजाब एंड नार्थ-वेस्ट फ्रंटियर प्राविन्स, लाहोर,

रिजले, एच०एच० (1908)दि पीपुल ऑफ इंडिया कर्कपैट्रिक,डब्ल्यु क्रूक द्वारा संपादित संस्करण 1915

(1912) प्रिमिटिव एक्जोगामी एंड दि कास्ट सिस्टम , दे०प्रोसीडिंग्स ऑफ ए० सो०ब०,खण्ड VIII, सं०3,कलकत्ता 1912

यूल,एच०एंड वर्नेल, ए० सी०, (1903)हाब्सन जाल्सन(1886)क्रूक द्वारा संपादित 1903संस्करण

होकार्ट, ए० एम०(1936)दि वेसिस ऑफ कास्ट इन इंडिया, एक्टा ओरियंटलियाxivलीडर ।
मर्फी एंड न्यूकॉम्ब (1937)एक्सपेरिमेंटल सोशल साइकोलाजी कलुकहोन , एफ० आर० एंड स्ट्रोडबैक, एल० एल०(1981)वेरियेशन इन वैल्यु ओरियेन्टेशन, हार्पर एंड रो, न्यूयार्क

आलपोर्ट, जी डब्लू, वर्नन, पी० ई०, लिंण्डजे,जी(1960)मैनुअल फार दी स्टडी आफ वैल्यूज, बोस्टन स्टेगनर, आर०एण्ड कारवोस्की , टी० एफ० (1962) साइकॉलजी क्लुगमैन , एस० एफ०, (1948) इमोश्नल स्टेबिलिटी एण्ड लेवल आफ एसपायरेशन, जर्नल आफ जनरल साइकॉलाजी 1948पेज 101

फ्रेक, जे० डी० (1947)इंडिविजुअल डिफ्फरेंसज इन सर्टेन आसपेक्ट ऑफ द लेवल आफ एसपायरेंशन्स, अमेरिकन जर्नल आफ साइकॉलाजी पेज 119भार्गव, वी० पी० (1973)ए स्टडी आफ लेवल आफ एसपायरेशन एण्ड नीड एचीवमेंट पी०एच०डी०ग्रन्थ, आगरा विश्वविधालय

मौरिस, चार्ल्स (1957)वेराइटीज ऑफ ह्यूमन वैल्यूज शिकागो, मौरिस , रोजे-नवर्ग (1957)ऑकपेशन एण्ड वैल्यूज इलिनॉयस थर्स्टन आर०एल०(1959) मेजरमेन्ट ऑफ वेल्यूज शिकागो ।

कटियार, पी०सी०(1982)वैल्यूज आफ वोकेशनल प्रिफरेंस बड़ौदा

एनिलौफ, एल (1977) दि रिलेशनशिप बिटवीन हाईस्कूल प्रोग्राम एण्ड सैल्फ कान्सैप्ट, आकुपेशनल एसपिरेशन एण्ड ऑकुपेशनल एक्सपेक्टेशन एमांग नाइनथ ग्रेड स्टुडेन्टस डिजरटेशन एप्सट्रैक्ट इन्टरनेशनल 38 (5) 2332-A)

मुलेन, पी०इ०(1978)दि सैल्फ कान्सैप्ट एण्ड मीनिंग एण्ड वैल्यू ऑफ वोकेशनल एण्ड एकैडमिक हाईस्कूल सीनियर्स डिजरटेशन एसट्रैक्ट इन्टरनेशनल 38(5) 2325-B

जर्सील्ड,ए०टी० (1952)इन सर्च ऑफ सैल्फ, न्यूयार्क ब्यूरो ऑफ पब्लिकेशन, टीचर्स कॉलेज कोलम्बिया यूनिवर्सिटी

हैटफील्ड, ए०बी०(1961)एन एक्सपेरिमेंटल स्टडी ऑफ द सैल्फ कॉनसैप्ट आफ स्टुडेन्ट टीचर्स, जनरल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च 55 (2) 87

कैम्पबैल, पी० बी० (1967)स्कूल एण्ड सैल्फ-कानसैप्ट एजुकेशनल लीडरशिप 1967,24,510-13

वाइली, आर०सी०(1974) दि सैल्फ कानसैप्ट -ए क्रिटिकल सर्वे ऑफ पार्टिनेन्ट लिटरेचर,लिनकोन, नेब्रास्का, यूनिवर्सिटी आफ नेब्रास्का प्रेस 1974

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित अनुसंधान विवरण :-

भारत की स्वतंत्रता के तत्काल ~~जानने के~~ बाद भारत सरकार ने समूह तनाव के बारे में जानने के लिए 'यूनेस्को' की सहायता से एक अनुसंधान योजना का प्रायोजन किया । यह योजना गार्डनर मर्फी **(1953)**द्वारा निर्मित की गई । मर्फी इस निष्कर्ष पर पहूँचे कि इस तनाव का कारण यह है कि निम्नतर जातियां अब उच्चतर जातियों द्वारा भोगी जा रही सुविधाओं की मांग करने लगी हैं ।मुकर्जी **(1951)**ने ग्रामीण अंचलों में जातिगण दूरी पर अपने निरीक्षण प्रस्तुत किये । किस प्रकार कर्म का सिद्धान्त उन कारकों में से है जो व्यक्ति को छोटे से छोटे काम व जाति से समझौता करने की प्रेरणा देता है । जातिगति तनाव के लिए आर्थिक कारण अन्य कारकों में से एक उत्तरदायी कारक है।

कुप्पूस्वामी **(1956)**ने बताया कि ब्राम्हण विधार्थियों में इस बात का असन्तोष है कि व्यावसायिक विधालयों में प्रवेश, सरकारी नौकरियों तथा सामाजिक व राजनैतिक नेतृत्व के मामले में उनके साथ असमानता का व्यवहार किया जा रहा है । दूसरी ओर गैर ब्राम्हण अपने को शोषित महसूस करते । कोरर्टेयर्स **(1957)**ने पाया कि जातियों के मध्य बच्चों के पालन-पोषण के प्रकार तथा पारवारिक पद्धतियों में अन्तर है ।उन्होनं यह भी अनुभव किया कि अलग-अलग जातियों में आर्थिक सामुदायिक तथा लैंगिक आधारों पर अलग जीवन मूल्य निर्धारित है ।उक्त विभिन्नतायें बच्चों के आत्म-प्रत्यय पर गहरा प्रभाव डालती हैं ।

प्रस्तुत अनुसंधान से सम्वन्धित अनुसंधानों का विवरण सुविधा की दृष्टि से निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है -

(अ) आत्म-प्रत्यय तथा अनुसूचित उच्चतर जाति से सम्बन्धित अनुसंधान

(ब) आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसंधान

(स) आत्म-प्रत्यय पर विभिन्न मूल्यों के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसंधान

(द) आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा - स्तर के प्रभाव से समबन्धित अनुसंधान

(अ) आत्म-प्रत्यय तथा अनुसूचित व उच्चतर जाति से सम्बन्धित अनुसंधान -

सागर शर्मा (1969)ने विभिन्न जातियों ब्राम्हण, क्षत्रिय,वैश्य (उच्चतर जाति) तथा अनुसूचित जाति (निम्नतर) के आत्म-प्रत्यय के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त किया । उन्होंने आत्म तथा आत्म के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त किया तथा उच्चतर जाति के विधार्थियों के आदर्श-आत्म की अपेक्षा अधिक अंक प्राप्त किये

एस०एस०अनन्त (1970)ने आगरा, दिल्ली तथा वनारस के विभिन्न जातियों के 239शहरी प्रयोज्यों पर अध्ययन किया । इस अध्ययन में सिन्हा तथा सिन्हा (1967)द्वारा निर्मित रूढ़िवादिता चैक लिस्ट सूची के 88लक्षणों को प्रस्तुत किया गया । अध्ययन में पाया कि ब्राम्हणों की लालची, धार्मिक, जातीय तथा उदार माना गया जबकि क्षत्रियों को बहादुर, दृढ़ साहसिक तथा राष्ट्रभक्त माना । वैश्यों को डरपोक, बेईमान,कंजूस, गप्पी, लालची आदि लक्षणों के रूप में प्रत्यक्षीकरण किया गया । निम्नजाति के अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को शराबी, जड़, पिछड़ा, डरपोक आदि लक्षणों से युक्त पाया गया है

एम०के०हसन (1977)ने 400हिन्दू विद्यार्थियों पर अध्ययन कर यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में उच्चतर जाति की अपेक्षा अधिक नकारात्मक आत्म-प्रत्यय, अधिक चिन्ता स्तर, अधिक आधीनता की प्रवृत्ति तथा उपलब्धि आवश्यकता कम मात्रा में पाई गई ।सभी उच्चतर निम्नतर जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय तथा चिन्ता, आधीनता की प्रवृत्ति के मध्य सकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया । जबकि उपलब्धि आवश्यकता तथा आत्म-प्रत्यय के मध्य सभी जाति के विधार्थियों में नकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया ।

रानी अग्रवाल (1983)द्वारा आगरा की 60छात्राओं पर अध्ययन किया । प्रत्येक जाति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र जाति की छात्राओं का स्वत्व-बोध परीक्षण (शैरी तथा वर्मा 1979) किया गया और आत्म-अभिव्यक्ति परसूची (सिन्हा1977) का मापन किया गया । परिणामों द्वारा निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आत्म-प्रत्यय तथा आत्म-अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में विभिन्न जातियों के मध्य सार्थक अन्तर है । अनुसूचित जाति के छात्राओं का आत्म-प्रत्यय निम्न स्तर का ज्ञात हुआ

एच० सिंह (1987)द्वारा हिमाचल प्रदेश के 300अनुसूचित जाति के विधार्थियों के आत्म- प्रत्यय (मोहसिन) का परीक्षण किया गया । निष्कर्ष रूप में पाया कि आत्म-प्रत्यय के विभिन्न स्तरों पर विधार्थियों की अध्ययन-आदत सार्थक रूप से प्रभावित होती है ।

एम० वास वन्ना तथा एम०वी० उन्नवलारानी (1988)ने तिरूपति के कॉलेज विधार्थियों पर आत्म- प्रत्यय का अध्ययन किया । उच्चतर तथा निम्नतर जाति के विद्यार्थियों के दो समूह बनाये गये । पहला सामाजिक-आर्थिक रूप से सम्पन्न समूह जबकि दूसरा सामाजिक-आर्थिक रूप से गरीब समूह । परिणामों के विश्लेषण के लिए मान-बिटने यू परीक्षण का प्रयोग किया गया जिसके द्वारा काफी रोचक परिणाम प्राप्त हुए । उच्चतर जाति के सम्पन्न तथा गरीव समूह के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यक्षीकरण तथा पर प्रत्यक्षीकरण के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ जब कि निम्नतर जाति के सम्पन्न तथा गरीब समूह के विद्यार्थियों के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त नही हुआ प्रस्तुत अध्ययन द्वारा स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर जातिगत प्रभाव दृष्टिगति होता है।

उपर्युक्त आत्म-प्रत्यय तथा अनुसूचित व उच्चतर जाति से सम्बन्धित अनुसंधानों से स्पष्ट होता है कि आत्म-प्रत्यय पर विभिन्न जातियों का प्रभाव पड़ता है । उच्चतर जाति जिनमें ब्राहम्ण, क्षत्रिय, वैश्य हैं का आत्म-प्रत्यय अधिक उच्च स्तर का पाया जाता है जबकि निम्नतर जाति के विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय निम्न स्तर का प्राप्त होता है।

(ब) आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसंधान :-

रथ तथा सरकार (1960) ने हिन्दुओं की तीन उच्चतर तथा तीन निम्नतर जातियों की अभिव्यक्तियों का अध्ययन किया तथा पाया कि सभी जातियों के बहुसंख्यक सदस्य सभी जातियों को राजनैतिक स्वतंत्रता तथा आर्थिक सुविधायें स्वीकृत करने का समर्थन करते थे और विश्वास करते थे कि आर्थिक समानता के साथ जाति का लोप हो जायेगा ।

आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव से सम्बन्धित विभिन्न अनुसन्धान किये गये हैं। प्रमुख अध्ययनों का विवरण इस प्रकार है -

के०जी०अग्रवाल तथा पी०एन०सती (1967)द्वारा 55व्यक्तियों पर मेलविन (1954)की जनमत परिसूची प्रशासित की । परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि अव्यावसायिक तथा निम्न मध्यवर्गीय व्यक्ति आधुनिकता की भावना बहुत कम रखते हैं । इस प्रकार सामाजिक-आर्थिक स्थिति व्यक्ति के सामाजिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करती हैं ।

गिरीशवाला मोहन्ती (1972)ने डिग्री कॉलेज के 144छात्र तथा 144छात्राओं पर अध्ययन किया जो कि समान संख्या में उच्च, माध्यम तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक समूह से सम्बन्धित थे । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि सामाजिक-आर्थिक पर स्तर का प्रभाव छात्र-छात्राओं के आकांक्षा स्तर पर नहीं पड़ता है ।

एम०के०हसन (1977)द्वारा रॉची व जमशेदपुर के400हिन्दु छात्रों पर अध्ययन किया गया । विद्यार्थियों पर आत्म-प्रत्यय (सिन्हा) का परीक्षण किया गया । निष्कर्ष रूप में पायाकि सामाजिक आर्थिक रूप से सम्पन्न विद्यार्थियों की अपेक्षा सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित विद्यार्थियों का सहसम्बन्ध अधिक उच्च पाया गया था ।

एस० के० वर्मा तथा एस०पी०सूरी (1978)ने 200ग्रामीण विद्यार्थियों के आत्म -प्रत्यय पर विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का अध्ययन किया निष्कर्ष रूप में पाया कि आत्म-प्रत्यय को सामाजिक-आर्थिक स्थिति सार्थक रूप से .05स्तर पर प्रभावित करती है ।

अफजल कुरैशी तथा अकबर हुसैन (1979)ने अलीगढ़ के 17से 20आयु वर्ग के100वि - धार्थियों के आत्म-प्रत्यय तथा सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन किया अध्ययन मेंपाया कि सामाजिक आर्थिक स्थिति का कोई प्रभाव आत्म-प्रत्यय परनहीं पड़ता है ।

रामकुमार (1979)ने 1016डिग्री कॉलेज के छात्रों के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया। आत्म-प्रत्यय परीक्षण में उच्च अंक प्राप्त करने वाले 150विद्यार्थियों में पाया गया कि वे उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित थे । अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करती है ।

आर०सी०दीक्षित तथा जे०डी०मूरजानी (1981)ने जोधपुर के 9से 12आयु वर्ग के 400बच्चों पर अध्ययन किया । 300बच्चे सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित थे जबकि 100बच्चे सामाजिक-आर्थिक रूप से सम्पन्न वर्ग के थे । इन सभी विधार्थियों को विल्स के प्रारूप में बनी आत्म-प्रत्यय परिसूची प्रशासित की गई । परिणामों से ज्ञात हुआ कि सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूह तथा सम्पन्न समूह के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ था। सामाजिक-आर्थिक रूप से सम्पन्न विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय के अंक उच्च प्राप्त हुए ।

वी०के०गुप्ता (1982)ने करनाल जिले के पाँच हाईस्कूल विधालयों के 150विधार्थियों पर अध्ययन किया विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विभिन्न स्तरों के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ । अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि आत्म-प्रत्यय को सामाजिक-आर्थिक स्थिति प्रभावित करती है ।

गुप्ता (1982)ने स्वनिर्मित आत्म-प्रत्यय मापनी एवं वर्मा के सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन 80पुरूष छात्राध्यापक एवं 70महिला छात्राध्यापिकाओं पर प्रशासित किया। परिणाम बताते हैं कि आत्म प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव देखा गया ।

एच०एन०एस०गंगवार (1982)ने कानपुर के 180विद्यार्थियों पर आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया जिन्होंने हाईस्कूल परीक्षा में प्रथम,द्वितीय व तृतीय श्रेणी प्राप्त की थी ।मुक्तारानी रस्तोगी द्वारा निर्मित आत्म-प्रत्यय परिसूची तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति परीक्षण (सक्सेना) को प्रशासित किया गया । प्राप्त परिणामों से स्पष्ट हुआ कि प्रथम श्रेणी प्राप्त विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सामाजिक-आर्थिक स्थिति सार्थक रूप से प्रभावित करती है । मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति वाले प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों को आत्म-प्रत्यय में सर्वोच्च अंक प्राप्त हुए।

एस० ए० खान, सुनीता टंडन, तथा खुर्शीद आलम (1988)ने अलीगढ़ शहर के 200छात्र-छात्राओं को तीन हाईस्कूल विद्यालयों से अनियमित रूप में चुना गया । कुप्पू स्वामी (1981) की संशोधित सामाजिक-आर्थिक-स्थिति मै मापनी के द्वारातीन समूहों को चुना

गया । परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों का आकांक्षा-स्तर उच्च पाया गया जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों का आकांक्षा-स्तर भी निम्न पाया गया ।

जे०एन० लाल (1987) ने गोरखपुर के विभिन्न विद्यालयों के 10से 18आयु वर्ग के120छात्र तथा 120 छात्राओं के आत्म प्रत्यक्षीकरण पर सामाजिक-आर्थिक स्थित का प्रभाव का अध्ययन किया । सामाजिक-आर्थिक स्थिति का मापन एस०डी०कपूर द्वारा निर्मित मापनी द्वारा किया गया तथा तीन समूहों में विद्यार्थियों को वर्गीकृत किया गया । उच्च, माध्यम तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर रखे गये । मुख्य स्वतंत्र परिवर्ती के रूप में सामाजिकआर्थिक स्थिति सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करती हैं ।आत्म-प्रत्यक्षीकरण के रूप में आत्म-प्रत्यय,आत्म-प्रतिमा तथा आत्म-सम्मान निहित थे । अध्ययन से स्पष्ट होता है कि छात्र-छात्राओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनके आत्म-प्रत्यय को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है ।

मदनावत तथा लक्ष्मी ठाकुर (1987)ने जयपुर के बी०ए०कक्षा के 300 विधार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का उनके स्वभाव से सम्बन्ध का अध्ययन किया । शर्मा(1976)की सामाजिक आर्थिक स्थिति मापनी तथा गिल्फर्ड-जिमरमैन स्वभाव सर्वेक्षण (1949)मापनी का प्रशासन किया गया । प्राप्त परिणामों से ज्ञात हुआ कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा सामाजिकता,संवेगात्मक स्थिरता, विचारयुक्तता के साथ सार्थक अन्तर होता है ।

एम० बासवन्ना तथा एम०वी०उज्जवलारानी (1988) ने तिरूपति के कॉलिज विधार्थियों पर आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया । उच्चतर तथा निम्नतर जाति के विधार्थियों के दो समूह बनाये गये । पहला सामाजिक,आर्थिक -रूप से समपन्न समूह था जबकि दूसरा सामाजिक-आर्थिक रूप से गरीब समूह था । परिणामों का विश्लेषण मान-विटने यू परीक्षण द्वारा किया गया। सामाजिक-आर्थिक स्थिति विधार्थियों के आत्म-प्रत्यक्षीकरण तथा पर-प्रत्यक्षीकरण को सार्थक रूप से प्रभावित करती है । यह निष्कर्ष अनुसन्धान द्वारा प्राप्त हुआ ।

एच०पेरिन०मेहता, आर०के०माथुर तथा दयापन्त (1987)ने दक्षिणी दिल्ली तथा हरिया-णा के 106 छात्र तथा 96छात्राओं पर अध्ययन किया । यह सभी छात्र छात्रायें नवीं कक्षा की

13से 15आयु वर्ग के समूह की थीं । प्रतिदर्श का चयन सामाजि-आर्थिक स्तर के तीनों स्तरों के रूप में किया गया निम्न मध्यम, मध्यम तथा उच्च । अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विधार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनके शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का सार्थकरूप से प्रभावित करती है ।

उपर्युक्त अनुसंधानों से स्पष्ट होता है कि विधार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनके आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करती है ।

(स) आत्म-प्रत्यय पर विभिन्न मूल्यों के प्रभाव से सम्बन्धित अनुसंधान :-

यधपि इस प्रकार के अनुसंधान काफी कम हुए हैं किन्तु फिर भी कुछ मनोविज्ञानिकों द्वारा इस प्रकार के अनुसंधान किये गये हैं -

एस० शकीला बेगम तथा ए०ए० हफीज (1964)ने मैसूर के 192छात्र तथा 91छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन किया । सभी विधार्थियों द्वारा व्यक्तिगत मूल्यों की अपेक्षा सामाजिक मूल्यों को विशेषमहत्व दिया गया । सामाजिक मूल्यों स्वयं के सन्दर्भ में उच्च मानते हुए मूल्यांकन किया गया जबकि दूसरों के सन्दर्भ में अधो-मूल्यांकन किया गया । विज्ञान तथा कलावर्ग के विधार्थी, छात्र तथा छात्राओं के व्यक्तिगत व सामाजिक मूल्यों के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्तहुआ।

अनिरूद्ध पान्डेय (1977)ने लखनऊ के प्राइवेट तथा केन्द्रीय स्कूल के 10से 12आयु वर्ग के 60 विधार्थियों पर अध्ययन किया । डेनिस के परीक्षण का हिन्दी रूपान्तर विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि प्राइवेट स्कूल के विद्यार्थी सहयोगात्मक मूल्य अधिक रखते हैं । जबकि केन्द्रीय स्कूल के विधार्थी परोपकारी,सुखवादी मूल्य अधिक रखते हैं ।

ए०के०कालिया तथा एस०एस०माथुर (1985)ने चण्डीगढ़ शहरके कक्षा 9से 11में पढ़ने वाले 454 विधार्थियों का चयन किया । उच्च सामाजिक -आर्थिक स्थिति, मध्यम सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति रखने वाले विद्यालयों से उक्त विद्यार्थियों का चयन किया गया । स्कूल सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी तथा मूल्य परीक्षण (डॉ०कुलश्रेष्ठ) का प्रशासन किया गया । अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि जो विधार्थी उच्च सामाजिक-

आर्थिक स्थिति वाले स्कूलों में पढ़ रहे थे वे सैद्धान्तिक मूल्य से सर्वाधिक प्रभावित थे । इसके विपरीत जो विधार्थी निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के स्कूल में पढ़ रहे थे वे आर्थिक मूल्य से सर्वाधिक प्रभावित थे । उच्च तथा मध्यम स्थिति के स्कूल के विधार्थियों के राजनैतिक, सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया गया । सामाजिक मूल्य सभी स्कूल के विधार्थियों का समान स्तर पर पाया गया ।

जी०एस०अधिकारी **(1986)**ने उत्तर प्रदेश के हाईस्कूल में पढ़ने वाले ग्रामीण विधार्थियों के मूल्यों तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया । राव की सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी तथा ऑलपोर्ट-वर्नन मूल्य परीक्षण का हिन्दी अनुकूलन प्रशासित किया गया । अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति के छात्रों में सैद्धान्तिक मूल्य अधिक पाये गये इसी प्रकार निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के ग्रामीण छात्रों में सर्वाधिक सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्य प्राप्त हुए ।तीनों सामाजिक-आर्थिक स्थितियां में छात्रों के सामाजिक तथा राजनैतिक मूल्य समान पाये गये ।

गिरिजा तथा भद्रा **(1986)**ने बंगलौर के **213**बी०एस०सी०कृषि के विधार्थियों के मूल्यों तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया । अनुसंधान के निष्कर्ष प्राप्त हुए कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव व्यक्तिगत मूल्यों को प्रभावित करती है ।

ए० भूषण तथा एम०आहूजा **(1987)**ने दिल्ली,चण्डीगढ़ तथा शिमला के **440**विधार्थी तथा अध्यापकों के मूल्यों का अन्तर का अध्ययन किया । अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सभी ने सर्वाधिक पसन्द ईमानदारी तथा समानता के मूल्यों को किया जबकि सर्वाधिक नापसन्द कल्पनात्मक तथा मुक्ति के मूल्यों को किया । अध्यापकों द्वारा स्वतंत्रता,आत्म-नियन्त्रण,स्वतंत्रता तथा स्नेह प्रेरणा मूल्यों को अधिक महत्व दिया गया । जबकि विधार्थियों द्वारा सहायतापरक व्यवहार, सच्ची मित्रता को अधिक महत्व दिया गया ।

के०एस० रेड्डी तथा टी० राजशेखर **(1991)**ने भी **17-20**आयुवर्ग के किशोर तथा **40-50** आयु वर्ग के प्रौढ़ **250-250**संख्या में अनियत रूप से ग्रामीण व शहरी प्रयोज्यों का चयन किया । सुपर **(1970)**द्वारा निर्मित कार्य-मूल्य परिसूची का प्रशासन किया गया । अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शहरी तथा ग्रामीणों के स्थान में अन्तर होते हुये भी उनकी आयु

में अन्तर होते हुए भी आयु तथा व्यावसायिक अन्तर होते हुए भी उन्होंने सुरक्षा निर्देशात्मक सम्बन्ध व सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सबसे कम रूचि प्रदर्शित की । ग्रामीण तथा शहरी अध्यापकों एवं विधार्थियों के सृजनात्मक, उपलब्धि, प्रतिष्ठा व विविधता में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ ।

उपर्युक्त अनुसंधानों से स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रकार के मूल्य सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यय तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति से प्रभावित होते हैं इसके अतिरिक्त शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का प्रभाव भी आत्म-प्रत्यय पर पड़ता है । इस प्रकार के अनुसंधानों का विवरण इस प्रकार है

(द) आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा -स्तर के प्रभाव से सम्वन्धित अनुसंधान -

इस क्षेत्र में सम्भवतः प्रथम अनुसंधान **1973**में सुरेन्द्र सिंह ठाकुर द्वारा शैक्षिक व व्यवसायिक आकांक्षा परिवर्ती के साथ सामाजिक तथा मनोविज्ञानिक परिवर्तियों के सम्बन्ध की खोज करने के रूप में हुआ। आपने अनुसंधान के अन्तर्गत काफी रोचक परिणाम प्राप्त किये । जिनका आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर का था उनकी व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर भी उच्च पायी गयी । किशोरों का समूह सर्वाधिक, शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा को प्रभावित करता है । पिता के व्यवसाय तथा किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षा के मंध्य सकारात्मक सहबन्ध प्राप्त हुआ ।

गिरीशवाला मोहन्ती ने डिग्री कॉलेज के **288** बालक बालिकाओं पर अध्ययन किया जो कि समान संख्या में उच्च, मध्यम तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक समूह से सम्बन्धित थे।अध्ययन के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि बुद्धि-स्तर का कोई प्रभाव आकांक्षा-स्तर पर नहीं पड़ता है । बालिकाओं की अपेक्षा बालकों का आकांक्षा-स्तर अधिक उच्च पाया गया ।

के०ए० पाउलॉस तथा बी०एस० सत्यनरायण **(1978)**ने बंगलौर के **250**छात्र-छात्राओं की शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का अध्ययन किया । अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि विधार्थियों का शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर उनकी उपलब्धि को प्रभावित करता है जिन विधार्थियों का आकांक्षा-स्तर उच्च स्तर का था उनकी उपलब्धि भी उच्च स्तर की पाई गई ।

जी० तिवारी **(1980)**ने आगरा के **300**विधार्थियों पर आत्म-प्रत्यय तथा आकाक्षा-स्तर का अध्ययन किया । सिंह द्वारा निर्मित आत्म-प्रत्यय मापनी तथा सिंह व तिवारी द्वारा निर्मित

द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर परीक्षणों का प्रशासन किया गया । अनुसंधान के परिणामों द्वारा प्राप्त हुआ कि छात्राओं द्वारा आत्म-प्रत्यय तथा आकांक्षा स्तर परीक्षण में उच्च अंक प्राप्त हुए । छात्राओं के आत्म-प्रत्यय तथा आकांक्षा स्तर के मध्य .71सहसम्बन्ध जबकि बालकों में .53 सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ ।

मेहता, धर, धालीवाल,गुलाठी, भसीन तथा महेश्वरी (1980)द्वारा राजस्थान, पंजाब,हरियाणा के ग्रामीण हाईस्कूल विधार्थियों पर अध्ययन किया गया विधार्थियों के दो समूह बनाये गये । पहले समूह में ऐसे 133विधार्थी लिए गयेजिनके माता पिता अनपढ़ थे अथवा कक्षा दो तक पढ़े थे । दूसरे समूह में 119विधार्थियों को लिया गया जिनके माता-पिता पढ़-लिखे थे। व्यवसायिक आकांक्षा मापनी (जे० एस० ग्रेवाल) प्रशासित करने पर दोनों समूहों की व्यावसायिक आकांक्षा के मध्य एक ही क्षेत्र में अन्तर दृष्टिगत हुआ ।

दीक्षित तथा मूरजानी (1981)द्वारा जोधपुर के 9-12आयु वर्ग के बच्चों पर अध्ययन किया 300बच्चों को लिया गया जो कि सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित थे तथा 100ऐसे बच्चों का चयन किया गया जो सामाजिक-आर्थिक रूप से सम्पन्न थे अनुसंधान के निष्कर्ष में पाया गया कि जिन बच्चों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च था उनका आकांक्षा-स्तर तथा आत्म-प्रत्यय भी उच्च स्तर का था ।

स्वामीनाथन तथा पारवथी (1983)द्वारा 16वर्ष के 180किशोरों पर अध्ययन किया गया । 90 बालक -बालिकायें ऐसे लिए जिनकी माँ किसी प्रकार का व्यवसाय नहीं करती थीं जबकि शेष 90ऐसे बालक - बालिकाओं को लिया गया जिनकी माता स्कूल में अध्यापिका थी । ग्रेवाल द्वारा निर्मित व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रशासन करने पर अनुसंधान के निष्कर्ष प्राप्त हुए । जिन बच्चों की माता अध्यापिका थी उनका व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर उच्च पाया गया। दोनों समूहों के बालकों का व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर बालिकाओं की तुलना में उच्च स्तर का प्राप्त हुआ।

रोमापाल तथा तिवारी 1984द्वारा 240विधार्थियों पर आत्म-प्रत्यय परीक्षण (रस्तोगी),आकांक्षा-स्तर मापनी (सिंह तथा तिवारी) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी (सिंह तथा सक्सेना) का प्रशासन किया गया ।

परिणामों के रूप में ज्ञात हुआ कि उच्च उपलब्धता प्राप्त विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय भी उच्च स्तर का प्राप्त हुआ । उपलब्धता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा यौन का प्रभाव समान रूप से विद्यार्थियों के आकांक्षा-स्तर को प्रभावित करता है ।

अरोर(1985)अलीगढ़ के 18-22आयु वर्ग के 800ऐसे विद्यार्थियों का चयन किया जो कि मेडिकल, विधि, इंजीनियरिंग तथा शिक्षा की तैयारियाँ कर रहे थे । मेडिकल विद्यार्थियोंकेअतिरिक्त उच्च आतांक्षा स्तर रखने वाले सभी विद्यार्थी अधिक समस्याग्रस्त अनुभव कर रहे थे

बीना शाह (1986)द्वारा कुमायु विश्वविधालय से सम्बद्ध 7डिग्री कॉलेज के बी०ए० के 450 बी०एस०सी० 350बी०कॉम के 250विधार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का अध्ययन किया अनुसंधान के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि जाति तथा शैक्षिक विकास का विधार्थियों की आकंक्षा-स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । ब्राम्हण विद्यार्थियों का उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर प्राप्त हुआ

मेहता, माथुर तथा दयापन्त (1987)द्वारा नवमी कक्षा में पढ़ने वाले 13-15आयु वर्ग के दक्षिणी दिल्ली व हरियाणा क्षेत्र के विधार्थियों पर अध्ययन किया गया । अर्द्धग्रामीण क्षेत्र से 106छात्र तथा 96छात्राओं का चयन किया गया । जबकि ग्रामीण क्षेत्र से 40छात्र व 43छात्राओं का चयन किया । समाजिक-आर्थिक स्थिति के भी तीन स्तर रखे गये हैं उच्च मध्यम, मध्यम तथा निम्न मध्यम श्रेणी के रूप में अनुसंधान के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ है कि अर्द्धग्रामीण तथा ग्रामीण क्षेत्र का प्रभाव विधार्थियों के आकांक्षा-स्तर को प्रभावित नही करता है । इसी प्रकार यौन का भी कोई प्रभाव आकांक्षा-स्तर पर नहीं पड़ता है ।

एच० सिंह (1987)द्वारा हिमाचल प्रदेश के कक्षा10व 12में पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के 300 छात्र छात्राओं के आत्म-प्रत्यय तथा आकांक्षा-स्तर का अध्ययन किया गया । मोहसिन द्वारा निर्मित आत्म-प्रत्यय मापनी तथा शाह व भार्गव द्वारा निर्मित आकांक्षा-स्तर परीक्षण का

प्रशासन किया गया । अनुसंधान के परिणामों से स्पष्ट हुआ कि विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय उनकी पढ़ने की आदत को प्रभावित करता है । साथ ही पढ़ने की आदत के सन्दर्भ में छात्र-छात्राओं के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ ।

सिंह तथा सेंगर (1990) द्वारा बुन्देलखण्ड क्षेत्र के 100 ग्रामीण विधार्थियों के आत्म प्रत्यय तथा व्यवसायिक आकांक्षा-स्तर के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया । शैरी द्वारा निर्मित आत्म-प्रत्यय मापनी कुलश्रेष्ठ द्वारानिर्मित आकांक्षा-स्तर (व्यावसायिक) मापनी का प्रशासन किया गया । अनुसंधान के परिणाम प्राप्त हुए कि केवल व्यावसायिक आकांक्षायें तथा आत्म-प्रत्यय के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध .24प्राप्त हुआ । साथ ही अनुसंधान द्वारा यह भी ज्ञात हुआ कि आत्म-प्रत्यय द्वारा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर प्रभावित होता है ।

उपर्युक्त अनुसंधान विवरणों से स्पष्ट होता है कि आत्म-प्रत्यय को विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं, प्रमुख रूप से अनुसूचित जाति व उच्चतर जाति का प्रभाव, सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव विभिन्न प्रकार के मूल्यों का प्रभाव तथा शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर प्रभावित करते है ।.

Reference

1. Adhikari, G.S. (1986)(Psychologist, ·Institute of Medical Science, Banaras Hindu University, Varansi) A study of values in relation to SES of rural students. Asian journal of phychology and Education, 1986, 17(1), 15-18

2. Agrawal, K.G. and P.N. Sati (1967) Indian Middile class : an ideological study. Indian psychological Review, 1967 4(1), 27-30

3. Agrawal, Rani (1983) (Head dept. of Psychology, Dayalbagh Educational Institute, Agra) A study of self-disclosune and self-concept among major castes with special reference to girl students. DEI Research journal of Education and Psychology, 1983,1(1), 22-27

4. Anant, S.S. (1970) self and mutual perception of salient personality traits of different cast groups. Journal of Cross-cultural Psychology, 1970 ,(1), 41-52

5.Arora R. K. (1985) Student : problems ,Self·Concept and level of aspiration : A comparative study. Indian Educational Review, 1985, 20(3), 12-22.

6. Basavanna, M. and M.V. Vjjwalarani (1988) Differential impact of social and economics factors on perception of self and perception of others. Journal of Indian Academy of applied Psychology, 1988, (14)2, 35-40.

7. Begum, S. Shakeel and A.Hafeez (1964) A study of Individual and Social Values Indian journal of Psychology , 1964, 39 (1) ,35-46

8. Bhusan A. and M. ahuja(1987) Value difference among adolescents , youths and adults Belonging to different levels of educational institutions. Journal of Psychological Researches 1987, 31(3), 125-134

9.Dixit , R. C. and J. D. Moorjni (1981) self concept and level of aspiration as related to The socio - Economic Backwardnes among young children , Psycho- Lingua, 1981, 11(2) ,133-140.

10. Gangwar, H. N. S. (1982) Self-concept as function of Socio-economic and cultural settings in first divisioners of High School Students Indian Psychological Revew, 1982, 22(1) ,36-40

11. Girja, P.R. and B.R. Bhadra (1986) A comparative Study of change in Values among three socioeconomic Group of college Students. Indian journal of applied psyhiwgy ,1986, 23(1) 17-24

12.Gupta, V. K.(1982) A study of the effect of socio-cultural factors on self-concept of high school students. Progriess of education, 1982, 56(8), 188-191.

13. Hassan, M.K. (1977) social deprivation, self-image and some personality traits. Indian journal of personality and human development , 1977, 1(1), 42-56

14. Kalia, A.K. and S.S. Mathur (1985) value preferences of adobscents studying in schools with different socio-economic environments. Asian journal of Psychology and Education, 1985, 15(1), 1-6

15. Khan, S.A., Sunita tandon and Khurshid Alam (1988). A comparative study of level of aspiration of school going student in relation to their socio-economic stauts. Indian Psychological Review, 1988, 33(2), 37-40

16. Kureshi, Afzal and Akbar Hussain (1979) Neuroticism anxiety and self-concept (Self-ideal discrepancy) A study of interrelation ship. Indian journal of Clinical psychology, 1979, 6, 199-200

17. Lal, J.N. (1987) Social class differences in self-perception. Perspectives in psychological Resecarches. 1987, 10(2), 30-36.

18. Mednawat, A.V.S. and Laxmi Thakur (1987) socio-economic background influnece on development of temperamental characteristic among collage male students. Indian Psychological Review, 1987, 32(1), 35-39

19. Mehta P.H., C. Dhar, G.S.Dhaliwal, S.gulati, P.S.S. Bhasin and J.N. Maheswari (1980) Research on first generation learness. In M.V. Singh (Ed) Disadvantaged child (a Multidisciplinary symposium) 1980, PP 117-132

20. Mehta, Perin H., R.K. Mathur and Daya Pant (1987) Influence on level of occupational aspiration of adolescents. Indian Educational Review, 1987, 21(3), 42-62.

21. Mohamty, Girishbala (1972) Lebel of aspiration as a Function of sex, Socio -economic Factors and class perfrmance. Doctoral disscertation in psychology, utaral university 1972.

22. Pal, R. and G. Tiwari (1984) self Concept and level of aspiration in high and low achieving higher Secondary pupils. Indian Psychological Review, 1984, 27(1-4), 1722.

23. Panday, Anirudh(1977) School environment and Values of indian children estimated by uses of common objects. Perceptual and another skills, 1977,44,69-70.

24. Poulose, K.A. and Bs Satya Narayan .(1978) Scholastic achievement of per-university student in reation to their interest and aspiration.Perspectives in Psychological Researches,1978,1,101-107.

25. Ramkumar,V.(1979) Subject characteristics of adobescent girls with acnte Self concept, lournal of Psycholgical Rechearches, 1979,23(3), 168-173.

26. Reddy,KS and T. Rajashekhar(1991)Work Values of the youth and their teachers, Perspectives in psychological Researches. 1991,14(1),9-18

27. Sharma, Sager (1969) Caste affiliation and Sex as sourcesof variation in self acceptance of adolescent. Manas,1969, 16(2),87-93.

28. Singh,H.(1987) Study habits of scheduled tribe students in relation to their concept and level of aspiration. journal of education Research and extension, 1987,24(3),165-172.

29. Singh,R.J. and P.S.Senger(1990) Vocational aspirations and some psycho-social variables. Perspectives in Psychological Researches,1990,13(2),40-42.

30. Swaminathan,V.D. and S. Parvathi(1983) Occupational aspiration of adobscent boys and girals of working and non-working mothers.

Indian journal of Applied Psychology,(1983),20(1),23-28

31. Thakur , Surendra Singh(1973) Determining the Relationship of social and Psychological Variables to educational and Occupational Aspirations Rural Health in India .Doctoral dissertation in education sulmitted to the University of Wisconsin, 1973

32. Tiwari , G. (1980) A study of self concept and levle of aspiration of school going children. Indian Psychological Review, 1980, 19 (2) ,1-4

33. Verma, S. K. and S.P. Suri (1978) Differences in the self- concept of high and lowochievers of rural high school student at different levels of socio -economic status. Ispt Journal of Rusearch 1978, 2, 119-125

तृतीय अध्याय

अनुसंधान पद्धति तथा प्रक्रिया :-

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत अनुसंधान अभिकल्प, पद्धति तथा प्रक्रिया का वर्णन किया जाना आवश्यक है -

जनसंख्या - प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत जनसंख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित जनपद जालौन के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन रत छात्र तथा छात्रायें हैं ।

प्रतिदर्श- उत्तरप्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्थित जनपद जालौन के उच्चतर माध्यमिक विधालयों में अध्ययन रत 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया । जिनमें 300 विद्यार्थी उच्चतर जाति के थे तथा 300विद्यार्थी अनुसूचित जाति से सम्बन्धित थे ।

उक्त प्रतिदर्श का चयन क्रमबद्ध प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया ।

अनुसंधान-अभिकल्पः-

वर्तमान अनुसंधान आत्म-प्रत्यय परमूल्यों, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव से सम्बन्धित होने के कारण एक्स-पोस्ट फैक्टो अनुसंधान प्रकार हैं । स्वतन्त्र परिवर्ती पहले से ही घटित हो चुका है, अतः अनुसंधान कर्ता का कार्य आश्रित परिवर्ती को प्रभावित करने वाले स्वतंत्र परिवर्तीयों का अध्ययन करना है ।

स्वतन्त्र परिवर्ती - उच्चतर तथा अनुसूचित जाति मूल्य

सामाजिक - आर्थिक स्थिति

- शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षा

आश्रित परिवर्ती - आत्म-प्रत्यय

प्रयुक्त परीक्षणों का विवरण :-

प्रस्तुत अध्ययन अनुसंधान के अन्तर्गत निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया।

1- आत्म-प्रत्यय सूची - डा०आर०के सारस्वत

2- वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली - जी०पी०शैरी तथा आर० पी० वर्मा

3- सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी - डा० कुलश्रेष्ठ

4-शैक्षिक आकांक्षा मापनी - वी०पी०शर्मा

5-व्यावसायिक आकांक्षा मापनी - ग्रेवाल

उक्त परीक्षणों का विवरण इस प्रकार है -

1-आत्म-प्रत्यय सूची :-

यह परीक्षण डा० आर० के० सारस्वत द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत है। परीक्षण के अन्तर्गत **6** विभिन्न विमाओं का मापन किया जाता है -

(i) शारीरिक - व्यक्ति का स्वयं अपने शरीर, स्वास्थ्य, शक्ति एवं शारीरिक सौष्ठव के सम्बन्ध में विचार ।

(ii) सामाजिक - सामाजिक अन्तः क्रियाओं में व्यक्ति का आत्म-सन्तोष ।

(iii)स्वभाव - संवेगात्मक स्थिति में व्यक्ति के विचार ।

(iv)शैक्षिक - स्कूल, अध्यापक तथा पाठ्येत्तर क्रियाओं के प्रति व्यक्ति के स्वयं के विचार ।

(v)नैतिक - व्यक्ति का नैतिक-मूल्य, सही व गलत क्रियाओं का अनुमान ।

(vi)बौद्धिक - व्यक्ति की अपनी बुद्धि तथा समस्या-समाधान व निर्णय के प्रति जागरूकता।

उक्त विमाओं में प्राप्त कुल अंकों के योग के आधार पर आत्म-प्रत्यय प्राप्तांक ज्ञात किया जाता है।

सूची में कुल **48**पद हैं। प्रत्येक विमा से सम्बन्धित आठ पद हैं। प्रत्येक पद में पाँच विकल्प दिये गये हैं। परीक्षण पूरा करने की कोई समय-सीमा नहीं है। सामान्यतः **20**मिनट परीक्षण पूरा करने के लिए पर्याप्त होते हैं।

(i) फलांकन पद्धति :-

प्रत्येक पद के पाँच विकल्प दिये गये हैं । विद्यार्थी को किसी एक विकल्प पर सही का चिन्ह अंकित करना है । यदि वह पहले विकल्प पर सही का चिन्ह अंकित करता है उसमें उसको पाँच अंक दिये जायेंगे, दूसरे विकल्प पर सही का चिन्ह अंकित करने पर चार अंक । इसी प्रकार तीसरे, चौथे व पाँचवे विकल्प पर सही का चिन्ह अंकित करने पर क्रमशः तीन,दो व एक अंक दिये जायेंगे । समस्त 48पदों में प्राप्त अंकों के कुल योग को ही आत्म-प्रत्यय के प्राप्तांक माना जाता है । यदि यह प्राप्तांक अधिक होते हैं, तब ऐसी स्थिति में उच्च आत्म-प्रत्यय तथा कम प्राप्तांक होने पर निम्न आत्म-प्रत्यय होगा । प्रत्येक विमा से सम्बन्धित आठ पद हैं । प्रत्येक विमा के आठ पदों में प्राप्त कुल अंकों का योग को उस विमा के प्राप्तांक माना जाता है । इस प्रकार 6विमाओं में के अलग-अलग प्राप्तांक ज्ञात किये जाते हैं ।

(ii) परीक्षण की विश्वसनीयता :-

पुनर्परीक्षण विधि द्वारा आत्म-प्रत्यय परिसूची की विश्वनीयता का निर्धारण किया गया जो कि .91 प्राप्त हुई ।विभिन्न विमाओं की विश्वसनीयता .67से .88के मध्य प्राप्त हुई । निम्नलिखित सारणी पुनर्परीक्षण विश्वनीयता प्रत्येक विमा को प्रदर्शित करती है ।

आत्म-प्रत्यय परिसूची की पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता :-

कोड नम्बर	आत्म-प्रत्यय विमा	पदों की संख्या	विश्वसनीयता गुणांक
A	शारीरिक	8	.77
B	सामाजिक	8	.83
C	स्वभाव	8	.79
D	शैक्षिक	8	.88
E	नैतिक	8	.67
F	बौद्धिक	8	.79
	कुल आत्म-प्रत्यय	48	.91

(iii) वैधता :-

आत्म -प्रत्यय सूची की अन्वय तथा निर्मित वैधता का निर्धारण किया गया । इसके अन्तर्गत 25 मनोविज्ञानिकों को विभिन्न विमाओं के अन्तर्गत पदों को वर्गीकृत करने के लिए कहा गया । मनोविज्ञानिकों द्वारा सर्वाधिक स्वीकृत पदों का चयन किया गया किन्तु यह सहमति 80प्रतिशत से कम नहीं रखी गई ।

(iv) मानकीकरण :-

आत्म -प्रत्यय सूची का मानकीकरण दिल्ली के 20हायर सेकेण्डरी विद्यालयों के 1000विद्यार्थियों पर किया गया । स्कूल के अन्तर्गत दिल्ली प्रशासन तथा केन्द्रीय विद्यालयों से सम्बद्ध स्कूल रखे गये ॥ नवीं तथा दसवीं कक्षा के 14से 18आयु वर्ग के विद्यार्थियों पर परीक्षण का मानकीकरण किया गया ।

विभिन्न विमाओं की व्याख्या तथा वर्गीकरण :-

आत्म-प्रत्यय के प्राप्तांक	विवेचन
33से 40	उच्च आत्म-प्रत्यय
25से 32	औसत से अधिक
17से 24	औसत आत्म - प्रत्यय
9 से 16	औसत से निम्न
आठ तथा उससे कम	निम्न आत्म - प्रत्यय

कुल प्राप्तांकों के आधार पर आत्म-प्रत्यय की व्याख्या-

प्राप्तांक	विवेचन
193 से240	उच्च आत्म-प्रत्य
145 से 192	औसत से उच्च
97से 144	औसत
49से 96	औसत से निम्न
1से 48	निम्न आत्म-प्रत्यय

(2) वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली :-

प्रस्तुत प्रश्नावली दयाल बाग शैक्षिक संस्थान आगरा की निर्देशिका डा०(श्रीमती) जी०पी०शैरी तथा बनारस के डा०आर०पी०वर्मा द्वारा निर्मित है ।

प्रस्तुत वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली के अन्तर्गत दस विभिन्न प्रकार के मूल्यों का मापन किया जाता है, जिनका विवरण इस प्रकार है -

(क) धार्मिक मूल्य :-

ईश्वर में विश्वास, ईश्वर-ज्ञान प्राप्ति, धार्मिक पुस्तकों में उपलब्ध नैतिक नियमों के अनुरूप व्यवहार करना तथा ईश्वर-शक्ति से भयभीत रहना आदि विशेषतायें धार्मिक मूल्य से प्रभावित व्यक्तियों में पाई जाती है । धार्मिक मूल्य से प्रभावित व्यक्ति तीर्थस्थलों का भ्रमण करते हैं, सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं तथा धार्मिक सन्तों के प्रति आदर-भाव रखते हैं। ईश्वर की नित्य उपासना तथा सत्य बोलना इनके व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषतायें होती हैं ।

(ख) सामाजिक मूल्य :-

इस मूल्य से प्रभावित व्यक्ति दयालु, सहयोगी होते हैं तथा मानव सेवा में प्रेम व सहानुभूतिपूर्वक संलग्न रहते हैं । अपनी स्वयं की सुख-सुविधाओं का परित्याग कर जरूरत मंद व्यक्तियों की सहायता करने की प्रवृत्ति पाई जाती है ।

(ग) जनतन्त्रात्मक मूल्य :-

धर्म, भाषा, जाति, सेक्स, रंग, सामाजिक-आर्थिक स्तर आदि के कारण भेदभाव नहीं रखने वाले तथा सभी को समान समझने वाले व्यक्ति जनतन्त्रात्मक मूल्य से प्रभावित होते हैं । सभी को समान सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक अधिकार दिलाना तथा सामाजिक-न्याय सभी को मिल सके ऐसा निरन्तर प्रयास करने वाला व्यक्ति जनतंत्रात्मक मूल्य रखता है ।

(घ) सौन्दर्यात्मक मूल्य :-

इस मूल्य से प्रभावित व्यक्ति सुन्दरता, कला-प्रेमी, चित्रकारी अथवा संगीत में रूचि रखता है । साहित्य, कविता, नृत्य पेंटिंग आदि विधाओं की ओर झुकाव होता है ।

(च) आर्थिक मूल्य :-

धन प्राप्ति की इच्छा रखना तथा धन की दृष्टि से अपने व्यावसाय कार्य आदि का मूल्यांकन करना, आर्थिक मूल्य से प्रभावित व्यक्तियों की प्रमुख विशेषता होती है ।

(छ) ज्ञान - मूल्य :-

सत्य की खोज करना, सैद्धान्तिक पक्ष को अधिक महत्व प्रदान करना ज्ञान-मूल्य से प्रभावित व्यक्ति के प्रमुख गुण होते हैं । इस मूल्य के व्यक्ति यह मानते हैं कि किसी भी कार्य में सफल तभी हुआ जा सकता है जब हम उस कार्य के सभी सैद्धान्तिक-सिद्धान्तों को समझते हुए कार्य करेंगे । नवीन ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा, नवीन तथ्य तथा उनका आपसी-सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए यह आवश्यक है, कि व्यक्ति ज्ञान-मूल्य से प्रभावित हो ।

(ज) सुखवादी मूल्य :-

दु:खों, कष्टों से बचना तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करना इस मूल्य से प्रभावित व्यक्तियों का प्रमुख गुण होता है । इनके लिए वर्तमान अधिक महत्वपूर्ण होता है, भविष्य में क्या होगा इसकी चिन्ता नहीं होती है ।

(झ) शक्ति-मूल्य :-

दूसरों लोगों का नेतृत्व करना तथा उन पर शासन करने की इच्छा शक्ति मूल्य से प्रभावित व्यक्ति रखते हैं । किसी बड़े प्रतिष्ठान में कार्य करने की अपेक्षा छोटे समूह को नेतृत्व प्रदान करना अधिक रूचिकर लगता है ।

(ट) परिवार - प्रतिष्ठा मूल्य :-

ऐसे व्यवहार, कार्य तथा भूमिका को पसन्द करना जिसके द्वारा परिवार की स्थिति अधिक सुदृढ़ हो सके । परम्परागत विचारों कार्यों का समर्थन करना तथा रूढ़िवादिता के साथ अन्तरजातीय विवाह सम्बन्धियों को प्राथमिकता देना इस मूल्य से प्रभावित व्यक्तियों के प्रमुख गुण हैं ।

(ठ) स्वास्थ्य मूल्य :-

आत्म-सतर्कता रखते हुए अपने शरीर को चुस्त रखना, अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखना तथा ऐसे कार्यों, व्यवहारों से बचना जिनके कारण स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता हो, इस मूल्य से प्रभावित व्यक्तियों के प्रमुख गुण हैं ।

फलांकन पद्धति :-

प्रश्नावली के पद बलात् चयन विधि पर आधारित हैं । व्यक्ति तीन विकल्पों में जिसे सर्वाधिक पसन्द करता है, उसमें दो अंक, सर्वाधिक नापसन्द में शून्य तथा शेष तीसरे विकल्प में एक अंक दिया जाता है । तत्पश्चात सभी मूल्यों में प्राप्त अलग-अलग अंकों का योग किया जाता है । प्राप्तांको का संशोधन अंक ज्ञात किया जाता है । इसके लिए निम्नलिखित सारणी का प्रयोग किया जाता है । धनात्मक अंकों को प्राप्त अंकों के मूल्य में जोड़ दिया जाता है जबकि ऋणात्मक अंक को घटा दिया जाता है ।

मूल्य	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ
संशोधन	0	-4	-3	0	+3	-2	+3	+4	0	-1

मानकीकरण :-

परीक्षण का मानकीकरण इण्टरमीडिएट कक्षा में अध्ययन करने वाले **1174**लड़के (**290**कला समूह से, **631**विज्ञान समूह से तथा **253**कॉमर्स समूह से) तथा **551**लड़कियों पर किया गया । इसके अतिरिक्त माध्यमिक विद्यालयों के **428**पुरूष तथा**246**स्त्रियों को मिलाकर कुल **674** अध्यापकों पर भी इसका मानकीकरण किया गया ।

विश्वसनीयता-निर्धारणः-

होयट विधि से प्रसार विश्लेषण का प्रयोग करके विश्वसनीयता गुणांक **.48**से **.70**तक प्रत्येक मूल्य ज्ञात किया गया । पुनर्परीक्षण विधि से **3**माह के अन्तर के साथ विभिन्न मूल्यों का विश्वसनीयता गुणांक **.53**से **.82**तथा **11**माह के अन्तर के साथ **.45**से **.67**तक ज्ञात किया गया ।

क्रमांक	मूल्य	पुनर्परीक्षण विधि द्वारा		प्रसार विश्लेषण द्वारा	मानक त्रुटि द्वारा
		11 माह पश्चात	3 माह पश्चात		
1	धार्मिक मूल्य	.52	.82	.64	1.6
2	सामाजिक मूल्य	.45	.66	.47	1.9
3	जनतन्त्रात्मक मूल्य	.62	.57	.48	2.4
4	सौन्दर्यात्मक मूल्य	.47	.65	.56	1.8
5	आर्थिक मूल्य	.67	.70	.70	2.0
6	ज्ञान मूल्य	.59	.63	.50	2.2
7	सुखवादी मूल्य	.61	.54	.63	2.0
8	शक्ति मूल्य	.55	.53	.60	2.1
9	परिवार-प्रतिषठा मूल्य	.57	.85	.67	1.6
10	स्वास्थ्य मूल्य	.53	.64	.52	2.2

इसी प्रकार विभिन्न मूल्यों की वैधता उनकी कसौटियों के आधार पर ज्ञात की गयीं । मूल्यों का सह सम्बन्ध ज्ञात कर वैधता ज्ञात की गयी । स्टेन प्राप्तांक मानक, टी-प्राप्तांक मानक शतांशीय मानकों को प्रत्येक समूह के लिए ज्ञात किया गया ।

3 सामाजिक - आर्थिक स्तर मापनी :-

विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी विभिन्न मनोविज्ञानिकों द्वारा मानकीकृत की गयी है जैसे डा०एस०पी० कुलश्रेष्ठ, डा०कुप्पू स्वामी तथा डा०राजीव भरद्वाज द्वारा निर्मित मापनियाँ अत्यधिक विश्वसनीयसनीय तथा वैध है । इस कारण से अनुसंधान कर्ता द्वारा स्वयं मापनी का निर्माण तथा मानकीकरण नहीं किया गया । डा० एस०पी० कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत मापनी का प्रस्तुत अनुसंधान में प्रशासन किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है -

देहरादून के डा० एस०पी०कुलश्रेष्ठ **(1972)**ने शहरी एवं ग्रामीण व्यक्तियों के सामाजिक आर्थिक-स्तर का विस्तृत मापन करने के उद्देश्य से दो प्रारूपों सामाजिक आर्थिक-स्तर परिसूची (शहरी) प्रारूप-ए व सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची (ग्रामीण) प्रारूप-बी का मानकी करण व प्रकाशन किया । इन दोंनों प्रारूपों का प्रशासन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार से सम्भव

है । प्रारूप-ए तथा प्रारूप-बी दोनों में 20-20पद हैं जो कि व्यक्ति के शहरी /ग्रामीण परिस्थितियों सामाजिक - आर्थिक स्तर से सम्बन्धित हैं - फलांकन के लिए फलांकन कुँजियों का प्रयोग किया जाता है । प्रारूप-ए का मानकीकरण उत्तर प्रदेश के 1000शहरी छात्रों पर किया गया । इसकी पुनर्परीक्षण वैधता 10दिन के समयान्तर से .87 प्राप्त हुई । इसकी विषय वस्तुवैधता व प्रत्यय वैधता समाजशास्त्रियों,मनोविज्ञानिकों, अर्थशास्त्रियों तथा शिक्षाशास्त्रियों की राय के आधार पर सन्तोषजनक पाई गई ।

डा०कुप्पु स्वामी सामाजिक आर्थिक स्तर परिसूची (1962)व पाण्डेय की सामाजिक -आर्थिक स्तर प्रश्नावली के साथ इसका सहसम्बन्ध गुणांक क्रमशः .57व .89हुआ। परिसूची के प्रारूप बी का मानकीकरण भी उत्तर-प्रदेश के 1,000ग्रामीण व्यक्तियों पर किया गया है। इसकी पुनर्परीक्षण विधि से विश्वसनीयता .85प्राप्त की गयी । विषय-वस्तु वैधता सन्तोषजनक पाई गयी तथा पारीख एवं त्रिवेदी के सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची के साथ सहसम्बन्ध गुणांक .81 प्राप्त किया गया । दोनों ही प्रारूपों के स्टेन मानक ज्ञात किये गये ।

4शैक्षिक आकांक्षा मापनी :-

सन् (1978) में रायपुर के बी०पी०शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता ने कॉलेज युवकों के लिए शैक्षिक आकांक्षा मापनी प्रारूप-बी तथा अन्य लोगों के लिए शैक्षिक आकांक्षा मापनी प्रारूप-पी का प्रकाशन किया गया । प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत प्रारूप-बी का प्रशासन किया गया ।

प्रस्तुत मापनी हॉलर तथा मिल्लर (1963)द्वारा विकसित तकनीक पर आधारित हैं, जिसके अन्तर्गत 275विभिन्न डिग्री, डिप्लोमा आदि की सूची 10निर्णयकर्ताओं को इस उद्देश्य से दी गयी। कि वे उन्हें 10 क्रमिक वर्गों में वर्गीकृत करदें । पहले स्थान पर उन डिग्री को रखें जो सर्वाधिक प्रतिष्ठित मानी जाती हैं । इसी प्रकार अन्तिम दसवें स्थान पर उस डिग्री अथवा सर्टीफिकिट को रखें जो सर्वाधिक कम प्रतिष्ठित माना जाता है । 10निर्णय कर्ताओं द्वारा समान सहमति वाली योग्यताओं को चुन लिया गया शेष को निकाल दिया गया । 100%सहमति इस प्रकार प्राप्त हुएः-

क्रमांक	ए	बी	सी	डी	ई	एफ	जी	एच	आई	जे	योग
100प्रतिशत सहमति	13	11	09	06	07	05	8	11	01	10	91

इस प्रकार 275पदों में से दो तिहाई कम होने पर कुल 91पदों के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा मापनी निर्मित की गयी। उन्हीं दस निर्णय कर्ताओं द्वारा इन पदों को सामाजिक प्रतिष्ठा तथा उन्हें प्राप्त करने में कठिनाई स्तर के आधार पर क्रम में रखवाया गया।

अन्तिम प्रारूप के अन्तर्गत आठ सूची क्रमशः बनाई गयी, जिनमें प्रत्येक में दस पद रखे गये।

फलांकन पद्धति :-

प्रत्येक सूची के 10पद प्रतिष्ठा मूल्य 1से 10 तक रखते हैं। विभिन्न प्रतिष्ठा मूल्य के पद अनियत रूप से रखे गये हैं। फलांकन निम्नलिखित सारणी के आधार पर किया जाता है -

सूची

विकल्प	1	2	3	4	5	6	7	8
1	10	2	8	7	5	4	10	5
2	8	7	2	1	6	7	8	6
3	1	8	6	8	2	5	2	1
4	3	6	1	9	4	6	3	2
5	9	5	10	5	7	8	4	3
6	6	10	9	3	10	2	1	4
7	7	1	3	10	8	10	5	7
8	5	4	7	6	9	1	7	8
9	4	9	5	2	3	3	9	9
10	2	3	4	4	1	9	6	10

इस प्रकार अधिकतम अंक 80तथा न्यूनतम अंक 8 प्राप्त हो सकते हैं।

विश्वसनीयता :-

पुनर्परीक्षण विधि द्वारा मापनी की विश्वसनीयता .798तथा आन्तरिक संगति अर्द्धविच्छेदन विधि द्वारा .671प्राप्त हुई ।

वैधता :-

निर्णयकर्ताओं के मत के आधार पर वैधता .758तथा भविष्य कथन वैधता गुणांक .542प्राप्त हुआ ।

5व्यावसायिक आकांक्षा मापनी :-

भोपाल के डा०जे०एस०ग्रेवाल द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत व्यावसायिक आकांक्षा मापनी का प्रशासन प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत किया गया है ।

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर मापनी के प्रारम्भिक चरण में 150व्यवसायों की सूची विभिन्न निर्णयकर्ताओं के सम्मुख प्रस्तुत की गयी । प्रतिष्ठा के आधार पर प्राप्त रेटिंग प्राप्त की गयी । शेष 108व्यवसायों को 200व्यक्तियों पर प्रशासित किया गया तथा उनसे पाँच बिन्दु स्केल पर सर्वश्रेष्ठ से अत्याधिक बेकार प्रसार में मूल्यांकन कराया गया ।

फलांकन पद्धति :-

सभी आठ पदों की फलांकन पद्धति एक समान है । प्रत्येक पद के आठ विकल्प हैं । केवल एक विकल्प पर सही का चिन्ह लगाना होता है । प्रत्येक विकल्प के प्राप्तांक इस प्रकार दिये जायेंगे-

विकल्प	प्राप्तांक
1	7
2	4
3	8
4	2
5	9
6	0
7	6
8	3
9	5
10	1

सभी आठ पदों के प्राप्त अंकों के योग के आधार पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का निर्धारण किया जाता है । प्राप्तांकों को मानक अथवा टी-प्राप्तांक में परिवर्तित किया जा सकता है ।

मानक :-

व्यावसायिक आकांक्षा स्तर मापनी के मानक का निर्धारण हायरसेकेन्ड्री के **1375** विधार्थयों पर किया गया जो कि विभिन्न सेक्स, आयु, ग्रेड, सांस्कृतिक समूह से सम्बन्धित थे।

प्रदत्त संकलन :-

प्रस्तावित बुन्देल खण्ड के जनपद जालौन जनसंख्या में से विद्यार्थियों का चयन किया गया । विभिन्न इण्टरमीडिएट कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के संपर्क हेतु पहले कालेज के प्रधानाचार्य से अलग-अलग मिला गया । अनुसंधान के उद्देश्य को बताते हुए उनसे सहयोग

की अपेक्षा की गयी । चयनिक निर्धारित संख्या के विद्यार्थियों पर विभिन्न परीक्षणों का प्रशासित किया गया । उपयुक्त निर्देशों का पालन कराते हुए परीक्षण प्रपत्रों को फलांकन किया गया।

सांख्यकी पद्धति :-

प्रस्तुत अनुसंधान के विभिन्न उद्देश्य के अनुरूप सांख्यकीय पद्धतियों को प्रपयुक्त किया गया। मध्यमान, प्रमाणित विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से 'टी' परीक्षण की गणना की गयी । विभिन्न स्वतंत्र परिवर्तियों के प्रभाव का अध्ययन करने तथा विभिन्न परिकल्पनाओ की जांच हेतु 'प्रसरण विश्लेषण' की प्रमुख रूप से गणना की गयी ।

References

1. Garret, H.E.(1962) statistics in Psychology and Education, Indian Edition Bombay, Aelivedpacific private, Ltd,

2. Grewal, J. S. (1971) Educational choces and Vocational preference of secondary school student in relation To environmental process Vanables, Un-published, Phd. Thesis, Vikram university.

3. Grewal , J. S. (1973) Occupational prestige: Acomparation Study , Indian Journal of Applied psychology.

4. Grewal, J.S. (1975)manul for Occupational Aiparation scale, National Psychological corporation, 4/230, Kachehri Ghta, Agra

5. Kulchreshtha, S.P. (1972) manul for Socio-economic Status Scale from and

6. Saraswat, R.K. manual for self concept question naire, NCERT, New Delhi.

7. Sharma, V.P. and Anuradha Gupta (1987)manual for educational Aspiration Scale form(V), National Psychological Corporation, 4/230, Kacheheri Ghat, Agra

8. Sherry, G.P. and R.P. Verma, Manual for Personal Values question naire, National Psychological Corporation, 4/230, Kacheheri Ghat, Agra

चतुर्थ अध्याय

प्रदत्त विश्लेषण तथा विवेचन

प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्यों के आधार पर प्रदत्तों का विश्लेषण तथा उनका विवेचन निम्नलिखित पाँच भागों में प्रस्तुत किया गया -

भाग एक -अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ मेंप्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन ।

भाग दो - अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के विभिन्न प्रकार के मूल्यों का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव के अन्तर्गत प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन।

भाग तीन -अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव के रूप में प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन ।

भाग चार -अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन।

भाग पाँच -अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर केप्रभाव से सम्बन्धित प्रद्त्तों का विश्लेषण तथा विवेचन ।

प्रस्तुत अनुसंधान के विभिन्न उद्देश्यों के आधार पर प्रथम अध्याय में विभिन्न शून्य उपकल्पनायें निर्मित की गई हैं । इन परीक्षण योग्य शून्य उपकल्पनाओं का परीक्षण भी उपर्युक्तपांच भागों के अन्तर्गत किया जायेगा, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि कौन-सी शून्य उपकल्पनायें स्वीकृत हैं तथा कौन-सी अस्वीकृत ।

भाग-एक

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ में प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन-

अनुसूचित जाति के 300 विद्यार्थियों तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के 300 विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया गया । दोनों समूहों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से 'टी' परीक्षण की सांख्यिकीय गणना की गई -

सारणी 1 - अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं 'टी' मूल्य :-

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
अनुसूचित जाति	300	183.38	18.38	.25
सवर्ण जाति	300	183.43	15.13	.05 स्तर पर सार्थक नहीं

उपर्युक्त सारणी-1 देखने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के आत्म-प्रत्यय मध्यमान 183.38 तथा सवर्ण जाति के आत्म-प्रत्यय मध्यमान 183.43 के मध्य अल्प-मात्रा में अन्तर विद्यमान है । सवर्ण जाति के विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है । दोनों समूहों के प्रमाणिक विचलन यह स्पष्ट करते हैं कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों में अधिक विचलनशीलता प्रदर्शित होती है ।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय परिणामों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से 'टी' मूल्य की गणना की गई । सारणी - 1 देखने से स्पष्ट होता है कि 'टी' मूल्य .25 मात्र प्राप्त हुआ जो कि 598 स्वतन्त्रता के अंश (डी०एफ०) के आधार पर

.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। .05 स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिए आवश्यक मान 1.97 होना चाहिए जबकि प्राप्त 'टी' मूल्य का मान इस आवश्यक मान से काफी कम .25 प्राप्त हुआ है।

इस प्रकार प्राप्त परिणामों से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों के परिणाम समान हैं।

अतः प्रथम शून्य उपकल्पना "अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" सत्य सिद्ध होती है। जाति-गत प्रभाव विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय की विभिन्न विमाओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया। सर्वप्रथम शारीरिक आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया गया -

सारणी - 2 अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
अनुसूचित जाति	300	30.80	4.50	2.58
सवर्ण जाति	300	29.82	4.80	.05 स्तर पर सार्थक

सारणी -2 के परिणामों से स्पष्ट होता है, कि अनुसूचित जाति के छात्रों का मध्यमान 30.80 है जबकि सवर्ण जाति के छात्रों का मध्यमान 29.82 प्राप्त हुआ है। स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के छात्र सवर्ण जाति के छात्रों की अपेक्षा अधिक शारीरिक आत्म-प्रत्यय रखते हैं, अर्थात स्वयं अपने शरीर, स्वास्थ्य, शक्ति एवं शारीरिक सौष्ठव के सम्बन्ध में अधिक सकारात्मक विचार रखते हैं।

दोनों समूहों के छात्रों के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से 'टी' मूल्य की गणना की गई जो कि 2.58 प्राप्त हुई। 598 स्वतन्त्रता के अंश के आधार पर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिए आवश्यक मान 1.97 अपेक्षित है। प्राप्त 'टी' मूल्य 2.58 का मान

आवश्यक मान से अधिक है, अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय के मध्य .05 स्तर पर सार्थक अन्तर है।

इसी प्रकार शून्य उपकल्पना (1.1) 'अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' यहाँ असत्य सिद्ध होती है। जाति विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

सारणी -3 अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
अनुसूचित जाति	300	29.08	5.12	3.18
सवर्ण जाति	300	30.37	4.82	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर

सारणी-3 प्रदर्शित करती है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 29.08 है, जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 30.37 है। स्पष्ट है कि सामाजिक आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के छात्रों की अपेक्षा सवर्ण जाति के छात्रों में अधिक पाया जाता है। सवर्ण जाति के विद्यार्थियों सामाजिक अन्तःक्रियायें अधिक करते हैं जिससे उन्हें आत्म-सन्तोष होता है।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच हेतु 'टी' मूल्य की गणना की गई। सारणी -3 से स्पष्ट है कि दोनों समूहों के मध्य 3.18 'टी' मूल्य प्राप्त हुआ। प्राप्त 'टी' मूल्य .01 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। स्वतंत्रता के अंश 598 के आधार पर .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान 2.59 होना चाहिए जबकि प्राप्त 'टी' मूल्य का मान इससे अधिक 3.18 प्राप्त हुआ है।

साथ ही अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 1.2 'अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।' यहाँ असत्य सिद्ध होती है । जाति का प्रभाव दोनों समूहों के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करता है ।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के मध्य स्वभावगत आत्म-प्रत्यय का भी तुलनात्मक अध्ययन किया गया -

सारणी -4 अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
अनुसूचित जाति	300	32.27	4.45	2.47
सवर्ण जाति	300	31.34	4.76	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

सरणी -4 से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 32.27 प्राप्त हुआ है जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 31.34 प्राप्त हुआ है। स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी अपनी संवेगात्मक स्थिति तथा स्वभाव के प्रति अपने अधिक उन्नत विचार रखते हैं अपेक्षाकृत सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की तुलना में ।

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय के मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के उद्देश्य से 'टी' मूल्य की गणना की गयी । 'टी' मूल्य 2.47 प्राप्त हुआ जो कि .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है। इस प्रकार अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 1.3 अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है । ' असत्य सिद्ध होती है । जातिगत प्रभाव दोनों समूहों के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ में शैक्षिक आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए-

सारणी -5 अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के छात्रों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	'टी' मूल्य
अनुसूचित जाति	300	32.84	4.84	2.89
सवर्ण जाति	300	31.71	4.72	.01 स्तर पर सार्थक

सारणी -5 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 32.84 है, जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 31.71 है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थी स्कूल, अध्यापक तथा पाठ्येत्तर क्रियाओं के प्रति अधिक सकारात्मक विचार रखते हैं, अपेक्षाकृत सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के। अर्थात् अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय अधिक है और वे शिक्षा को अधिक आदर-भाव से आत्मसात करते हैं।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से 'टी' मूल्य की गणना की गई, जो कि 2.89 प्राप्त हुआ। प्राप्त 'टी' मूल्य का मान .01 स्तर पर सार्थक हैं। इस प्रकार दोनों समूहों में शैक्षिक आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ मे सार्थक अन्तर है।

प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 1.4 'अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति (सवर्ण) के विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' यहाँ असत्य सिद्ध होती है। प्राप्त परिणाम दोनों समूहों में शैक्षिक-आत्म-प्रत्यय के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर की पुष्टि करते हैं।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 6 अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के छात्रों का नैतिक आत्म-प्रत्यय

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
अनुसूचित जाति	300	30.41	5.26	.26
सवर्ण जाति	300	30.52	4.93	.05 स्तर पर सार्थक नहीं

सारणी 6 प्रदर्शित करती है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान 30.52 अनुसूचित जाति के छात्रों के मध्यमान 30.41 से अधिक है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करने के उद्देश्य से 'टी' मूल्य की गणना की गयी। मात्र .26 'टी' मूल्य प्राप्त हुआ, जो कि .05 स्तर पर सार्थक अन्तर प्रकट नहीं करता है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों जाति के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों समूहों का नैतिक आत्म-प्रत्यय समान है।

शून्य उपकल्पना 1.5 'अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति (सवर्ण) के छात्रों के नैतिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' सत्य सिद्ध होती है। दोनों समूह के विद्यार्थी नैतिक-मूल्य, सही व गलत क्रियाओं का अनुमान समान रूप से करते हैं।

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसके परिणाम सारणी - 7 में दिये जा रहे हैं--

सारणी -7 अनुसूचित व सवर्ण जाति के छात्रों को बौद्धिक-आत्म-प्रत्यय

जाति	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
अनुसूचित जाति	300	28.83	4.95	2.42
सवर्ण जाति	300	29.82	5.06	.05 स्तर पर सार्थक अन्तर

सारणी -7 से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी बौद्धिक आत्म-प्रत्यय में 28.83 मध्यमान .जबकि इससे अधिक सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 29.82 प्राप्त हुआ। बौद्धिक आत्म-प्रत्यय जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी की अपनी बुद्धि तथा समस्या - समाधान व निर्णय के प्रति जागरूकता सवर्ण जाति के छात्रों में अधिक पाई जांती है।

दोनों जाति के समूहों की बौद्धिक आत्म-प्रत्यय मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर की जाँच के उद्देश्य से 'टी' मूल्य की. गणना की गयी·। 'टी' मूल्य 2.42 प्राप्त हुआ, जो कि अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के मध्य बौद्धिक आत्म-प्रत्यय में .05 स्तर पर सार्थक अन्तर को स्पष्ट करता है।

शून्य उपकल्पना 1.6 'अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।' यहाँ असत्य सिद्ध होती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों. के शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय के मध्य सार्थक अन्तर है। विद्यार्थियों का जातिगत प्रभाव उनके आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है। नैतिक आत्म-प्रत्यय में किसी प्रकार का सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ। नैतिक आत्म-प्रत्यय पर दोनों जाति के विद्यार्थियों के विचार समान प्राप्त हुए। इसी प्रकार यदि आत्म-प्रत्यय की सभी विमाओं में प्राप्त अंकों का योग किया जाये तब कुल योग के आधार पर दोनों समूहों के मध्य कोई सोर्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ है। दोनों समूह कुल. आत्म-प्रत्यय के आधार पर समान हैं।

<u>भाग दो-</u> अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के विभिन्न प्रकार के मूल्यों का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव के अन्तर्गत प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के दस विभिन्न प्रकार के मूल्यों का मापन किया गया। प्राप्त मूल्यों के प्राप्तांकों के आधार पर सभी मूल्यों के चतुर्थांक एक (Q1) तथा चतुर्थांक तीन (Q3) का निर्धारण किया गया, ताकि निम्न मूल्य तथा उच्च मूल्य के विद्यार्थियों को वर्गीकृत किया जा सके।

चतुर्थांक एक (Q1) तथा उससे कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को निम्न मूल्य से सम्बन्धित माना गया । जबकि चतुर्थांक तीन (Q3) के बराबर अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उच्च मूल्य से सम्बद्ध माना गया । इसप्रकार प्रत्येक दस मूल्यों के प्राप्त अंकों को आवृत्ति वितरण के द्वारा चतुर्थांक एक (Q1) तथा चतुर्थातंक तीन (Q3) की गणना की गयी जो कि इस प्रकार ज्ञात हुई —

सारणी - 8 विभिन्न मूल्यों के चतुर्थांक एक (Q1) तथा चतुर्थांक तीन (Q3) का निर्धारण

विभिन्य मूल्य	चतुर्थांक एक (Q1)	चतुर्थांक तीन (Q3)
क -धार्मिक मूल्य	9	15
ख -सामाजिक मूल्य	11	17
ग -जनतन्त्रात्मक मूल्य	11	17
घ -सौन्दर्यात्मक मूल्य	8	13
च - आर्थिक मूल्य	8	13
छ - ज्ञान मूल्य	8	13
ज -सुखवादी मूल्य	8	13
झ - शक्ति मूल्य	7	13
ट - परिवार - प्रतिष्ठा मूल्य	10	15
ठ -स्वास्थ्य मूल्य	7	14

(क) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्ययों का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन--

धार्मिक मूल्य से प्रभावित व्यक्तियों की प्रमुख विशेषतायें होती हैं - ईश्वर में विश्वास, ईश्वर ज्ञान प्राप्ति, धार्मिक पुस्तकों में उपलब्ध नैतिक नियमों के अनुरूप व्यवहार करना तथा ईश्वर-शक्ति से भयभीत रहना आदि । अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों को दो वर्गों में विभाजित किया गया । प्रथम वर्ग में चतुर्थांक एक (Q1) के मान 9 के आधार पर 9 अंक प्राप्त करने वाले अथवा उससे कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को निम्न धार्मिक मूल्य

वांले वर्ग में रखा गया । इसी प्रकार चतुर्थांक तीन (Q3) के मान 15 के आधार पर 15 अंक अथवा उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को उच्च धार्मिक मूल्य वर्ग मं रखा गया। इस प्रकार प्राप्त परिणामों की 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई ।

सारणी - 9 सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रो के आत्म-प्रत्यय का मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

जाति मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च धार्मिक मूल्य	छात्रों की संख्या	79	91	170
	मध्यमान	182.71	184.86	183.86
	प्रामाणिक विचलन	14.45	16.70	15.73
निम्न धार्मिक मूल्य	छात्रों की संख्या	75	67	142
	मध्यमान	183.60	180.31	182.05
	प्रामाणिक विचलन	16.03	17.05	16.60
योग	छात्रों की संख्या	154	158	312
	मध्यमाह	183.14	182.93	183.03
	प्रामाणिक विचलन	15.25	16.99	16.16

सारणी-9 देखने से स्पष्ट होता है कि उच्च धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 183.86) अधिक है जबकि निम्न धार्मिक मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 182.05) कम है । उच्च धार्मिक मूल्य के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अधिक (मध्यमान 184.86) है, जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय कम (मध्यमान 182.71) है । इसके विपरीत निम्न धार्मिक मूल्य के सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अधिक (मध्यमान 183.60) है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 180.31) कम पाया गया । कुल 312 विद्यार्थियों में से सवर्ण जाति के 154 विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अधिक (मध्यमान 183.14) पाया गया अपेक्षाकृत 158 अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के (मध्यमान 182.93) जिनका आत्म-प्रत्यय कम पाया गया । इस प्रकार स्पष्ट है कि धार्मिक मूल्य तथा जाति विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करते हैं।

धार्मिक मूल्य तथा जाति के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकलप) की गणना की गयी, जिसमें निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए--

सारणी - 10 आत्म-प्रत्यय पर धार्मिक मूल्य तथा जाति का प्रभाव 2x2 कारकीय अभिकल्प का सारांश

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
अ-(धार्मिक मूल्य)	258.28	1	258.28	1.02	> .05
ब - (जाति)	24.89	1	24.89	.098	>.05
अX ब	571.12	1	571.12	2.26	> .05
समूहान्तर्गत	77886.96	308	252.88		

★05 3.875

. 01 6.73

सारणी 10 से स्पष्ट होता है कि आत्म-प्रत्यय पर उच्च धार्मिक मूल्य तथा निम्न-धार्मिक मूल्य सार्थक रूप से कोई प्रभाव नहीं डालते हैं । इसी प्रकार सवर्ण जाति तथा अनुसूचित जाति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । धार्मिक मूल्य तथा जाति दोनों का अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । सार्थक प्रभाव .05स्तर पर होने के लिए प्राप्त आवश्यक मान 3.875 होना चाहिए जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इससे कम प्राप्त हुआ है अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर उनके धार्मिक मूल्य तथा जाति का कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है । अतः यहाँ शून्य उपकल्पना 2.1 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर धार्मिक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' सत्य सिद्ध होती है ।

(ख) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक मूल्य के प्रभाव का अध्ययन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों को चतुर्थांक एक के मान (11 तथा उससे कम प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक तीन के मान (17 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च सामाजिकमूल्य तथा दूसरा निम्न सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त परिणामों की 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई ।

सारणी -11उच्च तथा निम्न सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रो का आत्म-प्रत्यय मध्यमान, प्रामाणिक विचलन

सामाजिक मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सामाजिक मूल्य	छात्रों की संख्या	88	111	199
	मध्यमान	183.07	182.35	182.67
	प्रामाणिक विचलन	14.98	18.45	17.01
निम्न सामाजिक मूल्य	छात्रों की संख्या	81	66	147
	मध्यमान	184.81	180.00	182.65
	प्रामाणिक विचलन	14.65	19.71	17.27
योग	छात्रों की संख्या	169	177	346
	मध्यमान	183.90	181.47	182.66
	प्रामाणिक विचलन	14.85	18.96	17.12

सारणी- 11 स्पष्ट करती है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थी जो कि उच्च सामाजिक मूल्य के हों अथवा निम्न सामाजिक मूल्य के उनका आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक उच्च है । साथ ही उच्च सामाजिक मूल्य तथा निम्न सामाजिक मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय लगभग समान है । सवर्ण जाति तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के प्रामाणिक विचलनकी तुलना की जाये तो स्पष्ट होता है कि सवर्ण जाति की अपेक्षा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में अधिक विचरणशीलता है ।

सामाजिक मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण किया गया, जो इस प्रकार प्राप्त हुआ —

सारणी -12 प्रसारण - विश्लेषण (2X2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म - प्रत्यय पर सामाजिक मूल्य एवं जाति का प्रभाव -

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
अ-(सामाजिक मूल्य)	8.07	1	8.07	.03	> .05
ब - (जाति)	641.39	1	641.39	2.18	>.05
अX ब	349.99	1	349.99	1.19	> .05
समूहान्तर्गत	100555.10	342	294.02	*. 05	3.875

सारणी -12 से स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न सामाजिक मूल्य का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी कोई प्रभाव विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । साथ ही सामाजिक मूल्य तथा जाति का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक होना आवश्यक है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात के मान इससे कम प्राप्त हुए हैं, अतः प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत निर्मित शून्य उपकल्पना 2.2 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहाँ सत्य सिद्ध होती है।

(ग) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर जनतंत्रात्मक मूल्य के प्रभाव का अध्ययन --

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन के मान (17तथा उससे अधिक प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक एक के मान (11 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च जनतंत्रात्मक मूल्य तथा द्वितीय निम्न जनतंत्रात्मक मूल्य से सम्बद्ध किया गया।

इस प्रकार प्राप्त आकड़ों की 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी -

सारणी -13 उच्च तथा निम्न जनतंत्रात्मक मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन

जनतन्त्रात्मक मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च जनतन्त्रात्मक मूल्य	छात्रों की संख्या	83	90	173
	मध्यमान	184.78	183.73	184.23
	प्रमाणिक विचलन	16.85	18.52	17.75
निम्न जनतन्त्रात्मक मूल्य	छात्रों की संख्या	65	73	138
	मध्यमान	186.15	184.88	185.48
	प्रमाणिक विचलन	14.14	20.98	18.09
योग	छात्रो की संख्यां	148	163	311
	मध्यमान	185.38	184.24	184.79
	प्रमाणिक विचलन	15.73	19.67	17-91

सारणी-13 से स्पष्ट है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अधिक है जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय कम है । साथ ही प्रामाणिक विचलनों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों के में अधिक विचरण शीलता विद्यमान है । उच्च जनतंत्रात्मक मूल्य के विद्यार्थियों की अपेक्षा (मध्यमान 184.23) निम्न जनतंत्रात्मक मूल्य के विद्यार्थियों (मध्यमान 185.48) का आत्म-प्रत्यय दृष्टिगत होता है ।

जनतंत्रात्मक मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी, जो कि इस प्रकार प्राप्त हुई -

सारणी -14 प्रसारण - विश्लेषण (2X2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश

आत्म - प्रत्यय पर जनतंत्रान्तमक मूल्य एवं जाति का प्रभाव -

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमानं वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
अ-(जनतन्त्रात्मक मूल्य)	122.34	1	122.34	.38	> .05
ब - (जाति)	103.73	1	103.73	..32	>.05
अX ब	.77	1	.77	-	-
समूहान्तर्गत	99552.04	307	324.27	*. 05	. 3.875

सारणी-14 प्रदर्शित करती है कि उच्च तथा निम्न जनतंत्रात्मक मूल्य का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । साथ ही सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । जनतंत्रात्मक मूल्य तथा जाति का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से नहीं पड़ता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक होना आवश्यक है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात के मान इससे काफी कम प्राप्त हुए हैं । इससे स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना 2.3 'अनुसूचित जाति तथा सवर्णि जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर जनतंत्रात्मक मूल्य का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । जनतंत्रात्मक मूल्य तथा जाति का अन्त क्रियात्मक मूल्य तथा जाति का अन्तक्रियात्मक प्रभाव भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से नहीं पड़ता है , .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक होना आवश्यक है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात के मान इससे काफी कम प्राप्त हुए हैं । इससे स्पष्टहै कि शून्य उपकल्पना 2.3 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर जनतंत्रात्मक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' सत्य सिद्ध होती है।

(घ) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सौन्दर्यात्मक मूल्य के प्रभाव का अध्ययन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों को तथा तीन के मान (१३ तथा उससे अधिक प्राप्तांक) चतुर्थांक एक के मान (8 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में

वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा द्वितीय निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य से सम्बद्ध किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त आकड़ों का 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी

सारणी -15 उच्च तथा निम्न सौन्दर्यत्मक मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

सौन्दर्यात्मक मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य	छात्रों की संख्या	79	94	173
	मध्यमान	187.92	182.67	185.07
	प्रामाणिक विचलन	15.87	19.63	18.20
निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य	छात्रों की संख्या	88	56	144
	मध्यमान	182.68	182.55	182.63
	प्रामाणिक विचलन	15.06	15.65	15.29
योग	छात्रों की संख्यां	167	150	317
	मध्यमान	185.16	182.63	183.96
	प्रामाणिक विचलन	15.67	18.25	16.99

उपर्युक्त सारणी स्पष्ट करती है कि उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अधिक उच्च स्तर पर (मध्यमान185.07) का है जबकि निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के छात्रों का आत्म-प्रत्यय अपेक्षाकृत निम्न स्तर (मध्यमान 182.63) का है। सवर्ण जाति के उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 187.92) अधिक है, अपेक्षाकृत सवर्ण जाति के ही निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के विद्यार्थियों (मध्यमान 182.68) के आत्म-प्रत्यय की तुलना में। इसके विपरीत अनुसूचित जाति के उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य के (मध्यमान 182.67) विद्यार्थियों

तथा अनुसूचित जाति के निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य के (मध्यमान 182.55) विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय प्राप्तांक लगभग समान हैं । इससे स्पष्ट होता है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय उनके सौन्दर्यात्मक मूल्य से प्रभावित होते है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों में इस प्रकार का कोई सम्बन्ध दृष्टिगत नहीं होता है ।

सौन्दर्यात्मक मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी जो कि इस प्रकार प्राप्त हुई -

सारणी - 16- प्रसरण - विसलेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम साराश
आत्म-प्रत्यय पर सौन्दर्यत्मक मूल्य एवं जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(सौन्दर्यत्मक मूल्य)	548.19	1	548.19	1.91	> .05
ब - (जाति)	551.86	1	551.86	1.92	>.05
अX ब	500.74	1	500.74	1.75	>.05
समूहान्तर्गत	89787.25	313	286.86	*. 05	. 3.875

सारणी -16 स्पष्ट करती है कि उच्च तथा निम्न सौन्दर्यात्मक मूल्य का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसके साथ ही सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । सौन्दर्यात्मक मूल्य तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक होना आवश्यक है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इससे कम प्राप्त हुआ है । अतः प्राप्त परिणामों के आधार पर शून्य उपकल्पना 2.4 'अनुसूचित

जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सौन्दर्यात्मक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा । ' सत्य सिद्ध होती है ।

(च) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर आर्थिक मूल्य के प्रभाव का अध्ययन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन के मान (13 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक एक के मान (8 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च आर्थिक मूल्य तथा द्वितीय निम्न आर्थिक मूल्य से सम्बन्धित किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त आकड़ों का 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों को आत्म-प्रत्यय के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी -

सारणी - 17

उच्च तथा निम्न आर्थिक मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

आर्थिक मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च आर्थिक मूल्य	छात्रों की संख्या	74	108	182
	मध्यमान	183.26	183.69	183.51
	प्रामाणिक विचलन	14.17	17.39	16.16
निम्न आर्थिक मूल्य	छात्रों की संख्या	86	43	129
	मध्यमान	185.14	181.21	183.83
	प्रामाणिक विचलन	16.56	19.69	17.76
योग	छात्रो की संख्यां	160	151	311
	मध्यमान	184.27	182.98	183.64
	प्रामाणिक विचलन	15.53	18.11	16.84

सारणी -17 से स्पष्ट है कि सवर्ण जाति के उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय निम्न (मध्यमान 183.26) मात्रा में है, जबकि सवर्ण जाति के ही निम्न आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अपेक्षाकृत (मध्यमान 185.14) अधिक उच्च है। इससे स्पष्ट होता है कि अर्थ (धन) को अधिक महत्व देने वाले विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय निम्न स्तर का होता है। इस परिणाम के विपरीत अनुसूचित जाति के उच्च आर्थिक मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर का है अपेक्षाकृत निम्न आर्थिक मूल्य के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में। सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अधिक उच्च स्तर (मध्यमान 184.27) का है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 182.98) सापेक्षिक रूप से निम्न स्तर का है। इससे स्पष्ट होता है कि जाति , आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करती है।

आर्थिक मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी जो कि इस प्रकार ज्ञात हुई-

सारणी -18 प्रसरण - विसलेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर आर्थिक मूल्य एवं जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(आर्थिक मूल्य)	6.43	1	6.43	.02	> .05
ब - (जाति)	213.20	1	213.20	.75	>.05
अX ब	330.23	1	330.23	1.16	>.05
समूहांन्तर्गत	87668.86	307	285.57	*. 05	. 3.875

सारणी -18 स्पष्ट करती है कि उच्च तथा निम्न आर्थिक मूल्य का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। इसके साथ ही सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। आर्थिक मूल्य तथा जाति का संयुक्त प्रभाव

भी सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक होना आवश्यक है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात के मान इससे काफी कम प्राप्त हुए हैं । इससे स्पष्ट है कि सून्य उपकल्पना 2.5 ' अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर आर्थिक मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' सत्य सिद्ध होती है ।

(छ) ज्ञान मूल्य तथा सवर्ण जाति व अनुसूचित जाति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों को चतुर्थांक तीन के मान (13 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक एक के मान (8 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम्न उच्च ज्ञान मूल्य तथा द्वितीय निम्न ज्ञान मूल्य से सम्बद्ध किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त आकड़ों का 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई–

सारणी - 19 उच्च तथा निम्न ज्ञान मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

ज्ञान मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च ज्ञान मूल्य	छात्रों की संख्या	208	204	412
	मध्यमान	182.91	184.24	183.57
	प्रामाणिक विचलन	15.16	18.53	16.92
निम्न ज्ञान मूल्य	छात्रों की संख्या	21	25	46
	मध्यमान	182.71	187.24	185.17
	प्रामाणिक विचलन	12.22	16.24	14.72
योग	छात्रों की संख्या	229	229	458
	मध्यमान	182.89	184.56	183.72
	प्रामाणिक विचलन	14.91	18.32	16.72

सारणी - 19 प्रदर्शित करती है कि निम्न ज्ञान मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 185.17) अधिक उच्च स्तर का है अपेक्षाकृत उन विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों के (मध्यमान 183.57) जो कि उच्च ज्ञान मूल्य से सम्बन्धित हैं। सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 182.89) निम्न स्तर का है, अपेक्षाकृत अनुसूचित जाति के जिनका आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 184.56) अधिक उच्च स्तर का है। सर्वाधिक आत्म-प्रत्यय उन विद्यार्थियों का प्राप्त हुआ जो कि निम्न ज्ञान मूल्य के अनुसूचित जाति के हैं (मध्यमान 187.24)। इस प्रकार स्पष्ट है कि ज्ञान मूल्य तथा अनुसूचित व सवर्ण जाति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव पड़ता है।

ज्ञान मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जो कि इस प्रकार प्राप्त हुई -

सारणी - 20 प्रसरण - विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर ज्ञान मूल्य एवं जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(ज्ञान मूल्य)	80.55	1	80.55	.29	> .05
ब - (जाति)	353.05	1	353.05	1.25	>.05
अX ब	105.11	1	105.11	.37	>.05
समूहान्तर्गत	127618.33	454	281.09	*. 05	. 3.86

सारणी-20 से स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न ज्ञान मूल्य का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसके साथ ही सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । ज्ञान मूल्य तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.86 अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात के तीनों मान इससे काफी कम प्राप्त हुए हैं । इससे स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना 2.6 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर ज्ञान मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा ।' सत्य सिद्ध होती है ।

(ज) सुखवादी मूल्य तथा सवर्ण जाति व अनुसूचित जाति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों को चतुर्थांक तीन के मान (13 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक एक के मान (8 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च सुखवादी मूल्य तथा द्वितीय निम्न सुखवादी मूल्य से सम्बन्धित किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त आकड़ों का 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्यमान,प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी

सारणी - 21 उच्च तथा निम्न सुखवादी मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

सुखवादी मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सुखवादी मूल्य	छात्रों की संख्या	74	90	164
	मध्यमान	184.73	183.27	183.93
	प्रामाणिक विचलन	14.05	19.41	17.21
निम्न सुखवादी मूल्य	छात्रों की संख्या	91	73	164
	मध्यमान	183.41	183.26	183.34
	प्रामाणिक विचलन	15.59	18.02	16.71
योग	छात्रों की संख्या	165	163	328
	मध्यमान	184.00	183.26	183.63
	प्रामाणिक विचलन	14.93	18.80	16.97

सारणी -21 का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि उच्च सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 183.93) अधिक उच्च है, जबकि निम्न सुखवादी मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 183.34) तुलनात्मक रूप से कम है । इसी प्रकार सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 184) अधिक उच्च स्तर का है, अपेक्षाकृत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 183.26) की तुनला में । इससे स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न सुखवादी मूल्य से विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय प्रभावित होता है । साथ ही सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय भी उनकी जाति से प्रभावित होता है ।

सुखवादी मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म प्रत्ययपर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी, जो कि इस प्रकार प्राप्त हुई -

सारणी - 22 **प्रसरण - विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम साराशं आत्म-प्रत्यय पर सुखवादी मूल्य एवं जाति का प्रभाव**

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(सुखवादी मूल्य)	35.69	1	35.69	.12	> .05
ब - (जाति)	52.73	1	52.73	.18	>.05
अX ब	35.01	1	35.01	.12	>.05
समूहान्तर्गत	94346.2	324	291.19	*. 05	. 3.875

सारणी–22 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च तथा निम्न सुखवादी मूल्य का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार सुखवादी मूल्य तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है। .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है जबकि प्राप्त एफ अनुपात के तीनों मान इससे काफी कम प्राप्त हुए हैं । इससे स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना 2.7 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सुखवादी मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' सत्य सिद्ध होती है ।

(झ) विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शक्ति मूल्य तथा सवर्ण व अनुसूचित जाति के प्रभाव का अध्ययन --

सर्वप्रथम सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन के मान (13 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक एक के मान (7 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च शक्ति मूल्य तथा द्वितीय निम्नशक्ति मूल्य से सम्बन्धित किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों का 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी

सारणी 23 उच्च तथा निम्न शक्ति मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

शक्ति मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च शक्ति मूल्य	छात्रों की संख्या	67	84	151
	मध्यमान	181.49	185.20	183.57
	प्रामाणिक विचलन	14.51	18.58	16.99
निम्न शक्ति मूल्य	छात्रों की संख्या	79	52	131
	मध्यमान	182.82	180.37	181.85
	प्रामाणिक विचलन	16.49	16.94	16.71
योग	छात्रों की संख्या	146	136	282
	मध्यमान	182.21	183.35	182.76
	प्रामाणिक विचलन	15.63	18.12	16.88

सारणी -23 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च शक्ति मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 183.57) अधिक उच्च है, अपेक्षाकृत उन विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के जिनका सम्बन्ध निम्न शक्ति मूल्य (मध्यमान 181.85) से सम्बन्धित हैं । अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों का यदि निरीक्षण किया जाये तो स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक आत्म-प्रत्यय उच्च शक्ति मूल्य से सम्बन्धित अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का है, जबकि सर्वाधिक निम्न आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के ही निम्न शक्ति मूल्य से सम्बन्धित (मध्यमान 180.37) विद्यार्थियों का है । इसके विपरीत सवर्ण जाति के उच्च शक्ति मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय कम है, अपेक्षाकृत निम्नशक्ति मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण (मध्यमान 182.82) जाति के विद्यार्थियों से । सारणी 23 का निरीक्षण कर यह भी स्पष्ट होता है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 182.21) प्राप्तांकों की तुलना में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 183.35) अधिक उच्च स्तर का है ।

शक्ति मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई, जो कि इस प्रकार प्राप्त हुई -

सारणी -24 प्रसरण - विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर शक्ति मूल्य एवं जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
अ-(शक्ति मूल्य)	208.92	1	208.92	.73	> .05
ब - (जाति)	27.29	1	27.29	.09	>.05
अX ब	645.93	1	645.93	2.26	>.05
समूहान्तर्गत	79515.89	278	286.03	*. 05	. 3.875

सारणी -24 से स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न शक्ति मूल्य का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार शक्ति मूल्य तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी सार्थकरूप से .05 स्तर पर आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है, जबकि प्राप्त तीनों एफ अनुपात के मान इससे काफी कम प्राप्त हुए हैं । स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना 2.8 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शक्ति मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।' सत्य सिद्ध होती है ।

(ट) विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर परिवार-प्रतिष्ठा मूल्य तथा सवर्ण व अनुसूचित जाति के प्रभाव का अध्ययन -

सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन के मान (15 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक एक के मान (10 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च परिवार-प्रतिष्ठा मूल्य तथा द्वितीय निम्न परिवार-प्रतिष्ठा मूल्य से समबन्धित किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त आँकड़ों का 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई-

सारणी -25 **उच्च तथा निम्न परिवार प्रतिष्ठा मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-**

परिवार प्रतिष्ठा मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च परिवार प्रतिष्ठा मूल्य	छात्रों की संख्या	69	89	158
	मध्यमान	182.41	181.22	181.74
	प्रामाणिक विचलन	15.26	17.49	16.56
निम्न परिवार प्रतिष्ठा मूल्य	छात्रों की संख्या	103	99	202
	मध्यमान	181.04	183.13	182.06
	प्रामाणिक विचलन	14.59	17.39	16.06
योग	छात्रों की संख्या	172	188	360
	मध्यमान	181.59	182.23	181.92
	प्रामाणिक विचलन	14.88	17.46	16.28

सारणी -25 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च परिवार प्रतिष्ठा-मूल्य के छात्रों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 181.74) कम स्तर का है , जबकि निम्न परिवार प्रतिष्ठा मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 182.06) अधिक उच्च स्तर का है। साथ ही सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 181.59) निम्न स्तर का है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 182.23) अधिक उच्च स्तर का है। किन्तु अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों में अधिक विचलनशीलता दृष्टिगत होता है।

परिवार-प्रतिष्ठा मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जो कि इस प्रकार प्राप्त हुई -

सारणी -26 प्रसरण - विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर प्रतिष्ठा मूल्य एवं जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(परिवार प्रतिष्ठा मूल्य)	6.15	1	6.15	.02	> .05
ब - (जाति)	17.79	1	17.79	.07	>.05
अX ब	236.81	1	236.81	.88	>.05
समूहान्तर्गत	95161.27	356	267.31	*. 05	. 3.875

सारणी -26 से स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न परिवार प्रतिष्ठा मूल्य का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसके साथ ही सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । परिवार प्रतिष्ठा मूल्य तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है जबकि प्राप्त एफ अनुपात के तीनों मान इससे काफी कम प्राप्त हुए हैं । जिससे स्पष्ट है कि शून्य उपकल्पना 2.8 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर परिवार-प्रतिष्ठा मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' सत्य सिद्ध होती है ।

(ठ) विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर स्वास्थ्य मूल्य तथा सवर्ण व अनुसूचित जाति के प्रभाव का अध्ययन करना -

सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को चतुर्थांक तीन के मान (14 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) तथा चतुर्थांक एफ अनुपात के मान (7 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर दो

भागों में वर्गीकृत किया गया । प्रथम उच्च स्वास्थ्य मूल्य तथा द्वितीय निम्न स्वास्थ्य मूल्य से सम्बन्धित किया गया ।

इस प्रकार प्राप्त आंकड़ों का 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी -27 उच्च तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

स्वास्थ्य मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च स्वास्थ्य मूल्य	छात्रों की संख्या	66	74	140
	मध्यमान	184.83	183.31	184.03
	प्रामाणिक विचलन	14.22	19.13	17.01
निम्न स्वास्थ्य मूल्य	छात्रों की संख्या	92	65	157
	मध्यमान	181.95	178.48	180.51
	प्रामाणिक विचलन	15.70	17.70	17.13
योग	छात्रों की संख्या	158	139	297
	मध्यमान	183.15	181.05	182.17
	प्रामाणिक विचलन	15.17	18.63	16.91

सारणी -27 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि उच्च स्वास्थ्य मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 184.03) अधिक उच्च स्तर का है, जबकि निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 180.51) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है । इसी प्रकार सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 183.15) अधिक उच्च स्तर का है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 181.05) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है । अनुसूचित जाति के निम्न स्वास्थ्य मूल्य के विद्यार्थियों का

आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **178.48**) सर्वाधिक निम्न स्तर का है। विवेचन से स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य और जाति का प्रभाव आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है।

स्वास्थ्य मूल्य (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) के प्रभाव का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जो कि इस प्रकार प्राप्त हुई -

सारणी -28 प्रसरण - विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर स्वास्थ्य मूल्य एवं जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(स्वास्थ्य मूल्य)	1082.86	1	1082.86	5.09	> .05
ब - (जाति)	453.64	1	453.64	.213	>.05
अX ब	69.06	1	69.06	.32	>.33
समूहान्तर्गत	83467.95	293	212.38	*. 05	. 3.875

सारणी **-28** का अवलोकन करने से स्पष्ट हो रहा है कि उच्च तथा निम्न स्वास्थ्य मूल्य विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** से अधिक एफ अनुपात का मान **5.09** प्राप्त हुआ है, अतः स्वास्थ्य मूल्य सार्थक रूप से आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है। जाति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव **.05** स्तर पर नहीं पड़ता है। इसी प्रकार स्वास्थ्य मूल्य तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **2.10** 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर स्वास्थ्य मूल्य का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।' यहाँ असत्य सिद्ध होती है, क्योंकि स्वास्थ्य मूल्य सार्थक रूप से विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि केवल स्वास्थ्य मूल्य ही विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय का सार्थक रूप से प्रभावित करता है, जबकि अन्य मूल्य जैसे धार्मिक, सामाजिक, जनतंत्रात्मक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, सुखवादी, शक्ति तथा परिवार-प्रतिष्ठा मूल्य विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करते हैं। उच्च धार्मिक मूल्य, उच्च सामाजिक मूल्य, उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य, उच्च सुखवादी मूल्य, उच्च शक्ति मूल्य तथा उच्च स्वास्थ्य मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों का उच्च स्तर का आत्म-प्रत्यय पाया गया, जबकि तुलनात्मक रूप से निम्न जनतंत्रात्मक मूल्य, निम्न आर्थिक मूल्य, निम्न ज्ञान मूल्य तथा निम्न परिवार प्रतिष्ठा मूल्य से सम्बन्धित विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर का पाया गया।

सर्वाधिक आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का पाया गया जो कि निम्न ज्ञान मूल्य (मध्यमान **187.24**) से सम्बन्धित है तथा उच्च सौन्दर्यात्मक मूल्य से सम्बन्धित सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय सर्वाधिक (मध्यमान **187.92**) पाया गया। निम्न जनतंत्रात्मक मूल्य के सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का भी उच्च आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **186.15**) पाया गया। इसी प्रकार उच्च शक्ति मूल्य से सम्बन्धित अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का उच्च आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **185.20**) पाया गया जबकि सवर्ण जाति के निम्न आर्थिक मूल्य से प्रभावित विद्यार्थियों का उच्च आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **185.14**) पाया गया। इस प्रकार उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विभिन्न मूल्य विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करते हैं, किन्तु सार्थक रूप केवल स्वास्थ्य मूल्य ही आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है।

भाग-तीन

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव के रूप में प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का मापन किया गया । सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्राप्तांकों के आधार पर चतुर्थांक तीन **(Q3)** तथा चतुर्थांक एक **(Q1)** का निर्धारण किया गया ताकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों का निश्चय किया जा सके । चतुर्थांक तीन का मान **157** तथा चतुर्थांक एक का मान **88** प्राप्त हुआ । इसी आधार पर अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों को दो वर्गों में विभाजित किया गया । प्रथम वर्ग में चतुर्थांक तीन **(Q3)** के मान (**157**तथा उससे अधिक प्राप्तांक) के आधार पर उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थी रखे गये जबकि द्वितीय वर्ग में चतुर्थांक एक **(Q1)** केमान (**88** तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों का निर्धारण किया गया ।

इस प्रकार अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया गया । साथ ही आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत विभिन्न शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक विमाओं पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन तथा विश्लेषण किया गया ।

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर जाति (अनुसूचित तथा सवर्ण) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का विश्लेषण तथा विवेचन किया। अभिकल्प के आधार पर आत्म-प्रत्यय के मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण विशलेषण की गणना की गयी ।

सारणी 29 उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थित के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

सामाजिक-आर्थिक स्थित	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
सामाजिक-आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	104	41	145
	मध्यमान	183.13	186.22	184
	प्रामाणिक विचलन	14.03	20.78	16.28
सामाजिक-आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	39	106	145
	मध्यमान	182.68	183.53	183.30
	प्रामाणिक विचलन	18.47	20.61	20.06
योग	छात्रों की संख्या	143	147	290
	मध्यमान	183.01	184.28	183.65
	प्रामाणिक विचलन	15.37	20.69	18.27

सारणी -**29** का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय अधिक उच्च स्तर का है, अपेक्षाकृत उन विद्यार्थियों के जिनका आत्म-प्रत्यय (मधायमान **183.30**) निम्न स्तर का है और वे निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित हैं । इसी प्रकार जो विद्यार्थी अनुसूचित जाति से सम्बन्धित हैं, उनका आत्म-प्रत्यय अधिक उच्च स्तर का है (मध्यमान **184.28**), जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **183.01**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है । सर्वाधिक उच्च स्तर का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **186.22**) अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का है जो कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित हैं । इस प्रकार कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है ।

सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा जाति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) की गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी -30 प्रसरण - विश्लेषण (2x2) कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थित तथा जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(सामाजिक आर्थिक स्थित)	141.64	1	141.64	.42	> .05
ब - (जाति)	223.42	1	223.42	.66	>.05
अX ब	73.11	1	73.11	.22	>.05
समूहान्तर्गत	96511.12	286	337.45	*. 05	. 3.875

सारणी -30 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का भी आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव दृष्टिगत नहीं होता है । सामाजिक आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (अनुसूचित तथा सवर्ण) का संयुक्त रूप से आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए एफ अनुपात 3.875 अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है जबकि प्राप्त एफ अनुपात के तीनों मान इससे काफी कम प्राप्त हुए है , जिससे स्पष्ट है कि हमारी प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना (3) 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' सत्य सिद्ध होती है ।

आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत विभिन्न विमाओं जैसे शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिका आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया गया ।

(i) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विशलेषण की गणना की गई ।

सारणी -31 उच्च तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन :-

सामाजिक आर्थिक स्थित	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	104	41	145
	मध्यमान	29.94	32.49	30.66
	प्रामाणिक विचलन	5.14	4.30	5.05
निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	39	106	145
	मध्यमान	28.77	31.08	30.46
	प्रामाणिक विचलन	4.61	4.86	4.90
योग	छात्रों की संख्या	143	147	290
	मध्यमान	29.62	31.48	30.56
	प्रामाणिक विचलन	5.03	4.75	4.97

सारणी -31 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.62) अत्यधिक निम्न स्तर का है। अपेक्षाकृत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 31.48) उच्च स्तर का है इसी प्रकार यदि दोनों जाति के विद्यार्थियों के प्रमाणिक विचलन का अवलोकन करें, तब ज्ञात होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की तुलना में सवर्ण जाति के विद्यार्थियों में अधिक विचरणशीलता विद्यमान है। जो कि विद्यार्थीगण उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित हैं उनका शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 30.66) अधिक उच्च स्तर का है। जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों का (30.46) शारीरिक आत्म-प्रत्यय निम्न स्तर का है। सर्वाधिक उच्च शारीरिक आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों (मध्यमान 32.49) का है जबकि सर्वाधिक निम्न शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 28.77) निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का है।

उक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी शारीरिक आत्म-प्रत्यय अर्थात स्वयं अपने शरीर, सवास्थ्य, शक्ति एवं शारीरिक सौष्ठव के सम्बन्ध में अधिक सकारात्मक विचार रखते हैं तथा शारीरिक रूप से अपने को अधिक शक्तिशाली मानते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गई, जिसंके अन्तर्गत सारणी -32 के परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी -32 प्रसरण - विश्लेषण (2x2) कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थित तथा जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
अ-(सामाजिक आर्थिक स्थिति)	96.15	1	96.15	4.02	> .05
ब -. (जाति)	341.73	1	341.73	14.30	>.01
अX ब	1.158	1	1.158	.05	>.05
समूहान्तर्गत	6835.05	286	23.898	*. 05 *.01	3.875 6.73

सारणी -32 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय को उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है। इसी प्रकार विद्यार्थियों की जाति (अनुसूचित व सवर्ण जाति) भी उनके शारीरिक आत्म-प्रत्यय को .01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है। किन्तु सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का संयुक्त प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से नहीं पड़ता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 3.1 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।' यहाँ गलत सिद्ध होती है अतः शून्य उपकल्पना निरस्त की जाती है।

(ii) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का सामाजिक-आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन-विश्लेषण तथा प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई।

सारणी -33 उच्च तथा निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित के सवर्ण जाति एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का आत्म - प्रत्यय मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन :-

सामाजिक आर्थिक स्थित	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	104	41	145
	मध्यमान	29.98	29.56	29.72
	प्रमाणिक विचलन	4.58	5.63	4.90
निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	39	106	145
	मध्यमान	31.00	29.32	29.77
	प्रमाणिक विचलन	6.33	5.09	5.50
योग	छात्रो की संख्या	143	147	290
	मध्यमान	30.11	29.39	29.74
	प्रमाणिक विचलन	5.14	5.24	5.21

सारणी -33 प्रदर्शित करती है कि कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान30.11) अधिक उच्च स्तर का है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.39) तुलनात्मक रूप से निम्न-स्तर का है । तात्पर्य यह है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थी सामाजिक अन्तः क्रियाओं में अधिक आत्म-सन्तोष रखते हैं । यद्यपि उच्च सामाजिक स्थिति रखने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.72) तुलनात्मक रूप से निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.77) की अपेक्षा निम्न स्तर का है, किन्तु यह अन्तर नगण्य है । सामाजिक आत्म प्रत्यय की दृष्टि से सर्वाधिक उच्च स्तर सवर्ण जाति के निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों का है ।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण जाति तथा अनुसूचित जाति) के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से

प्रसरण-विश्लेषण की गणना **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गई, जिसमें निम्नलिखित परिणाम (सारणी**34**) प्राप्त हुए-

सारणी -34 प्रसरण - विश्लेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थित तथा जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ (सामाजिक आर्थिक स्थित)	13.90	1	13.90	0.51	> .05
ब - (जाति)	52.13	1	52.13	1.91	>.05
अX ब	30.70	1	30.70	1.13	>.05
समूहान्तर्गत	7783.09	286	27.21	*. 05	3.875

सारणी **-34** प्रदर्शित करती है कि विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार विद्यार्थियों की सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी उनके सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। साथ ही सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से दृष्टिगत नहीं होता है । **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** अथवा उससे अधिक मान आवश्यक है, जबकि यहाँ एफ अनुपात के तीनों मान **3.875** से कम प्राप्त हुए हैं अतः स्पष्ट है कि सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **3.2** 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहाँ सत्य सिद्ध होती है तथा शून्य उपकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

(iii) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का स्वभावगत आत्म-प्रत्ययपर प्रभाव का अध्ययन करना -

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्ययपर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गयी -

सारणी - 35 स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

सामाजिक आर्थिक स्थित	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	104	41	145
	मध्यमान	31:67	32.05	31.78
	प्रामाणिक विचलन	4.98	4:04	4.73
निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	39	106	145
	मध्यमान	32.00	32.09	32.16
	प्रामाणिक विचलन	5.14	4.80	4.89
योग	छात्रों की संख्या	143	147	290
	मध्यमान	31.86	32.08	31.97
	प्रामाणिक विचलन	5.02	4.60	4.81

सारणी - **35** प्रदर्शित करती है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय अधिक उच्च स्तर का (मध्यमान **32.08**) है जबकि तुलनात्मक रूप में सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **32.08**) निम्न स्तर का है इसी प्रकार निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **32.16**) अधिक उच्च स्तर का है जबकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **31.78**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर

का है । सवर्ण जाति के विद्यार्थियों तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों में अधिक विचरणशीलता है ।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गई, जिसमें अग्रलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी **-36 स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण**

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(सामाजिक आर्थिक स्थित)	2.32	1	2.32	.10	> .05
ब - (जाति)	3.47	1	3.47	.15	>.05
अX ब	-1.16	1	-1.16	-.05	>.05
समूहान्तर्गत	6718.8	286	23.49	*. 05	3.875

सारणी -36 का अवलोकन करने पर स्पष्ट है कि स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार विद्यार्थियों की सवर्ण तथा अनुसूचित जाति का भी उनके स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । साथ ही सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से दृष्टिगत नहीं होता है । **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** अथवा उससे अधिक मान होना आवश्यक है, जबकि यहाँ एफ अनुपात के तीनों मान **3.875** से कम प्राप्त हुए हैं, अतः स्पष्ट है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **3.3** 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के

स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहाँ सत्य सिद्ध होती है ।

(iv) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करना -

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित)तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी - 37 शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

सामाजिक आर्थिक स्थित	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	104	41	145
	मध्यमान	31.67	33.12	32.07
	प्रामाणिक विचलन	4.69	5.37	4.94
निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	39	106	145
	मध्यमान	31.72	33.00	32.65
	प्रामाणिक विचलन	5.08	4.63	4.79
योग	छात्रो की संख्या	143	147	290
	मध्यमान	31.67	33.03	32.36
	प्रामाणिक विचलन	4.80	4.85	4.87

सारणी - **37** प्रदर्शित करती है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय सर्वाधिक उच्च स्तर का है (मध्यमान **33.03**), जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का तुलनात्मक रूप से शैक्षिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **31.67**) निम्न स्तर का है । निम्न सामाजिक-आर्थिक

स्थिति रखने वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 32.65) अधिक उच्च है, जबकि तुलनात्मक रूप से उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 32.07) निम्न स्तर का है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियो के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय के परिणामों पर सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव दृष्टिगत होता है, किन्तु वह नगण्य है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (सवर्ण तथा अनुसूचितजाति) के विधार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव क अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की **2x2**कारकीय अभिकल्प के आधार पर गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 38 शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण-

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(सामाजिक आर्थिक स्थित)	-	1	-	-	
ब - (जाति)	109.47	1	109.47	4.66	>.05
अX ब	1.16	1	1.16	.05	>.05
समूहान्तर्गत	6719.82	286	23.49	*. 05 *.01	3.875 6.73

सारणी - 38 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। किन्तु अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से **.05** स्तर पर प्रभाव पड़ता है। **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** से अधिक एफ अनुपात का मान **4.66** प्राप्त हुआ है, अतः जाति का प्रभाव शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से पड़ता है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति

तथा जाति का संयुक्त प्रभाव सार्थक रूप से शैक्षिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है । इस प्रकार प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 3.4 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा । ' यहाँ असत्य सिद्ध होती है, क्योंकि छात्रों की जाति सार्थक रूप से शैक्षिक आत्म-प्रत्यय को .05 स्तर पर प्रभावित करती है ।

(v) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का नैतिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2 करकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विशलेषण की गणना की गई -

सारणी -39 नैतिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

सामाजिक आर्थिक स्थित	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	104	41	145
	मध्यमान	29.75	30.98	30.09
	प्रामाणिक विचलन	5.12	5.65	5.30
निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	39	106	145
	मध्यमान	30.67	30.00	30.17
	प्रामाणिक विचलन	4.49	5.44	5.21
योग	छात्रों की संख्या	143	147	290
	मध्यमान	30.00	30.26	30.13
	प्रामाणिक विचलन	4.97	5.52	5.25

सारणी - **39** का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **30.00**) निम्न स्तर का है, जबकि तुलनात्मक रूप से अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **30.26**) अधिक उच्च स्तर का है। इसी प्रकार उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **30.09**) निम्न स्तर का है, जबकि तुलनात्मक रूप से निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **30.17**) उच्च स्तर का है। प्राप्तांकों में सर्वाधिक निम्न विचरणशीलता सवर्ण जाति के विधार्थियों में दृष्टिगत होती है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) और जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेष-ण की **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 40 नैतिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(सामाजिक आर्थिक स्थित)	-	1	-	-	-
ब - (जाति)	4.63	1	4.63	0.17	>.05
अX ब	52.13	1	52.13	1.92	>.05
समूहान्तर्गत	7968.13	286	27.86	*. 05	3.875

सारणी -**40** का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि नैतिक आत्म-प्रत्यय पर समाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का

भी नैतिक आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी सार्थक रूप से नैतिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है। .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान 3.875 अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है, जबकि प्राप्त तीनों ही एफ अनुपात 3.875 मान से कम प्राप्त हुए हैं, अतः कहा जा सकता है कि नैतिक आत्म-प्रत्यय पर छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा उनकी जाति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इस प्रकार प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 3.5 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहाँ सत्य सिद्ध होती है ।

(vi) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी -41 बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का प्रभाव

सामाजिक आर्थिक स्थित	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	104	41	145
	मध्यमान	30.11	28.12	29.54
	प्रामाणिक विचलन	5.15	4.51	5.06
निम्न सामाजिक आर्थिक स्थित	छात्रों की संख्या	39	106	145
	मध्यमान	27.85	29.31	28.92
	प्रामाणिक विचलन	5.43	5.22	5.32
योग	छात्रो की संख्यां	143	147	290
	मध्यमान	29.49	28.98	29.23
	प्रामाणिक विचलन	5.32	5.06	5.20

सारणी-41 प्रदर्शित करती है कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय अधिक उच्च (मध्यमान **29.54**) स्तर का है, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय तुलनात्मक रूप में (मध्यमान **28.92**) निम्न स्तर का है । इसी प्रकार सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **29.49**)अधिक उच्च स्तर का है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **28.98**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है । स्पष्ट है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करती है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (उच्च तथा निम्न) और जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) का विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 42 बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
अ-(सामाजिक आर्थिक स्थित)	16.21	1	16.21	.96	>.05
ब - (जाति)	4.05	1	4.05	.24	>.05
अX ब	172.60	1	172.60	10.19	>.01
समूहान्तर्गत	4844.05	286	16.94	*. 01 *.05	6.73 3.875

सारणी-42 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है । इसी प्रकार अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का सार्थक प्रभाव विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर नहीं पड़ता है । .05 स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिए आवश्यक मान 3.875 अथवा इससे अधिक मान की आवश्यकता होती है, जबकि प्राप्त एफ अनुपात का मान इससे कम प्राप्त हुआ है । अतः हम कह सकते हैं कि विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा उनकी जाति स्वतंत्र रूप में सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करती है ।

किन्तु सारणी - 42 से यह भी स्पष्ट हो रहा है कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का अन्तः क्रियात्मक संयुक्त प्रभाव सार्थक रूप से .01 स्तर पर विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है । .01 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान 6.73 से अधिक एफ अनुपात का मान प्राप्त हुआ है, अतः संयुक्त रूप से सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को .01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करती है । प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत निर्मित शून्य उपकल्पना 3.6 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहाँ असत्य सिद्ध होती है ।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उच्च आत्म-प्रत्यय उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित उन विद्यार्थियों का है जो कि अनुसूचित जाति (मध्यमान **186.22**) के हैं। शैक्षिक आत्म-प्रत्यय सर्वाधिक उच्च अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का पाया गया जो कि उच्च सामाजिक आर्थिक से सम्बन्धित (मध्यमान **33.12**) हैं। शारीरिक आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर का अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों (मध्यमान **32.49**) में पाया गया जो कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित हैं। इसी प्रकार स्वभावगत आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का उच्च पाया गया जो कि निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित हैं (मध्यमान **32.09**)।

शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर सार्थक रूप से **.05** स्तर पर जाति का प्रभाव पाया गया, जबकि सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का संयुक्त सार्थक प्रभाव **.05** स्तर पर शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर तथा **.01** स्तर परबौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर पाया गया। इसके अतिरिक्त आत्म-प्रत्यय की अन्य विमाओं जैसे सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव विद्यार्थियों की जाति तथा ससामाजिक-आर्थिक स्थिति पर नहीं पड़ता है।

भाग-चार

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्रभाव सम्बन्धित प्रदन्तों का विलेशण तथा विवेचन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मापन किया गया । चतुर्थांक तीन (Q3)तथा चतुर्थांक एक (Q1)का निर्धारण किया गया ताकिउच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के विधार्थियों का निश्चय किया जा सके । चतुर्थाक तीन का मान 48 तथा चतुर्थांक एक का मान 34प्राप्त हुआ । इसके आधार पर अनुसूचित व सवर्ण जाति के विधार्थियों को दो वर्गो मे बिभाजित किया गया । प्रथम वर्ग में चतुर्थांक तीन (Q3)के मान (48तथा उससे अधिक प्राप्तांक)के आधार पर उच्च शैक्षिंक आकांक्षा स्तर के विधार्थी रखे गये जब की द्वितीय वर्ग मे चतुर्थांक एक (Q1)के मान (34तथा उससे कम प्राप्तांक)के आधार पर निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर का निर्धारण किया गया ।

इस प्रकार 2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर अनुसूचित तथा सवर्ण ज़ाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर उच्च शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया । साथ ही आत्म-प्रत्यय के अन्तर गत विभिन्न शारीरिक , सामाजिक, स्वभावगत शैक्षिक, नैतिक तथा वौद्धिकविभाओ पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन

सारणी -43 आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव-

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	86	66	152
	मध्यमान	180.79	184.79	182.53
	प्रामाणिक विचलन	19.33	15.76	17.98
निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	44	110	154
	मध्यमान	183.14	183.14	183.14
	प्रामाणिक विचलन	18.47	16.40	17.02
योग	छात्रों की संख्या	130	176	306
	मध्यमान	181.58	183.75	182.83
	प्रामाणिक विचलन	19.07	16.18	17.51

सारणी- **43**का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि सवर्ण जाति के विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **183.75)**अधिक उच्च स्तरका है, जबकि अनुसूचित जाति के विधाथियों का तुलनात्मक रुप से आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **181.58)**निम्न स्तर काहे । निम्न शैक्षिक आकांक्ष स्तर के विधर्थियों का आत्म प्रत्यय अधिक (मध्यमान **183.14)**उच्च स्तर का है, जब कि उच्च शैक्षिक आकांक्ष-स्तर के विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय तुनात्मक रुप से (मध्यमान **182.53)**निम्न स्तर का है । सवर्ण विधार्थियों की अपेक्षा अनुसूचित के प्राप्तांको मे अधिक विचरणशीलता दृष्टिगत होती है । सारणी **43** से यह भी स्पष्ट होता है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित सवर्ण जाति के विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **184.79)** सर्वाधिक है , जब कि अनुसूचित जाति के विधार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **180.79)** सर्वाधिक निम्न स्तर का है ।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर (उच्च तथा निम्न)तथा विधार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित)का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उदेदश्य से प्रसरण-विश्लेषण की **2x2**कारकीय अभिकल्प के आधार पर गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए

सारणी -44 आत्म -प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण -विलेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(शैक्षिक आकांक्षा स्तर)	8.71	1	8.71	.03	>.05
ब - (जाति)	273.85	1	273.85	.89	>.05
अX ब	273.34	1	273.34	.88	>.05
समूहान्तर्गत	93115.39	302	308.33	*.05	3.875

सारणी -44का अवलोकन करने सें स्पष्ट होता है कि विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है । इसी प्रकार जाति का भी आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड्ता है । साथ ही शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रुप से प्रभावित नही करता है । **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान **3.875**अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है, जब कि प्राप्त एफ अनुपात के तीनो मान आवश्यक मान से कम प्राप्त हुये है , अतः शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति आत्म-प्रत्यय को सार्थक रुप से प्रभावित नही करती है । अनुसन्धान की शून्य उपकल्पना **4,** 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति)के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा '। यहा सत्य सिद्ध होती है ।

आत्म -प्रत्यय अन्तर्गत विभिन्न विमाओं जैसे शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, ,शैक्षिक ,नैतिक ,तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्यन किया गया ।

(i) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर विधार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा शैक्षिक आकांक्षा - स्तर (उच्च तथा निम्न)का विधार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उदेद्श्य से मध्यमान ,प्रमाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई ।

सारणी- 45 शारीरिक आत्म -प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर तथा जाति का प्रभाव

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	86	66	152
	मध्यमान	30.94	30.42	30.72
	प्रामाणिक विचलन	4.80	4.46	4.66
निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	44	110	154
	मध्यमान	31.11	29.91	30.25
	प्रामाणिक विचलन	3.59	5.25	4.86
योग	छात्रों की संख्या	130	176	306
	मध्यमान	31.00	30.10	30.48
	प्रामाणिक विचलन	4.43	4.97	4.77

सारणी - **45** का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा -स्तर रखने वाले विधार्थियों का शारीरिक आत्म - प्रत्यय (मध्यमान **3.72)**अधिक उच्च स्तर का है , जब कि तुलनात्तमक रुप से निम्न शैक्षिक - आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों का शारीरिक आत्म -प्रत्यय

(मध्यमान 30.25)निम्न स्तर का है । इसी प्रकार अनुसूचित जाति के विधार्थियों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय अधिक (मध्मान 31.00) उच्च स्तर का है ,जब कि सवर्ण जाति के विधार्थियों शारीरिक आत्म -प्रत्यय (मध्यमान 30.10) निम्न स्तर का है ।सर्वाधिक उच्च शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 31.11) अनुसूचित जाति के उन विधार्थियों का पाया गया जो कि निम्न शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित है । उन विधार्थियों का सर्वाधिक निम्न शारीरिक आत्म -प्रत्यय है , जो कि सवर्ण जाति के निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर (मध्यमान 29.91) से सम्बन्धित है । सवर्ण जाति के निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों केशारीरिक आत्म -प्रत्यय के प्राप्ताकों मे अधिक विचरण शीलता हैं ।

शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति (अनुसूचित तथा सवर्ण जाति) का विधार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उदेद्श्य से प्रसरण - विश्लेषण की गणना 2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गयी ,जिसके अन्तर्गत सारणी 46- के परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी -46 शारीरिक आत्म-प्रत्यय शैक्षिक आकांक्षा-स्तर जाति के प्रभाव का प्रसरण -विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
अ-(शैक्षिक आकांक्षा स्तर)	1.71	1	1.71	.07	>.05
ब - (जाति)	49.92	1	49.92	2.25	>.05
अX ब	8.90	1	8.90	.39	>.05
समूहान्तर्गत	6890.35	302	22.81	*.05	3.875

सारणी -46का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा- स्तर का कोई सार्थक प्रभाव विधार्थियों के शारीरिक आत्म -प्रत्यय पर नही पड्ता है । इसी प्रकार अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति का भी कोई सार्थक प्रभाव शारीरिक आत्म -प्रत्यय पर दृष्टिगात नही

होता है। साथ शैक्षिक-आकांक्षा स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव सार्थक रुप से शारीरिक आत्म - प्रत्यय को प्रभावित नही करता है । ,05स्तर पर सार्थक प्रभाव के लिये आवश्यक मान **3.875**अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है, जब कि प्राप्त एफ अनुपात के तीनो ही मान **3.875**से कम प्राप्त हुए है, अतः शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का कोई सार्थक प्रभाव शारीरिक आत्म -प्रत्यय पर नही पड्ता है ।

अनुसन्धानकी शून्य उपकल्पना **4.1**,'अंनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विधार्थियों के शारीरिक आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिकं आकांक्षा -स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा । ' यहाँ सत्य सिद्ध होती है ।

(II) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियो की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का सामाजिक आत्म -प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2कारकीय अभिकल्प आधार पर विधार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा शैक्षिंक आकांक्षा - स्तर (उच्च तथा निम्न)का विधार्थियों के सामाजिक आत्म -प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उदेद्श्य से मध्यमान , प्रमाणिक विचलन तथा प्रसरण -विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी -47 सामाजिक आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर तथा जाति का प्रभाव

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	86	66	152
	मध्यमान	29.21	30.68	29.85
	प्रामाणिक विचलन	5.01	4.99	5.05
निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	44	110	154
	मध्यमान	28.30	30.12	29.59
	प्रामाणिक विचलन	4.64	4.66	4.73
योग	छात्रो की संख्यां	130	176	306
	मध्यमान	28.90	30.33	29.72
	प्रामाणिक विचलन	4.91	4.79	4.89

सारणी -47 का निरीक्षणकरने से स्पष्ट होता है कि के सवर्ण जाति के विधार्थियों का सामाजिक आत्म - प्रत्यय (मध्यमान 30.33)उच्च स्तर का है , जब कि अनुसूचित जाति के विधार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 28.90)तुलनात्मक रुप से निम्न स्तर का है । सवर्ण जाति के विधार्थी सामाजिक अन्तः क्रियाओं में अधिक आत्म-सन्तोष रखते है। इसी प्रकार उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों का सामाजिक आत्म - प्रत्यय (मध्यमान 29.85) उच्च स्तर का है , जब कि तुलनात्मक रूप से निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.59)निम्न स्तर का है । यदि सामाजिक आत्म -प्रत्यय की विचार शीलता का अवलोकन सारणी - 47 मे किया जायें तो स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों की अधिक है, साथ ही अनुसूचित जाति के विधार्थियों की विचार शीलता अधिक दृष्टिगत होती है ।

शैक्षिक आकांक्षा - स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति) का विधार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने का उदेद्श्य से प्रसरण - विश्लेषण की गणना **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गई, जिसके अन्तर्गत सारणी **-48** के परिणाम प्राप्त हुये -

सारणी -48 सामाजिक आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण - विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
अ-(शैक्षिक आकांक्षा स्तर)	37 .21	1	37.21	1.57	>.05
ब - (जाति)	185.31	1	185.31	7.84	>.01
अX ब	2.05	1	2.05	.09	>.05
समूहान्तर्गत	7135.17	302	23.63	*.01 *.05	6.73 3.875

सारणी-**48** का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा - स्तर कोई सार्थक प्रभाव सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर नही पडता है , किन्तु अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का **.01** स्तर पर सार्थक प्रभाव सामाजिक आत्म -प्रत्यय को प्रभावित करती है । **.01**स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान **6.73**से अधिक एफ अनुपात का मान **7.84**प्राप्त हुआ है , जिससे स्पष्ट है कि विधार्थियों की जाति उनके सामाजिक आत्म - प्रत्यय को सार्थक रुप से प्रभावित करता है । शैक्षिक आकांक्षा -स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव सामाजिक आत्म - प्रत्यय को सार्थक रुप से प्रभावित नही करता है । **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान **3.875**से काफी कम एफ अनुपात प्राप्त हुआ है , जिसके कारण कहा जा सकता है कि दोनो परिवर्तियों का सार्थक प्रभाव नही पडता है । अनुसन्धान की शून्य उपकल्पना **4.2** अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर) के विधार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा । यहा असत्य सिद्ध होती है ।

(iii) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर विधार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा शैक्षिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) का विधार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय प्रभाव का अध्ययन करने के उदेद्श्य से मध्यमान ,प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण - विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी - 49 स्वभावगत आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर तथा जाति का प्रभाव

शैक्षिक आकांक्षा मूल्य	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	86	66	152
	मध्यमान	31.74	31.08	31.45
	प्रामाणिक विचलन	4.77	5.27	5.00
निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	44	110	154
	मध्यमान	32.48	31.54	31.80
	प्रामाणिक विचलन	4.71	4.60	4.65
योग	छात्रो की संख्या	130	176	306
	मध्यमान	31.99	31.36	31.63
	प्रामाणिक विचलन	4.76	4.87	4.83

सारणी - **49** प्रदर्शित करती है कि सवर्ण जाति के विधार्थियों का स्वभावगत आत्म - प्रत्यय अधिक उच्च (मध्यमान **31.36)**नही है, जब कि तुलनात्मक रुप से अनुसूचित जाति के विधार्थियों का आत्म - प्रत्यय अधिक (मध्यमान **31.99)**उच्च स्तर का है । इसी प्रकार निम्न शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित छात्रो का स्वभावगत आत्म - प्रत्यय (मध्यमान

31.80) अधिक उच्च स्तर का है , जब कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर के विधार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय निम्न स्तर का है । सर्वाधिक स्वाभावगत आत्म - प्रत्यय अनुसूचित जाति के निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के विधार्थियों (मध्यमान 32.48)का पाया गया , जब कि सर्वाधिक निम्न स्वभावगत आत्म-प्रत्यय सवर्ण जाति के उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित (मध्यमान 31.08)विधार्थियों का पाया गया ।

शैक्षिक आकांक्षा - स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति) का विधार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय का अध्ययन करने के उदेद्श्य से प्रसरण - विश्लेषण की गणना 2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गई , जिस के अन्तर्गत सारणी - 50के परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 50 स्वभावगत आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण - विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
शैक्षिक आकांक्षा - स्तर	25.05	1	25.05	1.07	> .05
ब - (जाति)	44.20	1	44.20	1.88	>.05
अX ब	.68	1	.68	.03	> .05
समूहान्तर्गत	7093.32	302	23.49	*. 05	3.875

सारणी -50 से स्पष्ट है कि .05स्तर पर सार्थक अन्तर के लिये आवश्यक मान 3.875 तथा इससे अधिक मान की आवश्यकता है , जबकिं प्राप्त तीनो ही एफ अनुपात के मान इस आवश्यक मान 3.875कम प्राप्त हुए , अतः कहा जा सकतां है कि स्वभावगत आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर, जाति तथा दोंनो का संयुक्त प्रभाव सार्थक रुप से नही पडता है ।

इस प्रकार प्रस्तुत अनुसन्धान की शून्य उपकल्पना 4.3, 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर)के विधार्थियों के स्वभावगत आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा । ' यहां सत्य सिद्ध होती है ।

(iv)अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का शैक्षिक आत्म - प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर विधार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा शैक्षिक आकांक्षा - स्तर (उच्च तथा निम्न) का विधार्थियों शैक्षिक आत्म - प्रत्यय पर प्रभाव का अध्यन करने के उदेदश्य से मध्यमान,प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण - विश्लेषण की गणना की गई :-

सारणी - 51 शैक्षिक आत्म - प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर तथा जाति का प्रभाव

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	86	66	152
	मध्यमान	32.29	32.03	32.18
	प्रामाणिक विचलन	4.80	5.27	5.01
निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	44	110	154
	मध्यमान	33.07	32.17	32.42
	प्रामाणिक विचलन	4.66	4.60	4.63
योग	छात्रो की संख्यां	130	176	306
	मध्यमान	32.55	32.12	32.30
	प्रामाणिक विचलन	4.77	4.86	4.82

सारणी - 51प्रदर्शित करती है कि अनुसूचित जाति के विधार्थियों का शैक्षिक आत्म - प्रत्यय (मध्यमान **32.55)**उच्च स्तर का है , जब कि तुलनात्मक रुप से सवर्ण जाति के विधार्थियों का शैक्षिक आत्म - प्रत्यय निम्न स्तर (मध्यमान **32.12)** का है । इसी प्रकार निम्न शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **32.42)**उच्च स्तर का है , जब कि तुलनात्मक रुप से उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों

का शैक्षिक आत्म - प्रत्यय (मध्यमान **32.18**)निम्न स्तर का है । सर्वाधिक उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर अनुसूचित जाति के निम्न शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित (मध्यमान **33.07**)विधार्थियों का पाया गया ।

शैक्षिक आकांक्षा -स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति) का विधार्थियों के स्वभवगत आत्म - प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उदेदश्य से प्रसरण - विश्लेषण की गणना **2x2**कारकीय अभिकल्प केआधार पर की गई, जिसके अन्तर्गत सारणी - **52**के परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी -52 शैक्षिक आंत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
शैक्षिक आकांक्षा - स्तर	14.36	1	14.36	.61	> .05
ब - (जाति)	22.89	1	22.89	.97	> .05
अX ब	7.44	1	7.44	.32	> .05
समूहान्तर्गत	7092.18	302	23.48	*. 05 3.875	

सारणी - **52**का अवलोकन कपने से स्पष्ट है कि शैक्षिक आत्म - प्रत्यय पर उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है । इसी प्रकार विधार्थियों के शैक्षिक आत्म - प्रत्यय पर अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है । शैक्षिक आकांक्षा - स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी विधार्थियों की शैक्षिक आत्म -प्रत्यय को सार्थक शरुप से प्रभावित नही करता है । **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है , जब की एफ अनुपात के तीनो ही मान **3.875** काफी कम प्राप्त हुए है अतः यह कहा जा सकता है कि विद्याथियों के शैक्षिक आत्म - प्रत्यय को उनकी शैक्षिक आकाँक्षा तथा जाति सार्थक रुप से प्रभावित नही करती है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान की शून्य उपकल्पना 4.4, 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर) के विधार्थियों के शैक्षिक आत्म -प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा, यहाँ सत्य सिद्ध होती है ।

(v) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा - स्तर का नैतिक आत्म -प्रत्य पर प्रभाव का अध्ययन

2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर विधारथियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा शैक्षिक आकांक्षा - स्तर (उच्च तथा निम्न) का विधार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान , प्रामाणिक - विंचलन तथा प्रसरण - विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी - 53 उच्च तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सवर्ण एवं अनुसूचित जाति के छात्रों का नैतिक आत्म-प्रत्यय मध्यमान तथा प्रामाणिक विचलन

शैक्षिक आकांक्षा स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	86	66	152
	मध्यमान	29.59	30.79	30.11
	प्रामाणिक विचलन	5.36	4.22	4.93
निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	44	110	154
	मध्यमान	30.00	30.57	30.41
	प्रामाणिक विचलन	5.36	5.21	5.26
योग	छात्रों की संख्या	130	176	306
	मध्यमान	29.73	30.65	30.25
	प्रामाणिक विचलन	5.36	4.86	5.10

सारणी 53 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि सवर्ण जाति के विधार्थियों का नैतिक आत्म - प्रत्यय (मध्यमान 30.65) अधिक उच्च स्तर का है , जब कि तुलनात्मक रुप से अनुसूचित जाति के विधार्थियों का नैतिक आत्म - प्रत्यय निम्न स्तर (मध्यमान 29.73) का है। इसी प्रकार निम्न शैक्षिक आकाक्षा से सम्बन्धित विधार्थियों का नैतिक आत्म -प्रत्यय (मध्यमान 30.41) उच्च स्तर का , जब कि तुलनात्मक रुप से उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर से सम्बन्धित विधार्थियों का नैतिक आत्म - प्रत्यय (मध्यमान 30.11)निम्न स्तर का है । सर्वाधिक नैतिक आत्म -प्रत्यय उच्च शैक्षिक आकांक्षा - स्तर के सवर्ण जाति के विधार्थियों (मध्यमान 30.79) का पाया गया, जब कि अनुसूचित जाति के विधार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.59) सर्वाधिक कम पाया गया ।

शैक्षिक आकांक्षा - स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (अनुसूचित तथा सवर्ण जाति) का विधार्थियों के नैतिक आत्म - प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्‌देश्य से प्रसरण -विश्लेषण की गणना 2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गई , जिसके अन्तर्गत सारणी - 54के परिणाम प्राप्त हुए

सारणी - 54 नैतिक आत्म- प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा -स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण - विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
शैक्षिक आकांक्षा - स्तर	1.00	1	1.00	.04	> .05
ब - (जाति)	53.94	1	53.94	2.06	>.05
अX ब	6.64	1	6.64	.25	> .05
समूहान्तर्गत	7890.70	302	26.13	*. 05	3.875

सारणी -**54**का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि नैतिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है ।जाति का भी नैतिक आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी सार्थक रूप से नैतिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है ।**.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** अथवा उससे अधिक मान की आवश्यकता है, जबकि एफ अनुपात के तीनों मान **3.875** से कम प्राप्त हुआ है, अतः कहा जा सकता है कि नैतिक आत्म-प्रत्यय को शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति प्रभावित नहीं करती है ।

प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **4.5**,' अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर) के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।' यहाँ सत्य सिद्ध होती है ।

(vi) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा-स्तर क बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन-

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा शैक्षिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसंरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी 55 बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

शैक्षिक अकांक्षा स्तर	गणना	अनुसूचित जाति	सवर्ण जाति	योग
उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	86	66	152
	मध्यमान	28.85	29.53	29.14
	प्रामाणिक विचलन	4.50	5.26	4.86
निम्न शैक्षिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	44	110	154
	मध्यमान	28.55	28.87	28.79
	प्रामाणिक विचलन	5.04	4.79	4.86
योग	छात्रों की संख्या	130	176	306
	मध्यमान	28.75	29.11	28.96
	प्रामाणिक विचलन	4.69	4.98	4.86

सारणी - **55** प्रदर्शित करती है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **29.11**) अधिक उच्च है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **28.75**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है। इसी प्रकार से उच्च शैक्षिक-आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **29.14**) उच्च स्तर का है जबकि निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **28.79**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है। सर्वाधिक बौद्धिक आत्म-प्रत्यय सवर्ण जाति के उन विद्यार्थियों का पाया गया जो कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा-स्तर (मध्यमान **29.53**) से सम्बन्धित है।

शैक्षिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा जाति (अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति) का छात्रों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर की गई, जिसके अन्तर्गत सारणी-**56** के परिणाम प्राप्त हुए

सारणी -56 **बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विशलेषण** -

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
शैक्षिक आकांक्षा - स्तर	15.75	1	15.75	.66	> .05
ब - (जाति)	17.09	1	17.09	.72	>.05
अX ब	2.24	1	2.24	.09	> .05
समूहान्तर्गत	7206.6	302	23.86	*. 05 3.875	

सारणी - **56** का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर, जाति तथा इन दोनों का संयुक्तप्रभाव सार्थक रूप से नहीं पड़ता है । **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** तथा उससे अधिक मान की आवश्यकता है, जबकि एफ अनुपात के तीनों ही मान **3.875** से कम प्राप्त हुए हैं अतः प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **4.6**, ' अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर) के विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहां सत्य सिद्ध होती है ।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आत्म-प्रत्यय तथा उसके अन्तर्गत सभी विमाओं जैसे शारीरिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर जाति तथा शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । केवल सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर विद्यार्थियों की जाति का **.01** स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है ।

भाग - पाँच

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव सम्बन्धित प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचन -

अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का मापन किया गया । चतुर्थांक तीन(Q_3) चतुर्थांक एक(Q_1) का निर्धारण किया गया ताकि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के विद्यार्थियों का निश्चय किया जा सके । चतुर्थांक तीन का मान 59 तथा चतुर्थांक एक का मान 44 प्राप्त हुआ । इसके आधार पर अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के दो वर्गों में विभाजित किया गया । प्रथम वर्ग में चतुर्थांक तीन (Q_3) के मान (59 तथा उससे अधिक प्राप्तांक) के आधार पर उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के विद्यार्थी रक्खे गये, जबकि द्वितीय वर्ग में चतुर्थांक एक (Q_1) के मान (44 तथा उससे कम प्राप्तांक) के आधार पर निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का निर्धारण किया गया ।

इस प्रकार 2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया । साथ ही आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत विभिन्न शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत

सारणी - 57आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक-आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

व्यावसायिक-आकांक्षा-स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	90	61	151
	मध्यमान	185.00	183.75	184.49
	प्रमाणिक विचलन	13.88	17.43	15.42
निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	56	81	137
	मध्यमान	181.86	183.93	183.08
	प्रमाणिक विचलन	16.70	19.38	18.36
योग	छात्रों की संख्या	146	142	288
	मध्यमान	183.79	183.85	183.82
	प्रमाणिक विचलन	15.10	18.57	16.90

शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक विमाओं पर का व्यावसायिक आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन तथा विश्लेषण किया गया । इसके अन्तर्गत मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई ।

सारणी - **57** का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **184.49**) अधिक उच्च स्तर का है, जबकि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **183.08**)) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है । अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **183.85**) उच्च स्तर का है, जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का आत्म-प्रत्यय **(183.79)** निम्न स्तर का है । सर्वाधिक उच्च आत्म-प्रत्यय सवर्ण जाति के उन विद्यार्थियों का पाया गया जो कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर से सम्बन्धित हैं । अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय प्राप्तांकों में अधिक विचरणशीलता पाई जाती है ।

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) का आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की **2x2** कारकीय अभिकल्प के आधार पर गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए

सारणी -58 प्रसारण-विश्बेषण (2x2 कारकीय अभिकल्प) परिणाम सारांश : आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यावसायिक आकांक्षास्तर	152.30	1	152.30	.53	> .05
ब - (जाति)	11.87	1	11.87	.04	>.05
अX ब	191.65	1	191.65	.66	> .05
समूहान्तगति	81933.73	284	288.50	*. 05 3.875	

सारणी -**58** से स्पष्ट है कि आत्म- प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है साथ ही जाति का आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्य को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है । उक्त **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर होने के लिए आवश्यक मान **3.875** से काफी कम एफ अनुपात प्राप्त हुए हैं, अतः प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **5**, 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहाँ सत्य सिद्ध होती है ।

आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत विभिन्न विमाओं जैसे - शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया ।

(i)अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी - 59 शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

व्यावसायिक-आकांक्षा-स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	90	61	151
	मध्यमान	30.21	30.02	30.14
	प्रामाणिक विचलन	4.50	4.42	4.47
निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	56	81	137
	मध्यमान	30.43	30.81	30.65
	प्रामाणिक विचलन	4.58	4.22	4.37
योग	छात्रो की संख्या	146	142	288
	मध्यमान	30.29	30.48	30.38
	प्रामाणिक विचलन	4.53	4.31	4.43

सारणी -59 का निरीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 30.48) उच्च स्तर का है, जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 30.29) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है । इसी प्रकर निम्न व्यावसायिक आकांक्षा- स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय (30.65 मध्यमान) उच्च स्तर का है, जबकि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित

विद्यार्थियों का शारीरिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **30.14**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है।

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा विद्यार्थियों की अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का उनके शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर अध्ययन करने के उदेश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 60 शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यावसायिक आकांक्षास्तर	17.36	1	17.36	.88	> .05
ब - (जाति)	.69	1	.69	.03	>.05
अX ब	5.55	1	5.55	.28	> .05
समूहान्तर्गत	5626.85	284	19.81	*. 05	3.875

सारणी - **60** का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर नहीं पड़ता है। इसी प्रकार अनुसूचित तथासवर्ण जाति का भी कोई सार्थक प्रभाव छात्रों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर नहीं पड़ता है। व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। **.05** स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** के तीनों ही प्राप्त एफ अनुपात के मान काफी कम प्राप्त हुए हैं, अतः प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **5.1**, 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।' यहाँ सत्य सिद्ध होती है।

(i) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने का उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी -61 सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर जाति का प्रभाव

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	90	61	151
	मध्यमान	30.24	28.84	29.67
	प्रामाणिक विचलन	4.76	5.39	5.07
निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	56	81	137
	मध्यमान	30.11	29.02	29.47
	प्रामाणिक विचलन	5.02	5.70	5.46
योग	छात्रों की संख्यां	146	142	288
	मध्यमान	30.19	28.94	29.57
	प्रामाणिक विचलन	4.86	5.57	5.26

सारणी - **61** का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **30.19**) अधिक उच्च है, जबकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **28.94**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है। उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का सामाजिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **29.67**) उच्च स्तर का है, जबकि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों

का सामाजिक आत्म-प्रच्यय निम्न (मध्यमान 29.47) स्तर का है। सर्वाधिक उच्च सामाजिक आत्म-प्रत्यय सवर्ण जाति के उन विद्यार्थियों का है जो कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित (मध्यमान 30.24) है

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा विद्यार्थियों की अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का उनके सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 62 सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योंग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफअनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यावसायिक आकांक्षास्तर	-	1	-	-	-
ब - (जाति)	107.63	1	107.63	3.98	<.05
अX ब	1.39	1	1.39	.05	> .05
समूहान्तर्गत	7681.29	284	27.05	*. 05	3.875

सारणी-62 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर उनकी व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है, किन्तु सवर्ण जाति तथा अनुसूचित जाति का सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर .05 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। .05 स्तर पर सार्थक प्रभाव के लिए आवश्यक मान 3.875 से अधिक एफ अनुपात 3.98 प्राप्त हुआ है, अतः जाति का सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर सार्थक प्रभाव स्पष्ट होता है। व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर जाति का संयुक्त प्रभाव सार्थक रूप से सामाजिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है। प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 5.2 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा। ' यहाँ असत्य सिद्ध होती है,क्योंकि प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की जाति सार्थक रूप से सामाजिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करती है।

(iii) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय का प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई-

सारणी - 63 स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	90	61	151
	मध्यमान	32.12	32.28	32.18
	प्रामाणिक विचलन	4.25	4.67	4.42
निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	56	81	137
	मध्यमान	30.86	32.22	31.66
	प्रामाणिक विचलन	4.70	4.28	4.51
योग	छात्रो की संख्या	146	142	288
	मध्यमान	31.64	32.25	31.94
	प्रामाणिक विचलन	4.47	4.45	4.47

सारणी - **63** का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय उच्च (मध्यमान **32.18**) स्तर का है, जबकि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **31.66**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है। इसी प्रकर अनुसूचित जाति

के विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **32.25**) उच्च स्तर का है, जबकि सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का स्वभावगत आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **31.64**) तुलनात्मक रूप से निम्न स्तर का है । सर्वाधिक उच्च स्वभावगत आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का है। जो कि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से संबंधित है ।

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा विद्यार्थियों के अनुसूचित तथा सवर्ण जाति का उनके स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी -64 स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यावसायिक आकांक्षास्तर	29.86	1	29.86	1.49	> .05
ब - (जाति)	39.58	1	39.58	1.98	>.05
अX ब	25.69	1	25.69	1.28	> .05
समूहान्तर्गत	5680.77	284	20.00	*. 05	3.875

सारणी -64 निरीक्षण करने से स्पष्ट से है कि स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । विद्यार्थियों की जाति का भी उनके स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । इसी प्रकार व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव स्वभावगत आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। **.05**स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान **3.875** से कम तीनों एफ अनुपात प्राप्त हुए है, अतः स्पष्ट है कि व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का छात्रों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है ।प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना **5.3,**

' अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के स्वभावगत आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर को कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा । ' यहाँ सत्य सिद्ध होती है।

(iv) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन –

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विधार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) का विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई–

सारणी - 65- शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा -स्तर तथा जाति का प्रभाव

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	90	61	151
	मध्यमान	32.36	32.62	32.46
	प्रामाणिक विचलन	4.72	4.80	4.75
निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	56	81	137
	मध्यमान	30.43	33.12	32.02
	प्रामाणिक विचलन	4.57	4.53	4.73
योग	छात्रों की संख्या	146	142	288
	मध्यमान	31.62	32.91	32.25
	प्रामाणिक विचलन	4.76	4.65	4.74

सारणी - **65** का अवलोकन करने के से स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **32.91**) उच्च स्तर का है, जबकि तुलनात्मक रूप से सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **31.62**) निम्न स्तर का है। इसी प्रकार उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान **32.46**) उच्च स्तर का है, जबकि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के विद्यार्थियों का शैक्षिक आत्म-प्रत्यय तुलनात्मक रूप से (मध्यमान **32.02**) निम्न स्तर का है। सर्वाधिक शैक्षिक आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का है जो कि निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (मध्यमान **33.12**) से सम्बन्धित है।

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा विद्यार्थियों की जाति (अनुसूचित तथा सवर्ण) का उनके शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 66 - शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यावसायिक आकांक्षास्तर	35.41	1	35.41	1.61	> .05
ब - (जाति)	150.68	1	150.68	6.85	< .01
अX ब	103	1	103.00	4.68	> .05
समूहान्तर्गत	6249.42	284	22.00	*. 01 *.05	6.73 3.875

सारणी **66** प्रदर्शित करती है कि व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नही करता है। **.05** स्तर पर सार्थक प्रभाव के लिए आवश्यक मान **3.875** से कम एफ अनुपात **1.61** प्राप्त हुआ है। इसके विपरीत विद्यार्थियों की

जाति उनके आत्म-प्रत्यय को .01 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभाव डालती है। .01 स्तर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान 6.73 से अधिक एफ अनुपात 6.85 प्राप्त हुआ है; अतः कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की जाति शैक्षिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करती है। व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त अर्न्तक्रियात्मक प्रभाव भी सार्थक रूप से .05 स्तर पर शैक्षिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है। प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 5.4,'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा--स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा।' यहाँ असत्य सिद्ध होती है।

अनुसूचचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का नैतिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित जाति) का विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी 67- नैतिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	90	61	151
	मध्यमान	29.69	32.26	30.32
	प्रामाणिक विचलन	5.47	4.33	5.21
निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	56	81	137
	मध्यमान	30.43	30.35	30.38
	प्रामाणिक विचलन	5.10	5.71	5.47
योग	छात्रों की संख्या	146	142	288
	मध्यमान	29.97	30.74	30.35
	प्रामाणिक विचलन	5.34	5.26	5.33

सारणी - 67 का अवलोकन करने से स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर (मध्यमान 30.74) का है, जबकि तुलनात्मक रूप से सवर्ण जाति के विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.97) निम्न स्तर का है । यद्यपि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बंधित विद्यार्थियों का नैतिक आत्म-प्रत्यय में लगभग कोई अन्तर नहीं है । सर्वाधिक उच्च नैतिक आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का है; जो कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित (मध्यमान 32.26) है ।निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से संबंधित विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय के प्राप्तांकों में सर्वाधिक विचारशीलता पाई गई -

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा विद्यार्थियों की जाति (अनुसूचित तथा सवर्ण जाति) का उनके नैतिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी - 68- नैतिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यावसायिक आकांक्षास्तर	23.61	1	23.61	.84	> .05
ब - (जाति)	107.63	1	107.63	3.85	<.05
अX ब	122.29	1.	122.29	4.38	< .05
समूहान्तर्गत	7931.12	284	27.93	*.05	3.875

सारणी- 68 का निरीक्षण करने से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है , इसी प्रकार विद्यार्थियों की जाति का कोई सार्थक प्रभाव उनके नैतिक आत्म-प्रत्यय पर नहीं पड़ता है । .05 स्तर पर सार्थक प्रभाव होने के लिए आवश्यक मान 3.875 से कम एफ अनुपात का मान क्रमशः .84 तथा 3.85 प्राप्त

हुआ है, जिससे स्पष्ट है कि व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का कोई सार्थक प्रभाव विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर नहीं पड़ता है । किन्तु सारणी -68 से यह भी स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक आकांक्षा -स्तर तथा जाति का संयुक्त अर्न्तकिर्यात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय को .05 स्तर पर सार्थक रूप से प्रभावित करता है । प्राप्त एफ अनुपात का मान 4.38 ज्ञात हुआ है जो कि .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान 3.875से अधिक है, अतः अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 5.5,'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के नैतिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।' यहाँ प्राप्त परिणामों के आधार पर असत्य सिद्ध होती है ।

(vi) अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन -

2x2 कारकीय अभिकल्प के आधार पर विद्यार्थियों की जाति (सवर्ण तथा अनुसूचित) का विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई -

सारणी -69- बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का प्रभाव

व्यावसायिक-आकांक्षा	गणना	सवर्ण जाति	अनुसूचित जाति	योग
उच्च व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	90	61	151
	मध्यमान	29.94	31.26	30.48
	प्रामाणिक विचलन	5.40	4.33	5.04
निम्न व्यावसायिक आकांक्षा स्तर	छात्रों की संख्या	56	81	137
	मध्यमान	29.46	29.17	29.29
	प्रामाणिक विचलन	5.52	4.53	4.96
योग	छात्रों की संख्या	146	142	288
	मध्यमान	29.76	30.07	29.91
	प्रामाणिक विचलन	5.45	4.56	5.04

सारणी-69 से स्पष्ट है कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 30.48) उच्च स्तर का है, जबकि तुलनात्मक रूप से निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय (मध्यमान 29.29) निम्न स्तर का है । इसी प्रकार अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का बौद्धिक आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर (मध्यमान 30.07) का है । जबकि सवर्ण विद्यार्थियों का तुलनात्मक रूप से बौद्धिक आत्म-प्रत्यय निम्न-स्तर (मध्यमान 29.76) का है । सर्वाधिक उच्च बौद्धिक आत्म-प्रत्यय अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का है , जो कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित (मध्यमान 31.26) हैं । सवर्ण जाति तथा उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय के प्राप्तांकों में सर्वाधिक विचलनशीलता दृष्टिगत होती है।

व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (उच्च तथा निम्न) तथा विद्यार्थियों की जाति (अनुसूचित तथा सवर्ण) का उनके बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से प्रसरण-विश्लेषण की गणना की गई, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

सारणी -70- बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति के प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण

प्रसरण का स्रोत	वर्गो का योग	स्वतन्त्रता के अंश	मध्यमान वर्ग	एफ अनुपात	प्रायिकता
(अ) व्यावसायिक आकांक्षास्तर	114.57	1	114.57	2.56	> .05
ब - (जाति)	18.22	1	18.22	.41	>.05
अX ब	45.25	1	45.25	1.01	> .05
समूहान्तर्गत	12699.03	284	44.71	*.05	3.875

सारणी -70 से स्पष्ट है कि व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर सार्थक रूप से विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को प्रभावित नहीं करता है । इसी प्रकार विद्यार्थियों की जाति का कोई सार्थक

प्रभाव बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर नहीं पड़ता है । साथ ही व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव भी छात्रों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करता है। .05 स्तर पर सार्थक अन्तर के लिए आवश्यक मान 3.875 से कम एफ अनुपात के तीनों मान प्राप्त हुए हैं, अतः प्रस्तुत अनुसंधान की शून्य उपकल्पना 5.6 'अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति (उच्चतर जाति) के विद्यार्थियों के बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा। ' यहाँ प्राप्त परिणामों के आधार पर सत्य सिद्ध होती है ।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर विद्यार्थियों की जाति का सार्थक प्रभाव .05 स्तर पर पड़ता है तथा इसी प्रकार शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर भी विद्यार्थियों की जाति का .01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है । शैक्षिक तथा नैतिक आत्म-प्रत्यय पर विद्यार्थियों की जाति तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का संयुक्त प्रभाव सार्थक रूप से .05 स्तर पर पड़ता है । इसके अतिरिक्त शारीरिक, स्वभावगत, तथा बौद्धिक-आत्म-प्रत्यय पर जाति तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । शैक्षिक आत्म-प्रत्यय सर्वाधिक अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों (मध्यमान 33.12) का पाया गया जो कि निम्न व्यावसायिक आकांक्ष्क-स्तर से सम्बन्धित है । स्वभावगत आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर का अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का पाया गया जो कि उच्च व्यावसायिक (मध्यमान 32.28) आकांक्षा-स्तर से सम्बन्धित हैं । इसी प्रकार नैतिक आत्म-प्रत्यय उच्च स्तर का अनुसूचित जाति के उन विद्यार्थियों का पाया गया जो कि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर (मध्यमान 32.26) से सम्बन्धित हैं ।

पंचम अध्याय

प्राप्त परिणामों का शैक्षिक अनुप्रयोग तथा आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत अनुसंधान द्वारा प्राप्त परिणामों का किस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग किया जा सकता है, इसकी विवेचना करनी महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन के आधार पर आगे आने वाले समय में किस प्रकार के अध्ययन किये जायें, इस सम्बन्ध में विभिन्न सुझावों की विवेचना करना भी आवश्यक है।

शैक्षिक अनुप्रयोग :-

शिक्षा-जगत में विधार्थी एक महत्वपूर्ण परिवर्ती होता है। विधार्थी के आत्म-प्रत्यय के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होने पर अध्यापक शैक्षिक उपयोग कर सकता है। इसके अतिरिक्त विधार्थी के आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत विभिन्न विमाओं के सम्बन्ध में प्राप्त ज्ञान का भी उपयोग शैक्षिक क्षेत्र में किया जा सकता है। किस प्रकार विधार्थी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, विभिन्नवैयक्तिक मूल्य, शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के सम्बन्ध में प्राप्त ज्ञान का अध्यापक, निर्देशक तथा परामर्श दाता अपने शिक्षा क्षेत्र में उपयोग कर सकता है।

परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ है कि आत्म-प्रत्यय पर जाति का सार्थक प्रभाव पड़ता है। यदि विधार्थी सवर्ण अथवा उच्चतर जाति का है, तब ऐसी स्थिति में उसका अलग प्रकार का आत्म-प्रत्यय होता है, जबकि अनुसूचित जाति के विधार्थी का भिन्न प्रकार का आत्म-प्रत्यय होता है। इसी कारण से शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। केवल नैतिक आत्म-प्रत्यय पर सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के विधार्थियों के विचार समान प्राप्त हुए।

उक्त तथ्यों के आधार पर अध्यापक यह समझते हुये अपना अध्यापन कार्य कर सकता है कि विधार्थी अपने वारे मे जो भी विचार रखता है, उसकी अपने प्रति जो भी धारंणा है वह उसकी निम्नतर अथवा उच्चतर जाति से प्रभावित है। यदि विधार्थी अपने आप को हीन भावना से ग्रसित मान रहा है, तव से ऐसी स्थिति में उसको आत्म-विश्वास पैदा करने के लिये प्रेरित किया जा

सकता है । उसे अधिक आत्म-विश्वास से पढाई के लिये प्रेरित किया जा सकता है । उसे समझाया जा सकता है कि शिक्षा द्वारा ज्ञान प्राप्त करो । जाति, धर्म आदि के कारण असमानता के व्यवहार से बचना आवश्यक हो जाता है ।

प्रस्तुत अनुसन्धान के प्राप्त परिणामों द्वारा यह भी स्पष्ट हुआ है कि व्यक्ति के विभिन्न मूल्यों का कोई सार्थक प्रभाव आत्म-प्रत्यय पर नहीं पड़ता है ।इसके आधार पर कहा जा सकता है कि विधार्थी किसी भी जाति से सम्बन्धित हो, किन्तु उसके मूल्यों में किसी प्रकार की भिन्नता नही होती है। अध्यापक इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए अपना अध्यापन कार्य अधिक प्रभावी विधि द्वारा कर सकते हैं । केवल स्वास्थ्य मूल्य ही एक ऐसा मूल्य है जो कि विधार्थियों की आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है । विधार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का शिक्षा के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध पाया गया । विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथाजाति का संयुक्त प्रभाव उनके शारीरिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करता है । अतः विधार्थीयों को अध्ययन- अध्यापन कराते समय इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि पढ़ने वाले विद्यार्थी की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कैसी है । उसी के अनुरूप उसका शारीरिक तथा बौद्धिक आत्म -प्रत्यय निर्मित होता है प्राप्त परिणामों से यह भी ज्ञात हुआ कि विधार्थियों की जाति उनके शैक्षिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करती है । विधार्थी उच्चतर अथवा निम्नतर जाति से सम्बन्धित हैं उसी प्रकार से शैक्षिक आत्म-प्रत्यय विकसित होता है । इसके अतिरिक्त आत्म-प्रत्यय की अन्य विमाओं जैसे सामाजिक, स्वभावगंत तथा नैतिक आत्म-प्रत्यय पर कोई सार्थक प्रभाव विधार्थियों की जाति तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति का प्रभाव नहीं पड़ता है ।

प्राप्त परिणामों से यह भी महत्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होता है कि आत्म-प्रत्यय तथा उसके अन्तर्गत सभी विमाओं जैसे शारीरिक, स्वंभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक आत्म- प्रत्यय पर जाति तथा शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है । केवल सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर विधार्थियों की जाति का **.01** स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है । परामर्श दाता, अध्यापक आदि उक्ततथ्य के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के सम्बन्ध में सही मूल्यांकन कर सकते हैं । विद्यार्थियों के शैक्षिक तथा नैतिक आत्म-प्रत्यय पर विधार्थियों की जाति तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का संयुक्त प्रभाव सार्थक रूप से पड़ता है । जबकि शारीरिक,

स्वभाव तथा बौद्धिक आत्म प्रत्यय पर जाति तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अनुसंधान द्वारा प्राप्त परिणामों द्वारा विधार्थी की जाति, मूल्य, सामाजिक -आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक -व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का आत्म-प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है इसकी जानकारी होती है, जिसके आधार पर अध्यापक, नि-र्देशक,परामर्शदाता आदि अपने दायित्व का अधिक प्रभावी रूप से अनुपालन कर सकेंगे ।

आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव :-

प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत जनपद **" जालौन के अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के छात्रों पर आर्थिक एवं सामाजिक कारणों का आत्म-प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन' करना था ।" उक्त अनुसंधान समस्या के अतिरिक्तअन्य महत्वपूर्ण परिवर्तियों के आधार पर आगामी अनुसंधान किये जा सकते हैं ।**

सर्वप्रथम ग्रामीण तथा शहरी विधार्थियों की तुलना की जा सकती है । ग्रामीण तथा शहरी विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन तथा मूल्यों, सामाजिक -आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है । इस प्रकार के अनुसंधान अध्ययन से शहर तथा ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्धित विद्यार्थियों के सम्बन्ध मेंअधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी, जिसका अध्यापकगण अपने अध्यापन के क्षेत्र में उपयोग कर सकते है ।

विधार्थियों के लिंग के मध्य का भी तुलनात्मक अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है । छात्र तथा छात्राओं के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन विधार्थी के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सूचनायें प्रदान करेगा । इस प्रकार यह ज्ञात हो सकेगा कि आत्म-प्रत्यय पर क्या कोई लिंग का प्रभाव पड़ता है ? अथवा नहीं ? विधार्थियों के मूल्यों सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक व व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के आधार पर छात्र तथा छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है । अध्यापन के क्षेत्र में यह प्राप्त ज्ञान विधार्थी को और अधिक समझने में सहायक सिद्ध हो सकेगा।

विधार्थी के आत्म-प्रत्यय तथा समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन एक महत्वपूर्ण अनुसंधान सिद्ध हो सकता है । जिन विधार्थियों का समायोजन उच्च स्तर का है उनका आत्म-प्रत्यय किस प्रकार का प्राप्त होता है ? इसके विपरीत जिन विधार्थियों का समायोजन-स्तर निम्न है उन विधार्थी का आत्म-प्रत्यय किस प्रकार का है ? इन तथ्यों की जानकारी से आत्म-प्रत्यय तथा समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन किया जा सकता है । उक्त सभी अध्ययनों में आत्म-प्रत्यय की सभी विमाओं जैसे शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक, शैक्षिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय का अध्ययन शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण योगदान माना जायेगा ।

षष्ठम अध्याय

संक्षिप्तीकरण

आत्म-प्रत्यय को व्यक्तितत्व की संरचना का एक आवश्यक अंग माना जाता है । वास्तव में, हम व्यक्ति के आत्म के उसके व्यक्तित्व का केन्द्र कह सकते है, क्योंकि आत्म के चारों ओर ही व्यक्तित्व के अन्य तत्व वा लक्षण संगठित होते हैं । आत्म-प्रत्यय सामाजिक परिस्थितियों में सामाजिक अन्तः क्रियाओं के फलस्वरूप विकसित होता है और व्यक्ति की व्यवहार व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता बन जाता है ।

प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत अनुसंधान कर्ता यह जानना चाहता है कि अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय में क्या अन्तर है ? इसी प्रकार विभिन्न मूल्यों से प्रभावित विद्यार्थियों की एक विशिष्ट जीवन शैली बन जाती है । क्या विद्यार्थियों के मूल्यों का प्रभाव उनके आत्म- प्रत्यय पर पड़ता है ? साथ ही विधार्थियों की सामाजिक -आर्थिक स्थिति, शैक्षिक-व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करते हैं ? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रस्तुत अनुसंधान की निम्नलिखित समस्या का चयन किया गया - **"जनपद जालौन के अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के छात्रों पर आर्थिक एवं सामाजिक कारणों का आत्म-प्रत्यय पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन ।"**

प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्य :-

प्रस्तुतु अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1. अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन ।
2. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विद्यार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर विभिन्न प्रकार के मूल्यों धार्मिक, सामाजिक, जनतंत्रात्मक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, सुखवादी, शक्ति, परिवार, स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन करना ।

3. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना

4. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के (सवर्ण) विधार्थियों पर आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना ।

शून्य परिकल्पनायें :-

अनुसंधान के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनायें निर्मित की गयीं ।

1. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है ।

2. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति (सवर्ण) **के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर मूल्यों का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा ।**

3. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

4. अनुसूचित जाति तथा उच्चतर जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होगा ।

5. अनुसूचित तथा उच्चतर जाति के विधार्थियों के आत्म -प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नही होगा ।

प्रतिदर्श -

प्रतिदर्श का चयन उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड प्रभाग के जनपद जालौन के विधालयों से किया गया । उच्चतर माध्यमिक विधालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का चयन क्रमबद्ध अनियमित प्रतिचयन विधि से किया गया जिसके अन्तर्गत 600विधार्थियों का चयन किया गया । 300 विधार्थी उच्चतर अथवा सवर्ण जाति से सम्बन्धित थे तथा 300अनुसूचित जाति से सम्बन्धित विद्यार्थी थे ।

प्रयुक्त परीक्षणों का विवरण :-

प्रस्तुत अनुसंधान के अन्तर्गत निम्नलिखित परीक्षण-प्रपत्रों का प्रशासन किया गया:-

(i) **आत्म-प्रत्यय प्रश्नावली** - डा०आर०के० सारस्वत प्रश्नावली के अन्तर्गत आत्म-प्रत्यय के विमाओं शारीरिक, सामाजिंक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय का मापन किया गया ।

(ii) **वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली** - जी०पी०शैरी तथा आर०पी०वर्मा वैयक्तिक मूल्य प्रश्नावली के अन्तर्गत धार्मिक, सामाजिक, जनतंत्रात्मक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, सुखवादी, शक्ति, परिवार, प्रतिष्ठा तथा स्वास्थ्य मूल्य का मापन किया गया।

(iii) **सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी** - डा०एस०पी०कुलश्रेष्ठ

(iv) **शैक्षिक आकांक्षा स्तर** - डा०वी०पी०शर्मा तथा अनुराधा गुप्ता

(v) **व्यावसायिक आकांक्षा स्तर** - **डा०जे०एस०ग्रेवाल**

सांख्यकीय पद्धति - प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यकीय विश्लेषण करने के उद्देश्य से मध्यमान , प्रामाणिक विचलन, टी-परीक्षण तथा प्रसरण विश्लेशण की गणना की गयी ।

प्राप्त परिणामों का विवेचन :-

प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्यों के आधार पर प्राप्त परिणामों का विवेचन निम्नलिखित पाँच भागों में किया गया -

भाग एक - अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया गया । अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिकतथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ । इससे स्पष्ट होता है कि विधार्थियों की जाति उनके आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करती है । केवल नैतिक आत्म-प्रत्यय पर दोनों जाति के छात्रों के मध्य सार्थक अन्तर प्राप्त नहीं हुआ ।

भाग दो - अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के विभिन्न प्रकार के मूल्यों का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव के अन्तर्गत अध्ययन किया गया । प्राप्त मूल्यों के प्राप्तांकों के

आधार पर सभी दस मूल्यों के चतुर्थांक एक (Q1)तथा चतुर्थांक -3 (Q3)का निर्धारण किया गया ताकि उच्च मूल्य तथा निम्न मूल्य के विधार्थियों को वर्गीकृत किया जा सके । केवल विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय को स्वास्थ्य मूल्य ही सार्थक रूप से प्रभावित करता है जबकि अन्य मूल्य धार्मिक, सामाजिक, जनतंत्रात्मक सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, सुखवादी, शक्ति तथा परिवार- प्रतिष्ठा मूल्य विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित नही करते हैं ।

भाग तीन - अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का आत्म-प्रत्यय पर प्रभाव का अध्ययन किया गया ।2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर अनुसूचित व सवर्ण जाति तथा सामाजिक । आर्थिक-स्थिति (उच्च तथा निम्न) का विधार्थियों के आत्म- प्रत्यय पर प्रभाव का प्रसरण-विश्लेषण द्वारा अध्ययन किया गया । सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का संयुक्त प्रभाव .05स्तर पर विधार्थियों के शारीरिक आत्म-प्रत्यय को जबकि .01 स्तर पर बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त आत्म-प्रत्यय की अन्य विमाओं जैसे सामाजिक , स्वभावगत, नैतिक आत्म-प्रत्यय पर विधार्थियों की सामाजिक - आर्थिक स्थिति तथा जाति का कोई सार्थक प्रभाव दृष्टिगत नहीं होता है ।

भाग-चार- अनुसूचित जाति तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया । 2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर उच्च शैक्षिक आकांक्षा-स्तर तथा निम्न शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया । साथ ही आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत विभिन्न शारीरिक, सामाजिक , स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक विमाओं पर शैक्षिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन तथा विश्लेषण किया गया । सामाजिक आत्म -प्रत्यय पर विधार्थियों की जाति का .01स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है जबकि शारीरिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक आत्म प्रत्यय पर जाति तथा शैक्षिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है ।

भाग पाँच - अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया । व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्राप्तांकों के आधार पर चतुर्थांक एक (Q1)तथा चतुर्थांक तीन (Q3)का निर्धारण किया गया

ताकि उच्च व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा- स्तर का निर्धारण किया जा सके । 2x2कारकीय अभिकल्प के आधार पर अनुसूचित तथा सवर्ण जाति के विधार्थियों के आत्म-प्रत्यय पर उच्च तथा निम्न व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया। साथ ही आत्म-प्रत्यय के अन्तर्गत विभिन्न शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक तथा बौद्धिक विमाओं पर व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया । शैक्षिक आत्म-प्रत्यय तथा नैतिक आत्म-प्रत्यय पर विधार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर तथा जाति का संयुक्त प्रभाव सार्थक रूप से .05स्तर पर प्रभावित करता । सामाजिक आत्म-प्रत्यय पर भी विधार्थियों की जाति का सार्थक प्रभाव .05 स्तर परपड़ता है तथा इसी प्रकार शैक्षिक आत्म-प्रत्यय पर भी विद्यार्थियों की जाति का .01 स्तर पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त शारीरिक, स्वभावगत तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय पर जाति तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता ।

प्राप्त परिणामों का शैक्षिक अनुप्रयोग तथा आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव

शिक्षा जगत में विधार्थी एक महत्वपूर्ण परिवर्ती होता है प्रस्तुत अनुसंधान द्वारा सवर्ण तथा अनुसूचित जाति के विधार्थी के आत्म-प्रत्यय का अध्ययन किया गया है । साथ ही आत्म-प्रत्यय पर सामाजिक - आर्थिक स्थिति , मूल्य तथा शैक्षिक- व्यावसायिक आकंक्षा-स्तर के प्रभाव का अध्ययन किया गया है । अनुसंधान के परिणामों द्वारा ज्ञात हुआ कि आत्म- प्रत्यय पर जाति सार्थक प्रभाव पड़ता है सवर्ण जाति के विधार्थी कातथा अनुसूचित जाति के विधार्थी का आत्म-प्रत्यय भिन्न-भिन्न प्रकार का होगा । अध्यापक, परामर्श दाता अथवा व्यावसायिक निर्देशकों का यह दायित्व है कि इन तथ्यो की जानकारी के आधार पर विधार्थियो से व्यवहार करें। तथा उन्हें सामान जाति तथा धर्म के आदर्शों का अनुपालन करने की सलाह दें ।

व्यक्ति के विभिन्न मूल्यों का उसके आत्म-प्रत्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । केवल स्वास्थ्य मूल्य ही विधार्थीयों के आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है । इसी प्रकार विधार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा जाति का संयुक्त प्रभाव उनके शारीरिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय को सार्थक रूप से प्रभावित करता है । विधार्थी जैसी सामाजिक-आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित होगा उसी के अनुरूप उसका शारीरिक तथा बौद्धिक आत्म-प्रत्यय निर्मित होगा । इसी प्रकार

विधार्थियों का शैक्षिक तथा व्यावसायिक आकांक्षा-स्तर भी उनके आत्म-प्रत्यय को प्रभावित करता है । इस प्रकार विधार्थी की जाति, मूल्य, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा शैक्षिक-व्यवसायिक आकांक्षा- स्तर का आत्म-प्रत्यय पर क्या प्रभाव पड़ता है ? इसकी जानकारी के आधार पर अध्यापक ,निर्देशक, परामर्शदाता आदि अपने दायित्व का अधिक प्रभावी रूप से अनुपालन कर सकते है ।

आगामी अध्ययनों हेतु सुझाव -

प्रस्तुत अनुसन्धान के द्वारा प्राप्त महत्वपूर्ण परिणामों के आधार पर यह माना जा सकता हैं कि ग्रामीण तथा शहरी विधार्थियों के आत्म - प्रत्यय के मध्य सम्बन्धों का अध्ययन किया जा सकता हैं। साथ ही छात्र - छात्राओं के आत्म - प्रत्यय के मध्य अध्ययन किया जा सकता हैं इसके अतिरिक्त आत्म - प्रत्यय तथा समायोजन स्तर के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन कर आगामी महत्वपूर्ण अनुसन्धान किये जा सकते हैं, जो कि विधार्थी के आत्म - प्रत्यय के सम्बन्ध में अधिक महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगे ।

BIBLIOGRAPHY

1. Ansari, G.A.(1976) A manual of level of aspiration as a dimention of personality, mansayana, Delhi

2. Alomar Bader Omar(1981), 'An experimental study of a student teaching and its effect on his academic self-concept, self-concept, socio-economic status and ideal academic self-concept'. Diss. Abst. March 81, Vol. 41, No. 9, PP3946 A

3. Baldwin, J.P.(1970) ' Analysis of relationship between Self esteem, academic achivement, level of aspiration for a group of college students.

Diss; Abst.2nt., Vol.31, No.1 July 1970, PP207 A

4. Benninga Jacques Spencer(1977) 'The relation of self-concept, sex and intelligence to moral judgement in young children', Diss. Abst.2nt April 7, Vol37, No.10 A, PP6357 A

5. Bhargava, M (1978) Modern Psychological testing and measurement IV Hindi edition 1978

6. Crow, L.D. and Alice Crow(1964) Eucational Psychology (Revised edition) Eurasia Publishing House Pvt. Ltd., New Delhi

7. Comb, C. (1964) Perception of self and scholastic under achivement among academically capable, Person and Guide Jr, Vol 42, PP47-51

8. Denton, F.A. (1974) 'An investigation of self-concept as related to teacher'. Pupil report and effectiveness of student teaching. Diss Abst. 2nt, Vol 34, No.9, March 74, PP5709 A

9. Don C. Dinkmeyer - Child development, the emerging self. Prentice Hall of India Pvt. Ltd. 1967

10. Edward(1971) 'Experimental design in Psychological Research., Third Edition, Amerind Publishing Company Pvt. Ltd., New Delhi, Indial Edition 1971.

11. Engel, P. 'The stability of self-concept in adolescent journal of abnormal and Social Psychology' No.58, Page 211-215

12. Fryer Forrest, W.(1964), 'An evaluation of level of aspiration as a training procedure', Engelwood cliff N. J. Prentice Hall.

13. Frye Evelyn Mercrary(1976) 'A study of the effect of a high school Psychology course in counselling on the self-concept and interpersonal skills of adolescents, George Peabody college for teacher (1976), Diss. Abst, 2nt, Vol 37 No.8 A, PP4982 A

14. Good and Hatt(1952) Methods in social research Mc Graw Hill book comapny, 2 no. Tokya Kogakusha Company Ltd.

15. Guilford, J. P.(1959) Personality, Mc Graw Hill Book Company, New York.

16. Guilford, J. P.(1963) Fundamental statistics in Psychology and education IV edition New York Mc Graw Hill Book Company.

17. Garret H. E.(1966) Statistics in Psychology and education Bombay Vakils Feffer and simons Pvt. Ltd., Bombay.

18. Hurlock, E. B.(1974) Developmental Psychology IIIrd edition Mc Graw Hill Book Company, New York.

19. Hurlock, E. B.(1976) Personality Development, Tata Mcgraw Hill Book Company, New York.

20. Hutchison, Margaret Louis(1977) Level of aspiration in elementry age children as a function of age, self-concept and Body estimation, Diss. Abst.2nt, June 1977, Vol 37, No.12, PP 7614 A

21. Jordan, G, Winford(1981) The performance of bearning disabled and average achieving pupils on selected self-concept measures'. Diss. Abst. 2nt., Aug 1981, Vol 42, No.2 PP 613 A

22. Kuppuswami, B. ' A text book of child behaviour and development'. Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

23. Krupezak, W.P.(1973),' Relationship among student self-concept of academibility. Teacher perception of student academic ability and student achivements'. Diss. Abst, 2nt. Vol 33, No.7, Jan 1973, PP 3388 A.

24. Kroger jane elizabeth (1977) ' Residential mobility and self-concept in adobescente'. The Florida State University (1977) Diss. Abst. 2nt, Vol 38, No.5, PP 2666 A.

25. Legg Curtis (1981) ' A study of the relationship between the Psychological variables of self-concept, self acceptance and locus of control in children and adolescents'. Diss. Abst, 2nt, Dec 1981, Vol 42, No.66, PP 2575 A.

26. Parkin' H. V.(1958) Factors influencing changes in children's self-concept. Child Development 229-230

27. Ram Kumar, V.(1969) Self-concept and achivement, Trivendram, Radha Publication PP 91-94.

28. Roy Louis Aime (1981) The relationship of sex role orientation and self-esteem with comprehensive and vocational and technical high school students. Diss. Abst, 2nt, Dec 1981, Vol 42, No.6 PP 2581 A.

29. Sharma, Sagar(1972) ' Self acceptance and socio-economic status'. Journal of education and Psychology, Vol 29 No.4.

30. Steger, H. L. (1976) 'Dimensions and correlates of children self-concept'. Diss. Abst. 2nt, Vol 37, No.1 July 1976.

31. Sherry, G And Dr. R. P. Verma ' A manual for Swatva Bodh Pariskshan. A test of self-concept. National Psychological Corporation, Agra.

32. Srivastava, Ramji and Q. G. Alam(1983) 'Self perception as a function of adjustment and anxiety' Indian Psychological review Vol 24, No.3.

33. Tewari, Govind and Tasneem Naqvi(1979) Social Class and sex as correlated of self-esteem, A Quarterly research journal Vol 17, No.3-4

34. Uniyal, M. P. and Beena Shah(1981) A study of job satisfaction of secondary 6666666school teachers in relation to their self concept.

Education in India, Nov.1981, Vol 61, No. 11.

35. Widlak E. Walter(1984) 'A longitudinal study of innercity elementary school children's academic achivement. self-concept and attitude towards school' Diss Abst, 2nt, March 1984, No.9, PP 2721 A.

परिशिष्ट(अ)

(i) अनुसूचित जाति के छात्रों के सामाजिक आर्थिक-स्तर, आकांक्षा-स्तर, मूल्य एवं आत्म-प्रत्यय

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
1	85	52	33	12	22	10	6	11	20	9	11	10	7	39	29	39	39	30	36	212
2	110	61	37	15	18	14	8	11	13	8	13	7	9	28	23	33	33	33	23	173
3	82	46	40	13	16	22	12	9	10	10	7	6	13	41	35	35	40	36	30	217
4	73	63	35	6	15	15	9	9	18	11	11	11	13	31	32	34	31	32	23	183
5	117	46	32	7	17	20	14	5	16	9	8	8	11	25	26	28	26	32	21	158
6	41	46	46	9	18	18	10	6	12	9	9	15	10	27	33	35	33	33	30	191
7	69	49	46	5	21	16	9	12	10	5	12	9	10	29	19	34	36	34	29	181
8	147	59	55	15	7	10	9	10	9	12	12	14	17	29	12	41	35	35	29	181
9	115	54	48	4	18	10	10	14	10	13	11	17	11	38	34	41	34	35	28	210
10	173	58	41	8	17	13	10	12	21	10	7	5	14	28	19	25	26	19	26	143
11	147	20	34	8	16	17	10	5	21	10	2	15	12	27	33	35	29	35	26	185
12	90	50	39	7	19	21	12	9	22	3	5	12	10	29	21	33	38	33	29	183
13	118	54	17	12	17	19	18	12	8	7	4	17	9	29	26	30	32	30	24	171
14	122	42	52	6	8	16	12	10	16	13	9	16	14	27	31	34	35	33	31	141
15	42	42	49	14	14	12	8	8	13	11	11	15	10	31	28	28	32	31	32	182
16	152	53	38	9	19	19	9	10	17	13	6	9	10	29	26	30	31	27	32	175
17	148	51	39	8	16	20	4	12	17	12	7	12	9	22	28	26	27	26	26	155
18	125	58	52	10	16	15	10	12	19	3	7	15	10	30	27	29	33	29	23	171
19	115	58	46	12	18	16	6	11	14	7	6	16	15	26	21	29	28	32	23	159
20	70	59	41	14	14	16	11	11	13	11	13	8	9	29	22	32	28	25	29	165
21	44	57	45	11	8	11	14	12	13	12	12	11	12	32	32	30	34	32	26	186
22	70	55	43	14	13	11	9	9	12	12	11	15	10	20	35	36	37	33	30	201
23	150	50	36	13	16	16	8	13	12	6	12	9	9	25	34	31	36	37	29	192
24	125	43	30	12	15	8	11	16	10	6	16	11	10	33	28	37	36	39	30	203
25	72	52	40	9	17	18	9	11	13	7	13	12	10	22	29	27	30	33	26	167
26	83	55	35	7	19	19	9	17	15	7	8	10	9	29	31	21	36	31	18	166
27	104	51	49	60	17	18	6	12	17	10	9	9	10	31	24	30	25	28	24	162
28	89	55	37	7	19	18	9	10	17	9	7	13	10	24	27	29	31	32	25	168
29	142	66	41	10	15	8	10	10	16	10	16	14	6	33	33	34	26	37	20	108
30	108	49	31	8	10	14	11	10	19	12	7	10	14	33	31	32	28	28	24	176

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
31	160	63	27	10	19	18	6	15	17	16	8	7	6	36	34	37	39	29	25	200
32	72	67	49	9	15	13	13	14	9	3	14	16	12	29	37	30	33	30	24	183
33	88	39	38	13	16	13	8	11	11	9	13	16	11	36	37	39	38	33	29	212
34	114	26	53	9	16	5	8	12	22	14	12	6	6	24	25	31	32	26	29	167
35	54	52	31	11	16	14	7	13	14	11	11	15	10	28	29	33	30	31	19	170
36	73	47	31	11	21	11	6	9	17	13	12	7	8	30	27	37	39	25	30	188
37	131	38	40	11	10	22	14	16	10	12	7	13	5	32	28	36	33	35	32	196
38	109	55	38	10	11	17	12	7	16	14	12	12	9	29	27	32	31	26	23	168
39	106	50	41	7	21	14	11	10	19	9	7	7	15	33	27	32	39	38	28	197
40	165	41	45	15	8	10	8	9	11	7	8	9	10	40	40	40	39	36	23	218
41	163	40	42	17	18	12	10	12	13	9	10	11	15	28	18	26	23	24	21	140
42	123	41	41	12	11	15	10	13	16	13	10	15	5	25	17	28	37	30	25	162
43	54	52	42	13	9	14	18	12	16	9	13	17	14	24	31	29	29	30	24	167
44	83	51	54	17	12	12	14	8	16	15	8	10	8	39	40	39	37	38	30	123
45	118	44	44	10	18	15	12	11	15	8	12	9	10	31	22	36	29	26	30	174
46	62	32	35	20	9	11	10	11	11	11	13	13	7	27	23	36	33	31	24	174
47	53	52	40	14	14	11	12	14	6	8	9	9	14	30	33	26	28	26	20	163
48	77	49	61	16	14	8	5	14	14	10	7	19	12	40	36	40	39	26	23	204
49	129	73	41	17	13	14	9	6	8	17	11	15	12	34	35	35	35	37	26	202
50	108	59	35	10	10	13	9	13	18	6	13	17	11	31	28	32	30	27	21	169
51	123	53	44	14	10	6	17	8	14	16	14	9	12	36	32	37	40	34	35	214
52	30	35	50	15	14	16	7	12	10	13	8	13	8	29	31	31	38	28	25	182
53	122	66	51	12	10	8	14	15	11	14	13	14	12	28	36	39	37	35	33	208
54	78	43	43	13	12	13	10	9	4	5	12	11	16	39	35	32	40	38	36	220
55	117	29	48	11	16	14	9	7	19	9	8	14	13	35	25	28	37	38	30	203
56	53	47	49	7	14	11	12	9	6	9	12	12	7	28	32	34	37	36	26	193
57	77	54	60	13	12	14	13	6	14	10	11	13	13	38	20	36	40	17	37	188
58	142	60	57	9	9	14	12	15	7	11	10	13	18	22	28	27	26	30	22	155
59	109	20	55	10	14	15	9	9	17	14	12	11	8	36	25	38	39	23	29	189
60	162	20	44	16	15	10	9	16	12	6	13	11	10	26	30	35	33	33	21	178
61	120	62	45	17	12	18	13	12	15	8	9	16	10	24	30	35	33	31	23	176
62	114	60	47	12	11	17	9	12	14	10	8	12	11	31	30	35	35	37	30	198
63	88	59	54	15	16	13	12	12	6	12	11	10	13	25	30	32	31	32	25	175
64	104	18	49	15	13	11	11	11	12	17	8	19	6	32	35	32	34	28	28	189

	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
क्रमांक		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
65	141	53	28	15	10	12	11	12	11	13	7	14	14	31	30	27	31	28	19	166
66	110	59	48	13	7	13	15	12	14	16	10	13	7	23	25	28	25	27	24	152
67	80	57	51	14	13	7	10	11	11	15	13	17	9	22	20	28	22	9	20	121
68	103	25	44	15	11	12	15	13	11	8	10	12	15	29	26	34	37	32	32	190
69	54	46	32	12	15	9	10	12	15	12	8	14	12	39	31	38	36	40	36	220
70	108	48	41	9	13	13	7	12	15	8	13	18	12	23	34	37	31	32	27	184
71	138	48	45	11	14	13	12	12	7	12	14	10	15	39	26	40	34	35	27	201
72	105	64	44	11	12	9	14	11	9	13	9	19	10	29	25	30	34	31	24	173
73	78	35	50	11	16	17	6	13	15	10	13	7	10	30	20	35	32	25	29	160
74	86	36	43	15	15	11	10	13	14	10	5	16	11	25	35	28	28	20	30	166
75	110	39	54	10	13	14	10	13	14	11	9	12	14	32	31	35	24	29	32	183
76	208	49	32	20	15	6	13	9	14	10	9	12	12	29	31	30	33	39	29	191
77	115	31	32	20	15	10	12	17	11	14	11	11	13	29	28	33	36	32	29	187
78	115	52	41	16	13	18	8	9	16	7	8	8	15	30	33	34	38	32	28	195
79	72	48	42	18	12	15	6	14	13	11	10	12	9	31	28	24	30	28	35	176
80	263	59	43	11	21	13	7	11	16	13	9	10	9	32	29	29	25	25	23	165
81	87	40	38	10	14	12	10	11	12	12	10	12	15	26	26	32	36	35	35	190
82	77	45	55	21	12	9	8	9	14	17	8	9	13	31	29	34	30	32	29	185
83	255	62	35	12	9	10	13	12	16	12	14	14	11	36	39	39	40	40	32	225
84	137	49	38	14	14	15	13	9	16	9	7	12	11	36	37	38	39	32	29	211
85	71	49	60	13	11	15	11	12	13	12	8	13	11	40	33	30	39	40	28	210
86	203	40	36	14	17	12	14	11	13	11	10	10	8	29	33	35	38	36	32	203
87	114	35	36	16	8	17	10	12	11	10	14	10	10	35	33	29	32	36	38	203
88	210	55	41	12	19	18	14	5	18	6	5	12	11	32	29	33	38	32	32	196
89	162	41	39	10	16	19	13	10	15	9	6	8	10	30	28	33	36	44	31	202
90	156	49	38	7	20	14	11	9	17	8	7	7	11	28	24	36	35	26	33	182
91	227	50	49	10	6	11	14	12	17	8	10	13	15	33	26	29	32	29	26	175
92	88	59	38	11	17	14	11	12	14	9	8	12	11	33	20	36	37	26	28	180
93	218	57	46	9	17	18	13	8	15	5	10	9	9	25	25	26	31	20	16	143
94	114	47	34	11	10	13	8	9	11	10	10	10	7	30	25	34	35	31	32	187
95	212	49	37	12	11	16	7	9	16	5	11	11	9	37	20	35	36	23	35	186
96	182	44	41	15	14	16	11	3	17	8	12	8	10	36	29	35	30	37	31	198
97	187	54	41	15	16	18	10	11	17	12	5	6	9	33	31	34	36	35	26	195
98	309	48	36	9	16	19	14	8	16	6	8	15	11	38	35	36	38	28	32	207

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
99	49	53	39	16	18	16	15	8	17	10	2	5	11	31	27	31	31	22	31	173
100	98	45	39	13	21	17	12	7	19	8	3	11	10	30	28	36	30	25	30	179
101	83	50	30	10	20	8	4	9	18	7	9	8	5	38	28	39	39	30	36	210
102	108	59	35	13	16	12	6	9	11	6	7	5	7	27	22	32	33	33	23	170
103	80	44	38	11	14	20	10	7	8	8	8	4	11	40	34	35	40	36	30	215
104	71	61	32	4	13	13	7	7	16	9	9	8	11	30	31	33	31	32	23	180
105	115	44	30	5	15	18	12	5	14	7	6	6	9	28	21	25	26	19	26	145
106	81	61	33	15	18	14	8	11	13	8	13	7	9	28	20	28	31	30	30	167
107	81	63	40	6	15	15	9	9	18	11	11	11	13	43	37	37	42	38	30	227
108	181	46	32	9	18	18	10	6	12	9	9	15	10	33	31	30	23	32	31	180
109	109	59	46	15	7	10	9	10	9	12	12	14	17	31	27	30	25	31	32	176
110	177	58	48	8	17	13	10	12	21	10	7	5	14	40	33	37	27	35	34	206
111	112	50	34	7	19	21	12	9	22	3	5	12	10	28	33	36	33	30	33	193
112	148	52	37	12	22	10	6	11	20	9	11	10	7	25	28	30	32	33	25	173
113	182	46	35	13	16	22	12	9	10	10	7	6	13	27	26	28	30	24	23	158
114	92	46	46	7	17	20	14	5	16	9	8	8	11	29	28	34	38	34	30	193
115	208	49	55	5	21	16	9	12	10	5	12	9	10	34	32	33	24	28	28	179
116	111	54	41	4	18	10	10	14	10	13	11	17	11	38	20	36	40	17	37	188
117	177	20	39	8	16	17	10	5	21	10	2	15	12	27	22	35	31	33	24	172
118	53	56	19	14	19	21	20	14	10	9	6	17	11	33	30	34	32	29	21	179
119	99	44	54	8	10	18	20	12	7	6	13	11	18	21	34	32	33	29	30	179
120	138	44	51	15	16	14	10	3	8	12	8	15	16	36	25	38	39	23	29	189
121	108	55	43	9	6	9	12	10	15	10	10	9	10	27	30	33	40	27	31	188
122	77	57	45	16	15	13	11	11	14	14	13	15	12	28	34	31	32	27	32	184
123	198	51	37	14	17	17	9	14	13	7	13	10	10	28	28	31	33	31	29	180
124	97	41	28	10	13	6	9	14	8	6	14	9	8	34	25	36	39	38	33	205
125	248	54	42	11	19	18	11	13	15	9	15	14	12	26	24	33	34	31	29	177
126	133	56	36	8	20	20	10	18	16	8	9	11	10	29	29	36	36	36	27	193
127	76	51	49	7	17	18	6	12	17	10	9	9	10	36	31	35	36	35	28	201
128	115	94	36	6	18	17	8	9	16	8	6	12	9	26	31	35	36	34	33	195
129	209	64	39	8	13	6	8	9	14	8	14	12	6	24	30	34	36	29	28	181
130	163	51	33	10	12	16	13	12	19	14	9	12	16	36	17	36	38	27	30	184
131	148	64	28	11	20	20	8	17	19	18	10	8	7	36	19	36	39	26	30	186
132	100	67	49	9	15	13	13	14	9	4	14	16	12	28	34	31	25	25	32	175

	सामाजिक-आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
क्रमांक		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
133	105	41	40	15	18	15	10	13	13	11	15	18	13	31	27	31	35	36	25	185
134	106	27	54	11	17	16	9	13	23	15	13	7	7	33	21	33	39	29	27	182
135	182	52	31	11	16	14	7	13	14	11	11	15	10	33	28	23	36	30	26	176
136	136	47	31	11	21	11	6	9	17	13	12	7	8	31	27	33	29	31	26	177
137	137	36	38	9	8	20	12	14	8	10	5	11	7	29	21	33	38	33	29	183
138	132	53	36	8	9	15	10	5	14	12	10	10	7	29	26	30	32	30	24	171
139	139	48	40	5	19	12	9	8	17	7	5	5	13	37	28	23	36	26	21	171
140	140	39	43	13	6	8	6	7	9	5	6	7	8	28	21	28	31	30	30	168
141	108	38	40	15	16	10	8	10	11	5	8	9	13	25	30	32	35	27	29	178
142	111	39	43	10	9	13	8	11	14	11	8	13	3	30	35	30	35	19	25	174
143	118	50	40	11	7	12	16	10	14	7	11	15	12	30	30	35	32	35	28	191
144	90	49	52	15	10	10	12	6	14	13	2	8	6	32	26	30	32	29	27	176
145	108	42	42	8	16	13	10	9	13	6	10	7	8	28	32	29	34	29	30	182
146	143	30	33	18	7	9	8	9	9	9	11	5	12	30	35	30	35	29	32	191
147	148	50	38	12	12	9	10	12	4	6	7	12	14	29	27	32	32	28	34	182
148	271	47	59	14	12	4	5	12	12	8	5	17	10	30	32	30	33	27	30	182
149	110	70	40	10	10	13	9	13	18	6	13	17	11	33	25	32	35	29	27	181
150	54	55	35	17	13	14	9	6	8	11	11	15	12	27	34	27	38	33	29	188
151	40	55	46	16	12	8	17	10	16	17	16	11	13	27	25	31	41	28	39	191
152	71	37	52	17	16	17	9	14	12	15	10	15	10	33	26	32	35	23	29	178
153	81	51	66	14	12	10	16	17	13	16	15	13	14	33	29	34	35	33	39	203
154	169	45	45	15	14	15	12	11	6	7	14	16	17	36	35	26	31	40	33	201
155	123	31	50	13	17	16	11	9	19	11	10	16	15	34	33	32	32	36	33	200
156	84	55	49	9	16	13	14	11	8	11	14	14	9	33	32	32	36	33	30	193
157	100	56	60	15	14	16	15	8	16	12	13	15	15	30	21	23	30	23	36	163
158	97	62	59	11	11	16	14	17	9	13	8	15	18	29	29	38	28	27	29	180
159	100	25	57	14	10	9	15	9	14	17	12	8	11	21	33	19	34	12	19	138
160	58	25	46	10	15	16	12	16	9	13	12	16	11	34	41	41	25	35	33	209
161	45	45	62	10	16	9	8	15	12	13	8	12	17	39	26	40	33	36	38	212
162	45	47	60	12	12	8	10	14	12	9	17	11	12	35	35	19	35	33	34	191
163	60	54	59	13	10	11	12	6	12	12	13	16	15	26	26	28	29	29	29	167
164	71	49	18	11	13	15	11	19	8	11	11	12	6	31	28	22	32	27	26	166
165	59	28	53	14	14	7	13	11	12	11	12	10	15	22	29	31	27	29	30	168
166	47	48	59	7	13	10	16	14	12	15	13	7	13	30	34	28	30	26	29	177

	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
क्रमांक		व्यावसायिक	शैक्षणिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
167	60	51	57	9	17	13	15	11	11	10	7	13	14	33	27	31	32	35	32	190
168	91	44	25	15	12	10	8	11	13	15	12	11	15	30	33	31	27	26	29	176
169	41	32	46	14	14	8	12	15	12	10	9	15	12	33	23	26	32	32	31	177
170	101	41	48	12	18	13	8	15	12	7	13	13	9	24	26	27	32	30	25	164
171	56	46	43	9	12	11	10	10	5	10	12	8	13	28	34	35	32	22	21	172
172	62	62	42	9	11	5	12	9	7	11	7	17	8	29	32	30	36	31	37	195
173	111	33	48	9	14	15	6	13	14	8	11	5	8	36	36	37	34	28	28	199
174	103	34	40	13	13	9	8	13	15	10	5	14	11	32	25	32	33	37	39	198
175	61	40	55	8	11	12	8	11	12	9	7	10	12	30	29	30	26	29	23	167
176	79	47	31	18	13	5	11	7	12	8	7	10	10	33	33	24	31	29	22	172
177	94	30	32	7	10	8	10	15	9	12	9	9	11	29	31	24	27	33	31	175
178	91	50	40	14	11	16	6	7	14	9	6	6	13	32	34	29	30	31	27	183
179	96	50	40	16	10	13	5	12	11	9	8	10	7	30	36	25	31	26	28	176
180	54	60	40	9	19	15	5	9	19	11	7	8	7	28	37	32	28	31	33	189
181	86	38	40	12	16	14	12	13	14	14	12	14	17	36	29	36	24	28	30	183
182	85	47	57	23	14	9	10	11	16	19	10	11	15	29	25	25	37	30	34	180
183	78	64	37	14	11	12	15	14	18	14	16	16	13	37	34	39	31	33	35	209
184	79	51	40	16	16	17	15	11	18	11	9	14	13	39	34	32	38	35	39	217
185	76	51	62	15	13	17	13	14	15	14	10	15	13	29	31	33	26	31	35	185
186	100	42	38	16	19	14	16	13	15	13	12	12	10	30	19	29	29	24	25	156
187	54	37	38	18	10	19	12	14	13	12	16	12	12	32	23	28	23	21	25	152
188	54	57	43	14	21	20	16	7	20	8	7	14	13	30	24	36	38	26	35	189
189	87	43	41	12	18	21	15	12	17	11	8	10	12	33	32	39	39	23	37	203
190	108	51	40	9	22	16	13	11	19	10	9	9	13	29	28	26	40	32	30	185
191	89	52	51	12	8	13	16	14	19	10	12	15	17	28	27	40	18	17	31	161
192	133	61	40	13	19	16	13	14	16	11	11	14	13	24	25	28	40	33	29	179
193	67	59	48	11	19	20	15	10	17	7	12	11	11	39	31	27	30	40	34	201
194	108	49	36	13	12	15	10	11	13	12	12	12	9	35	36	35	23	22	40	191
195	99	51	39	14	13	18	9	11	18	7	13	13	11	39	36	36	26	40	35	212
196	112	46	43	16	15	17	12	4	18	9	13	9	12	35	39	28	35	29	37	202
197	65	56	43	14	17	19	11	12	18	13	6	7	11	38	26	31	26	26	37	186
198	54	50	38	10	17	20	15	9	17	7	9	16	13	26	23	20	24	30	30	153
199	97	55	41	17	19	17	16	9	18	11	3	6	13	21	35	25	33	26	30	170
200	100	47	37	15	23	19	14	9	21	10	5	13	12	38	38	35	28	34	27	200

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
201	116	58	33	10	22	12	20	11	6	10	11	9	8	28	23	33	33	33	23	173
202	73	54	37	20	17	16	18	9	14	11	13	8	10	31	32	34	31	32	23	183
203	41	59	40	15	15	13	10	11	9	9	7	10	12	33	27	33	35	30	33	191
204	147	49	35	22	16	7	13	9	12	5	11	11	12	29	35	41	35	29	12	181
205	173	46	32	14	18	6	10	5	8	9	9	9	12	34	38	34	41	28	35	210
206	90	46	46	13	7	9	12	6	9	12	10	9	10	35	33	27	26	35	29	185
207	118	63	46	10	21	5	16	12	10	10	11	5	10	24	30	32	29	26	30	171
208	42	61	55	10	18	15	10	10	10	13	12	12	18	28	28	31	31	32	32	182
209	148	62	48	16	18	4	9	14	9	10	11	13	11	22	28	26	23	26	26	155
210	115	46	40	13	16	22	12	9	10	10	7	6	13	26	21	29	28	32	23	159
211	44	55	35	14	24	12	8	13	22	11	13	12	9	32	32	30	34	32	26	186
212	150	63	39	17	20	16	10	13	15	10	15	9	11	33	28	37	36	39	30	203
213	72	48	42	15	18	24	14	11	12	12	9	8	15	22	29	27	30	33	26	167
214	104	65	37	8	17	17	11	11	20	12	12	13	13	31	24	30	25	28	24	162
215	142	48	34	9	19	22	16	7	18	11	10	10	12	33	33	34	26	37	20	183
216	160	48	48	11	10	20	12	8	14	11	11	17	12	36	34	37	39	29	25	260
217	88	51	48	7	23	18	11	14	12	7	13	11	19	36	37	39	38	33	29	212
218	54	61	57	17	9	12	11	12	11	14	14	16	13	28	25	33	34	31	19	170
219	131	56	50	6	20	12	12	16	15	15	13	19	16	32	27	37	33	35	32	196
220	106	60	43	10	19	15	12	14	23	12	9	7	14	33	27	32	39	38	28	197
221	165	22	36	10	18	19	12	7	23	12	4	17	15	28	18	26	23	24	21	140
222	54	52	41	9	21	23	14	11	24	5	7	14	12	24	31	29	29	30	24	167
223	118	56	21	14	19	21	20	14	10	9	19	19	11	31	22	36	29	26	30	174
224	53	44	54	8	10	18	14	12	18	15	18	18	16	30	35	24	28	26	20	163
225	129	44	51	16	16	14	10	10	15	13	13	17	12	34	35	35	35	37	26	202
226	123	55	40	11	21	21	11	12	19	15	8	11	11	36	32	37	40	34	35	214
227	122	53	41	10	18	22	6	14	19	14	9	14	14	28	36	39	37	35	33	208
228	117	60	54	12	18	16	12	14	21	5	9	17	17	35	25	28	37	38	30	203
229	77	60	48	14	20	18	8	13	16	8	8	18	18	22	28	27	26	30	22	155
230	109	61	43	16	16	18	13	13	15	13	15	10	10	36	25	38	39	23	29	189
231	126	59	47	13	10	13	16	14	15	14	14	13	13	24	30	35	33	31	23	176
232	88	57	45	16	15	13	11	11	14	14	13	17	10	25	30	32	31	32	25	175
233	141	52	38	15	18	18	10	15	14	8	14	11	11	31	30	27	31	28	19	166
234	80	45	32	14	17	10	13	18	12	8	18	13	12	22	20	28	22	9	20	121

	[illegible]	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
क्रमांक		[illegible]	[illegible]	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
235	84	54	42	11	14	20	11	13	15	9	15	14	12	39	31	38	36	40	36	220
236	138	57	37	9	21	21	11	19	17	9	10	12	11	39	26	40	34	35	27	201
237	78	52	51	9	19	20	8	14	19	12	11	11	12	30	29	35	32	25	29	160
238	110	57	39	9	21	20	11	12	19	11	9	15	12	32	31	35	24	29	32	183
239	115	68	43	12	17	10	12	13	18	12	18	16	8	29	29	28	33	36	32	187
240	72	51	33	10	12	16	13	12	21	14	9	12	16	31	28	24	30	28	35	176
241	87	65	29	12	21	20	8	17	19	18	10	9	8	26	26	32	36	35	35	190
242	255	69	51	11	17	15	15	15	16	5	16	18	14	31	29	34	30	32	29	185
243	137	41	40	15	18	15	10	10	13	13	11	15	13	35	38	38	38	39	30	217
244	203	28	54	11	18	17	10	14	24	16	14	8	8	40	33	30	39	40	28	210
245	210	52	33	13	18	16	9	15	16	13	13	17	12	32	29	33	38	32	32	196
246	156	49	33	13	23	13	8	11	19	15	14	9	10	28	24	36	35	26	33	182
247	88	40	42	13	12	24	16	18	12	14	9	15	7	33	20	36	37	26	28	180
248	114	57	40	12	13	19	14	9	18	16	14	14	10	30	25	34	35	31	32	187
249	182	52	42	9	23	16	13	12	21	11	9	9	17	36	29	35	30	37	31	198
250	203	43	47	17	10	12	10	11	13	9	10	11	12	38	35	36	38	28	32	207
251	98	42	44	19	20	14	12	14	15	7	12	13	17	33	33	29	32	32	38	197
252	140	43	43	14	13	17	12	15	18	15	12	17	7	31	28	36	30	25	30	180
253	108	54	44	15	11	16	10	12	18	11	15	19	16	29	28	36	36	36	27	192
254	95	53	56	19	14	14	16	10	18	17	10	12	10	34	25	36	39	38	33	205
255	81	46	46	12	20	17	14	13	17	10	14	11	12	24	22	31	32	31	27	167
256	181	34	37	22	11	13	13	12	13	13	13	15	9	28	31	31	36	32	22	180
257	177	54	42	16	16	13	13	14	16	8	10	11	16	37	32	33	40	35	29	206
258	148	51	63	18	16	10	10	7	16	16	12	9	21	31	25	27	36	25	29	173
259	92	75	43	19	15	16	11	8	10	19	13	17	14	30	28	23	37	30	25	193
260	111	61	37	12	12	15	11	15	20	8	15	19	13	27	35	26	36	34	30	188
261	53	55	46	16	12	8	19	10	16	18	16	11	14	32	22	36	34	30	25	179
262	138	37	52	17	16	18	9	14	12	15	10	15	10	33	25	28	33	33	27	189
263	108	68	52	14	12	10	16	17	13	16	15	13	14	38	39	26	40	33	36	212
264	118	45	45	15	14	15	12	11	6	7	14	16	18	34	35	35	19	35	33	191
265	108	31	51	13	18	16	11	9	21	11	10	16	15	28	26	26	28	29	29	166
266	148	49	51	9	16	13	14	11	8	11	14	14	9	30	34	28	30	26	29	177
267	110	56	62	15	14	16	15	8	16	12	13	15	15	30	33	31	27	26	29	176
268	40	62	59	11	11	16	14	17	9	13	12	15	20	24	26	27	32	30	25	164

	[illegible]	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
[illegible]		[illegible]	[illegible]	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
269	81	22	57	12	16	17	11	11	19	16	14	13	10	29	32	30	36	31	37	195
270	123	22	46	18	17	12	11	18	14	8	15	13	12	32	25	32	33	37	39	198
271	86	62	45	19	14	10	15	14	17	10	11	18	12	30	40	40	36	40	36	222
272	78	62	49	14	13	19	11	14	16	12	10	14	14	31	29	34	30	29	32	185
273	76	60	57	17	18	15	14	14	8	14	13	12	15	36	24	28	35	26	33	182
274	54	20	51	17	15	13	13	13	14	19	10	21	8	33	20	36	37	26	28	180
275	87	55	30	17	12	14	13	14	13	15	9	16	16	31	26	35	35	31	32	190
276	89	61	50	15	9	15	17	14	16	18	12	15	9	31	29	29	25	25	23	164
277	67	59	52	16	15	9	12	13	13	17	15	19	11	30	29	33	36	32	29	189
278	99	27	46	17	13	14	17	15	13	10	12	14	17	30	28	23	34	29	32	183
279	65	48	34	14	17	11	12	14	17	14	10	16	14	30	30	31	27	19	28	165
280	97	50	43	11	15	15	9	14	17	10	15	20	14	30	27	31	31	31	22	172
281	150	49	47	13	16	15	14	14	9	14	16	12	17	34	30	34	26	35	36	194
282	72	66	46	13	14	11	16	13	11	15	11	21	12	28	18	26	23	24	21	140
283	104	37	52	13	18	19	8	15	17	12	15	9	12	24	31	29	29	30	24	167
284	142	38	45	17	17	13	12	15	16	12	7	18	13	31	22	36	29	26	30	174
285	160	41	56	12	15	16	12	15	16	13	11	14	16	30	33	26	28	26	20	163
286	88	51	34	22	17	8	15	11	16	12	11	14	14	36	32	37	40	34	35	214
287	54	32	34	11	13	12	14	19	13	16	13	13	15	28	36	39	37	35	33	208
288	131	54	44	18	15	20	10	11	18	9	10	10	17	25	35	37	28	30	38	203
289	106	50	45	20	14	17	8	16	15	13	12	14	11	20	38	36	40	37	17	188
290	114	61	45	13	22	15	9	13	18	15	11	12	11	29	32	30	34	29	31	185
291	114	42	40	12	16	14	11	12	14	14	12	14	17	30	39	38	38	38	35	217
292	110	47	57	22	14	11	10	11	16	19	10	11	15	28	40	39	30	33	40	210
293	103	65	37	14	11	12	15	14	18	14	16	16	13	32	32	38	33	29	32	196
294	108	51	40	16	16	17	15	11	18	11	9	14	13	33	26	35	36	24	28	182
295	105	49	62	15	13	17	13	14	15	14	10	15	13	28	26	37	36	20	33	180
296	86	42	38	16	19	14	16	13	15	13	12	12	10	32	31	35	34	25	30	187
297	208	55	41	12	19	18	14	5	18	6	5	12	11	30	37	31	35	29	36	198
298	125	37	38	18	10	19	10	14	13	12	16	12	12	38	28	32	36	35	38	207
299	263	50	38	11	18	21	16	10	18	8	10	17	13	36	30	30	25	30	28	179
300	58	53	39	16	18	16	15	10	19	10	12	17	12	31	28	40	33	30	27	189

परिशिष्ट (ब)

(ii) सवर्ण जाति के छात्रों के सामाजिक आर्थिक-स्तर, आकांक्षा-स्तर, मूल्य एवं आत्म-प्रत्यय

	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
क्रमांक		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
1	72	54	45	7	14	18	6	9	13	9	10	16	10	30	40	38	37	40	37	222
2	117	57	30	15	10	14	13	14	8	10	10	12	14	38	32	39	31	37	25	202
3	108	44	60	12	14	14	12	7	16	10	12	14	15	28	32	31	36	33	25	185
4	88	63	42	14	14	12	9	13	11	10	11	13	13	25	38	27	30	37	32	189
5	111	52	37	17	11	16	9	9	11	12	7	15	13	28	33	29	29	35	28	182
6	88	33	47	13	9	12	16	13	11	14	6	10	14	28	37	34	31	32	30	192
7	119	30	44	13	9	11	9	14	14	13	8	14	15	30	36	26	22	38	28	180
8	204	35	40	13	11	10	10	17	10	10	13	15	11	32	20	28	25	30	25	160
9	184	52	55	11	11	14	7	16	15	13	7	15	11	20	35	38	27	36	34	190
10	68	54	47	16	11	11	10	11	10	11	14	15	11	37	40	26	39	35	32	207
11	170	66	46	18	16	17	8	8	11	11	8	10	14	25	23	30	32	31	23	164
12	127	44	48	9	15	12	8	11	9	12	12	15	13	25	30	35	30	30	30	180
13	152	51	40	15	15	11	16	10	14	10	12	11	6	28	27	32	35	32	35	189
14	210	41	54	9	16	13	9	14	17	10	11	13	8	25	31	34	31	36	33	190
15	146	50	40	11	20	14	10	11	16	11	8	11	9	27	28	28	32	37	31	183
16	173	51	44	16	15	11	14	8	15	9	9	15	8	23	30	25	28	19	24	149
17	212	64	33	10	10	12	14	9	14	12	10	17	12	20	32	36	26	27	24	165
18	202	61	48	12	16	14	13	11	13	10	8	9	12	31	35	25	40	32	9	172
19	51	50	41	15	12	15	17	9	14	12	10	11	5	22	37	36	31	34	34	194
20	146	63	46	14	14	8	7	12	16	15	9	13	13	30	40	37	38	34	28	207
21	58	65	39	11	17	12	8	9	16	13	10	13	11	25	26	34	31	26	20	162
22	51	53	70	15	14	14	13	13	14	8	12	10	7	29	39	23	39	29	22	181
23	128	49	59	14	9	15	10	13	8	10	13	10	18	30	25	32	29	29	30	175
24	75	33	50	12	16	16	10	10	15	6	9	12	14	33	28	31	31	35	39	197
25	144	42	39	12	8	8	11	14	19	10	12	11	15	35	28	35	30	33	34	195
26	157	55	34	13	13	13	8	14	16	15	11	7	13	38	36	33	24	28	32	191
27	132	57	51	11	10	12	11	11	16	14	9	17	9	25	20	29	39	32	32	177
28	175	44	59	7	15	11	13	10	15	11	13	9	14	28	27	29	32	30	29	185
29	188	51	54	15	9	13	12	10	15	8	11	16	12	35	23	35	29	33	30	192
30	165	50	28	9	9	18	7	7	17	11	16	12	14	39	33	32	35	25	28	189

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
31	175	54	51	15	13	13	10	11	9	12	12	15	10	28	27	29	32	30	29	175
32	181	52	34	10	21	16	10	11	9	7	13	10	12	38	35	40	32	29	24	198
33	154	57	28	15	15	7	12	6	13	11	18	14	10	38	33	29	26	29	28	183
34	156	26	39	11	15	7	10	16	16	8	13	14	14	31	32	26	31	31	35	186
35	285	52	31	15	13	8	7	16	16	8	11	19	7	36	40	29	32	30	28	195
36	235	44	39	9	11	19	15	16	9	10	9	14	8	24	28	29	33	33	37	184
37	124	48	38	10	9	18	9	13	14	11	10	12	14	38	30	35	33	33	36	205
38	127	42	57	17	11	19	13	8	13	8	7	12	13	35	36	38	38	39	39	225
39	108	46	43	12	10	12	12	7	12	14	16	10	13	32	40	26	32	44	26	200
40	113	51	35	12	15	11	16	8	18	9	13	14	7	33	27	32	32	28	39	195
41	168	58	47	15	8	13	16	9	16	10	7	15	11	26	28	16	32	35	31	168
42	138	42	38	9	9	14	12	14	8	15	13	12	14	26	31	31	30	31	32	181
43	110	57	42	18	16	9	12	11	11	12	11	15	5	29	33	29	27	28	33	179
44	245	62	47	18	17	17	8	8	12	10	8	8	13	28	30	30	25	27	26	166
45	153	56	56	16	14	9	8	13	17	7	7	19	10	26	29	24	21	30	32	162
46	260	64	44	11	12	9	14	11	9	13	9	19	10	30	26	30	33	31	30	180
47	167	61	45	10	13	15	14	10	11	12	9	10	13	29	36	25	26	27	29	172
48	181	55	57	15	13	13	9	12	12	6	9	12	7	34	35	36	31	38	31	205
49	165	64	44	14	13	14	10	11	16	14	12	12	5	27	27	25	22	28	35	164
50	156	51	43	15	17	17	7	9	13	7	10	15	10	37	23	31	20	26	39	176
51	120	60	46	13	16	9	10	11	16	12	11	10	12	31	37	31	35	36	30	200
52	121	52	50	12	18	14	7	10	17	10	7	15	10	38	31	30	40	32	33	204
53	125	41	41	13	14	10	8	8	18	11	12	13	14	39	34	36	36	36	36	217
54	110	62	51	9	8	15	15	10	12	13	14	10	13	36	38	25	35	39	36	209
55	143	56	28	11	18	14	12	6	12	13	8	13	10	29	38	32	36	31	25	191
56	260	63	28	8	17	14	11	8	15	11	10	11	11	33	26	29	36	20	33	177
57	167	52	55	11	10	17	13	5	16	9	13	9	11	25	25	26	34	25	30	165
58	181	57	49	8	9	17	14	6	16	11	15	10	12	37	20	35	35	29	36	192
59	181	63	28	8	17	14	11	8	19	11	10	11	11	34	31	31	38	33	36	203
60	108	66	31	11	19	14	8	10	16	7	14	8	13	31	27	31	30	28	36	183
61	185	50	45	16	14	15	5	9	14	10	12	9	13	33	30	27	28	24	31	173
62	175	64	30	13	11	16	9	12	14	11	11	11	9	31	28	26	34	25	27	171
63	139	64	21	8	11	13	9	13	21	15	5	12	11	33	24	26	27	28	35	173
64	208	57	30	10	17	14	9	12	13	10	5	14	13	35	31	34	26	31	35	192

क्रमांक	सामाजिक एवं आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		वास्तविक	कल्पित	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
65	90	58	41	8	18	13	9	12	12	11	17	7	74	33	30	23	35	20	25	166
66	277	41	40	8	14	13	8	12	17	14	12	13	10	36	19	35	28	34	31	183
67	198	57	19	16	18	21	7	9	16	7	9	4	12	32	28	30	30	31	32	183
68	143	61	38	8	14	20	12	7	19	8	4	13	11	21	28	33	33	27	31	173
69	181	65	23	9	16	16	11	5	15	10	9	11	18	30	26	29	37	28	30	173
70	143	65	34	10	14	17	6	11	19	5	8	17	12	28	22	27	31	28	33	179
71	123	39	54	5	18	17	9	12	19	8	11	10	11	34	33	26	33	30	27	183
72	95	62	21	11	20	18	7	7	18	6	7	11	11	22	30	33	33	37	31	186
73	239	62	25	13	21	17	12	7	19	8	3	11	10	38	31	31	39	37	31	227
74	149	59	26	11	20	18	15	9	17	9	3	10	7	33	39	37	35	33	34	211
75	167	49	35	10	12	17	16	11	11	15	7	10	10	28	36	37	38	33	30	202
76	173	53	13	16	18	16	15	8	17	10	2	5	11	24	36	39	28	27	25	179
77	155	56	37	12	21	17	8	8	16	9	8	12	9	36	22	24	29	34	29	174
78	163	55	37	9	7	16	11	16	17	8	9	13	13	25	33	35	29	32	35	189
79	184	48	26	9	16	19	14	8	16	6	8	15	11	40	36	33	40	39	36	224
80	166	58	38	17	19	18	10	9	10	5	10	11	9	27	27	33	34	31	36	188
81	113	56	32	3	19	20	11	13	13	5	3	14	12	20	31	23	32	30	25	161
82	123	61	33	7	19	22	8	6	17	10	5	9	11	31	30	37	33	28	31	190
83	137	54	15	13	16	18	10	11	17	12	5	6	9	30	31	30	37	30	28	186
84	108	53	40	17	14	14	10	8	16	9	7	11	14	30	26	27	23	32	34	172
85	121	57	46	9	17	18	13	8	22	5	10	9	9	27	22	24	35	26	28	162
86	132	47	27	13	18	13	10	8	13	13	9	11	12	23	32	36	33	36	27	187
87	116	53	38	14	15	17	9	11	14	13	8	10	14	30	34	38	36	36	37	211
88	101	59	38	11	17	14	11	12	14	9	9	12	11	30	35	34	30	30	36	195
89	126	47	24	11	10	13	8	9	11	10	2	11	7	25	25	24	30	24	25	153
90	133	49	27	12	11	16	7	9	16	5	16	11	9	27	29	25	28	27	30	166
91	121	68	28	13	15	12	5	10	17	10	12	17	8	29	29	31	30	27	33	179
92	126	44	43	15	14	16	11	3	18	8	12	8	10	33	35	33	35	32	34	202
93	114	52	58	10	6	11	14	12	17	8	10	13	15	29	30	32	29	32	28	180
94	159	49	38	7	20	14	11	17	17	8	7	7	11	25	30	27	35	26	32	175
95	112	61	29	10	16	19	13	10	15	9	6	8	10	28	32	30	30	32	33	185
96	266	55	41	17	19	18	14	5	18	6	5	12	11	27	33	30	29	30	28	177
97	207	69	27	16	8	17	10	12	11	10	14	10	10	32	35	27	32	25	34	185
98	220	47	31	11	21	11	6	9	17	13	12	7	8	27	30	32	32	29	29	179

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
99	153	52	31	11	16	14	7	13	14	11	11	15	10	34	35	32	33	35	38	173
100	142	53	26	9	16	15	8	12	22	14	12	6	6	33	29	27	28	30	29	176
101	149	52	43	11	16	20	8	11	15	11	12	18	12	25	23	35	39	23	41	190
102	186	55	28	17	12	16	15	16	10	12	12	14	16	35	33	30	36	33	39	206
103	155	42	58	14	16	16	14	12	12	14	9	16	17	28	35	37	41	35	34	210
104	139	61	40	16	16	14	11	15	13	12	13	15	15	27	26	34	29	33	29	176
105	254	50	35	18	13	18	11	11	13	14	9	17	15	29	19	33	38	12	34	165
106	177	31	45	15	11	14	18	15	13	16	10	18	12	28	34	41	29	19	41	192
107	188	28	42	15	11	13	11	16	16	15	10	14	16	29	33	25	27	21	25	160
108	177	33	38	15	13	12	12	19	12	12	15	16	17	26	28	33	31	31	30	179
109	89	50	53	13	13	16	9	18	17	15	9	15	15	29	28	34	22	26	28	167
110	171	52	45	18	13	13	12	13	12	13	16	17	15	30	28	30	26	27	26	167
111	137	64	44	20	18	19	10	10	13	13	10	12	16	32	22	29	30	32	22	167
112	119	42	46	11	17	14	10	13	11	14	14	17	15	25	35	30	33	34	36	193
113	220	49	40	17	17	13	18	12	14	12	14	13	8	22	28	31	29	29	37	176
114	170	39	52	11	18	15	11	16	19	12	13	15	10	29	24	21	33	27	30	159
115	160	48	38	13	22	16	12	13	18	13	10	13	11	33	30	35	34	40	33	205
116	180	49	42	18	17	13	16	10	17	11	11	17	10	29	31	36	33	26	32	187
117	230	62	31	12	12	14	16	11	16	14	12	14	14	34	35	32	41	36	33	201
118	165	59	46	14	18	16	15	13	15	12	10	11	14	23	24	35	35	26	32	177
119	176	48	39	17	14	17	19	11	16	14	12	13	7	33	29	19	30	38	35	184
120	210	61	44	16	16	10	9	14	18	17	11	15	15	34	32	33	28	35	30	182
121	181	63	37	11	17	12	8	11	16	15	10	15	13	30	32	33	26	31	31	183
122	118	51	68	15	16	16	15	15	16	10	14	12	9	29	27	27	29	33	26	169
123	144	47	57	16	11	17	12	15	10	12	15	12	20	32	28	29	30	28	32	189
124	92	31	48	14	16	18	12	12	17	8	11	14	16	36	34	32	31	37	25	195
125	214	41	37	14	10	10	13	14	21	12	14	13	17	37	36	37	27	26	33	206
126	183	53	32	15	15	15	10	16	18	17	13	9	15	21	30	39	29	31	27	177
127	140	55	49	13	12	14	13	13	18	16	11	19	11	32	26	31	28	26	29	172
128	83	42	57	9	17	13	15	12	17	13	17	11	16	31	27	34	31	28	18	169
129	147	49	52	17	11	15	14	12	17	10	13	18	14	32	28	29	40	28	32	189
130	193	48	26	11	11	20	9	9	19	13	18	14	16	26	30	36	36	38	27	193
131	145	52	49	17	15	15	12	13	11	14	14	17	12	36	30	39	31	35	25	200
132	225	50	32	12	21	18	12	13	11	9	15	12	14	25	31	38	32	34	30	190

	शैक्षणिक उपलब्धि स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
क्रमांक		वास्तविक	आदर्श	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
133	156	55	26	17	17	9	10	8	15	13	18	16	12	29	26	34	35	27	29	180
134	163	24	37	13	17	9	12	18	18	10	15	16	16	33	28	27	39	31	29	187
135	205	50	29	17	15	10	9	18	18	10	13	21	9	40	27	30	33	35	19	182
136	163	42	37	11	13	20	17	18	11	12	11	16	10	30	35	32	32	40	28	197
137	236	46	36	12	11	20	11	15	16	13	12	14	16	25	28	40	29	26	32	180
138	172	40	55	19	13	17	15	10	15	10	10	14	15	28	38	39	26	27	24	177
139	191	44	41	14	12	14	14	10	14	16	20	12	15	39	31	28	23	36	28	185
140	157	49	33	14	17	13	18	10	20	11	15	16	9	23	24	37	29	40	31	184
141	72	56	45	17	10	15	18	11	18	12	9	17	13	27	22	39	29	30	21	168
142	69	40	36	11	11	16	14	16	10	17	15	14	16	25	30	37	36	23	30	181
143	128	55	40	20	18	11	14	13	13	14	13	17	7	40	33	36	29	38	24	200
144	175	60	45	20	19	19	10	10	14	12	10	10	15	36	26	30	33	25	34	184
145	170	55	54	18	16	11	10	15	19	9	9	21	12	31	35	40	28	31	30	195
146	222	62	42	13	14	11	16	13	11	15	11	17	12	24	26	39	35	28	36	188
147	99	59	43	12	15	17	16	12	13	14	11	12	15	29	32	32	35	26	20	174
148	128	53	55	17	15	22	11	14	14	8	11	14	9	23	37	30	37	31	28	186
149	155	62	42	16	15	16	12	13	18	16	14	14	7	39	36	31	40	27	26	199
150	139	49	41	15	19	19	9	11	15	9	12	17	12	28	31	37	30	37	23	186
151	70	58	46	15	18	11	12	13	18	14	13	12	14	30	38	26	27	26	35	182
152	115	50	48	14	20	16	9	12	19	12	9	17	12	26	25	27	40	36	30	184
153	90	39	39	15	16	12	10	10	20	13	14	15	16	26	37	33	27	22	29	174
154	132	60	49	11	10	17	17	12	14	15	16	12	15	36	29	34	36	30	37	202
155	134	54	26	13	20	16	14	8	14	15	10	15	12	24	37	24	39	31	29	184
156	93	61	26	10	19	16	13	10	17	13	12	12	12	30	25	31	38	31	25	180
157	82	50	53	13	12	19	15	7	18	11	15	11	13	30	28	27	29	28	31	172
158	60	55	47	10	11	19	16	8	18	13	17	12	14	29	36	40	22	27	39	187
159	119	61	26	10	19	16	11	10	17	14	10	13	13	32	35	40	33	27	22	189
160	91	64	29	13	21	16	10	12	18	9	16	10	15	29	17	32	26	24	29	157
161	81	48	43	18	16	17	11	11	16	12	14	11	15	24	31	30	25	30	35	175
162	104	62	28	15	13	18	11	14	16	13	13	13	11	32	30	35	33	37	25	192
163	93	62	19	10	13	15	11	14	21	15	7	14	13	31	35	25	36	31	23	181
164	116	55	28	12	19	16	11	14	15	12	17	16	15	23	30	32	31	37	23	156
165	89	56	39	10	20	15	11	14	14	13	19	9	16	22	25	27	34	32	33	173

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
166	83	39	38	10	16	15	10	12	19	16	14	15	12	27	20	28	31	28	25	159
167	62	55	21	18	20	21	9	11	18	9	11	6	14	39	26	28	31	32	23	179
168	48	60	39	10	16	21	14	9	19	10	6	15	13	23	31	24	22	27	25	156
169	77	63	21	11	18	18	13	7	17	12	11	13	20	39	34	38	37	29	24	201
170	81	63	32	12	16	19	8	13	21	7	10	19	14	29	26	37	36	32	20	180
171	97	37	52	7	20	19	11	14	21	10	13	12	13	30	25	40	31	40	32	198
172	89	60	20	13	22	20	9	9	20	8	9	13	13	35	26	31	35	34	32	193
173	89	60	23	15	23	19	14	9	21	10	5	13	12	36	36	32	32	28	40	204
174	101	57	25	13	22	20	17	11	19	11	5	12	9	24	33	38	40	39	28	202
175	128	47	31	12	14	19	18	13	13	17	9	12	12	28	28	33	38	40	30	197
176	107	51	10	18	20	18	17	10	19	12	4	7	13	31	29	29	30	32	29	180
177	98	56	35	12	21	17	8	10	18	11	10	14	11	30	29	33	32	28	27	179
178	87	53	35	11	9	18	13	18	19	10	11	15	15	25	31	30	28	35	28	187
179	66	46	24	11	18	21	16	10	18	8	10	17	13	23	24	37	34	31	26	175
180	98	56	36	19	21	20	12	11	12	7	12	13	11	28	23	25	24	25	27	152
181	99	54	31	5	21	22	13	15	15	7	5	14	14	36	38	31	39	36	40	220
182	113	61	31	9	21	24	10	8	19	12	7	11	13	32	28	29	25	20	29	163
183	91	52	13	15	18	20	12	13	19	14	7	8	11	28	35	32	30	24	33	182
184	62	51	38	19	16	16	12	10	18	11	9	13	16	28	26	33	30	29	28	184
185	71	55	44	11	19	20	15	10	24	7	12	11	11	26	36	33	32	28	24	179
186	98	45	25	15	20	15	12	10	15	15	11	13	14	40	37	28	34	26	31	196
187	95	51	36	16	17	19	11	13	16	15	10	12	13	23	32	33	32	28	26	154
188	98	57	36	13	19	16	13	14	16	11	11	14	13	30	29	33	32	38	28	190
189	98	45	22	13	12	15	10	11	13	12	20	11	9	20	28	24	25	26	22	145
190	101	47	25	14	13	18	9	11	18	7	18	13	11	23	33	25	30	35	25	171
191	117	66	26	15	17	14	7	12	17	10	14	19	10	30	29	35	39	35	30	198
192	112	42	41	17	16	18	13	5	20	10	14	10	12	30	33	26	28	26	20	163
193	99	50	56	12	8	13	16	14	17	10	12	15	17	40	36	40	39	26	23	204
194	78	47	36	9	15	16	13	9	9	10	9	9	13	31	28	32	30	27	21	169
195	102	59	27	12	18	21	15	12	17	11	10	10	12	36	32	37	40	34	35	214
196	87	53	39	19	21	20	16	7	20	8	7	14	13	28	36	39	37	35	35	208
197	130	67	25	18	10	19	12	14	13	12	16	12	12	28	32	34	37	36	26	193
198	92	45	29	13	22	13	8	11	19	13	14	9	10	26	30	35	33	33	21	178

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
199	95	50	32	13	18	16	9	15	16	13	13	17	12	31	30	27	31	28	19	166
200	66	51	28	11	18	17	10	14	22	16	14	8	8	30	29	35	32	25	29	160
201	72	51	26	7	12	16	6	7	11	7	8	14	8	30	40	38	37	40	37	222
202	108	54	33	13	8	12	11	12	6	8	8	10	12	28	32	31	36	33	25	185
203	111	49	33	11	12	12	10	14	8	10	7	12	15	28	33	29	29	35	28	182
204	119	56	47	12	12	10	7	11	9	8	9	11	11	30	36	26	22	38	28	180
205	184	59	32	15	9	14	7	7	9	10	5	13	11	20	35	38	27	36	34	190
206	68	46	62	11	7	11	14	11	9	12	7	8	12	25	38	40	39	33	32	207
207	170	65	44	11	7	9	7	12	12	11	7	12	13	25	30	35	30	30	30	180
208	152	54	39	11	9	8	8	15	8	8	11	13	9	25	31	34	31	36	33	190
209	146	35	49	9	9	12	7	14	13	11	7	13	9	30	23	25	28	19	24	149
210	212	32	46	14	9	9	8	9	8	9	12	13	9	35	31	25	40	32	9	172
211	58	64	48	16	14	15	6	6	9	9	7	10	12	30	40	37	38	34	28	207
212	128	46	50	7	13	10	6	9	7	10	10	13	11	29	39	23	39	29	22	181
213	144	50	42	13	13	9	14	8	12	8	10	9	6	33	28	31	31	35	39	197
214	132	43	56	7	14	11	7	12	15	8	9	11	7	38	36	33	24	28	32	191
215	138	52	42	9	18	12	8	9	14	9	7	9	7	28	27	29	32	30	29	175
216	210	53	46	14	13	9	12	7	13	7	7	13	7	39	33	32	35	25	28	192
217	154	66	35	8	8	10	12	7	12	10	8	15	10	38	30	30	36	25	30	189
218	285	62	50	10	14	12	11	9	11	8	6	7	10	38	33	29	26	29	28	183
219	134	52	43	13	10	13	15	7	12	10	8	9	6	36	40	29	32	30	28	195
220	108	65	48	12	12	6	7	10	14	13	7	11	11	38	30	35	33	33	36	205
221	126	67	41	9	15	10	6	7	14	11	8	11	9	33	37	32	32	28	39	195
222	110	55	72	13	12	12	11	11	12	7	10	8	7	26	28	16	32	35	31	168
223	153	51	61	12	7	13	8	11	7	8	11	8	16	29	33	29	27	28	33	179
224	167	35	52	10	14	14	8	8	13	7	7	10	12	26	29	24	21	30	32	162
225	165	44	41	10	7	7	10	12	17	8	10	9	13	29	36	25	26	27	29	172
226	120	57	36	10	7	7	9	12	17	8	10	7	11	27	27	25	22	28	33	164
227	125	59	53	11	11	11	7	7	12	14	13	15	7	31	37	31	35	36	35	200
228	143	46	61	9	8	10	9	9	9	14	12	7	12	39	34	31	31	36	36	217
229	167	53	56	5	13	9	11	11	8	13	9	14	11	27	36	32	40	31	25	191
230	181	52	30	13	7	11	10	10	8	13	7	10	12	25	25	26	34	25	30	165
231	185	56	53	7	7	16	7	7	7	15	9	13	8	34	36	36	38	33	36	203
232	189	54	36	13	11	11	8	8	9	7	10	8	10	33	30	27	28	24	31	173

क्रमांक	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
		व्यवसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
233	90	59	30	8	19	14	8	8	9	7	5	12	10	31	28	26	34	25	27	171
234	198	28	41	13	13	7	10	10	6	11	9	12	12	33	24	26	27	28	35	173
235	181	54	33	9	13	7	8	14	14	7	11	17	7	33	30	23	35	20	25	166
236	123	46	41	7	9	17	13	14	7	8	7	12	7	32	28	30	30	31	32	183
237	289	50	40	8	7	16	7	11	12	9	8	10	12	21	28	33	33	27	31	173
238	167	44	59	15	9	17	11	11	7	11	7	10	11	28	22	27	31	28	33	169
239	155	48	45	10	8	10	10	10	7	10	12	8	11	22	30	33	33	37	31	186
240	184	53	37	10	13	9	14	8	17	7	11	12	7	33	39	37	35	33	34	211
241	166	60	49	13	6	11	14	7	14	8	6	13	9	24	36	39	28	27	25	179
242	123	44	40	7	7	12	10	12	6	13	11	10	12	25	33	35	29	32	35	189
243	108	59	44	16	14	7	10	9	9	10	9	13	5	27	27	33	34	31	36	188
244	132	64	49	16	15	15	6	6	10	8	6	6	11	31	30	37	33	28	31	190
245	101	58	58	14	12	7	6	11	15	5	5	17	8	30	26	27	23	32	34	172
246	126	66	46	10	10	7	12	9	7	11	7	17	8	23	32	36	33	36	27	187
247	121	63	46	8	11	13	12	8	9	10	7	8	11	30	35	34	30	30	36	195
248	114	57	57	13	11	18	7	10	10	6	7	10	7	27	29	25	28	27	30	166
249	112	66	46	12	11	12	8	9	14	12	10	10	5	33	35	33	35	32	34	202
250	207	52	45	13	15	15	7	7	11	7	8	13	8	25	30	27	35	26	32	175
251	153	62	50	13	16	7	8	7	14	10	9	8	10	27	33	30	29	30	28	177
252	149	54	52	10	16	12	5	8	15	8	7	13	8	27	30	32	32	29	29	179
253	155	43	43	11	12	8	6	6	16	9	10	11	12	33	29	27	28	30	29	176
254	259	64	53	7	6	13	13	6	10	11	6	8	11	25	23	35	39	23	41	190
255	188	58	30	9	16	12	15	6	10	11	6	11	8	28	35	37	41	35	34	210
256	89	64	30	6	15	12	9	6	13	9	8	9	9	29	19	33	38	12	34	165
257	137	54	57	11	10	15	11	5	14	7	13	7	9	29	33	25	27	21	25	160
258	229	59	51	6	7	15	12	5	14	9	13	8	10	29	28	34	22	26	28	167
259	170	65	30	6	15	12	9	6	13	9	8	9	9	32	22	29	30	32	22	167
260	180	68	33	9	17	12	6	8	14	5	12	6	11	22	28	31	29	29	37	176
261	165	52	47	14	12	13	5	7	12	8	10	7	11	33	30	35	34	40	33	205
262	210	66	32	11	9	14	7	10	12	9	9	9	7	34	35	32	41	36	33	201
263	118	66	31	6	9	11	7	11	19	15	5	10	9	33	29	19	30	38	35	184
264	92	59	32	8	15	12	7	10	11	8	5	12	11	30	32	33	26	31	31	183
265	183	60	43	6	16	11	7	10	10	9	15	5	12	32	28	29	30	28	32	189
266	83	43	42	6	12	11	6	10	15	12	10	11	8	37	36	37	27	26	33	206

	सामाजिक आर्थिक स्तर	आकांक्षा स्तर		मूल्य										आत्म-प्रत्यय						
क्रमांक		व्यावसायिक	शैक्षिक	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	A	B	C	D	E	F	योग
267	193	59	21	14	16	19	5	7	14	5	7	4	10	32	26	31	28	26	27	172
268	225	63	40	6	12	18	10	5	17	6	4	11	9	31	25	36	36	38	27	193
269	163	67	25	7	14	14	9	4	13	7	7	9	16	36	30	39	31	35	29	200
270	163	67	36	10	12	15	5	7	17	5	6	15	10	29	26	34	35	27	29	180
271	172	41	56	4	16	15	7	10	17	6	9	8	9	40	27	30	33	33	19	182
272	157	64	23	9	18	16	5	5	16	4	5	9	9	25	28	40	29	26	32	180
273	69	64	27	11	19	15	10	5	17	6	3	9	8	39	31	28	23	36	28	185
274	175	61	28	9	18	16	13	7	15	7	3	8	5	25	30	37	36	23	30	181
275	222	51	35	8	10	15	14	9	9	13	5	8	8	36	26	30	33	25	34	184
276	128	55	15	14	16	14	13	6	15	8	2	3	9	24	26	39	35	28	36	188
277	139	58	39	10	19	15	6	6	14	7	6	10	7	23	37	30	37	31	28	186
278	115	57	39	7	5	14	9	14	15	6	7	11	11	28	31	37	30	37	23	186
279	132	50	28	7	14	17	12	6	14	4	6	13	9	26	25	27	40	36	30	184
280	93	60	40	15	17	16	8	7	8	3	8	9	7	36	29	34	36	30	37	202
281	64	58	34	3	19	18	9	11	11	3	3	12	10	30	25	31	38	31	25	180
282	91	63	35	5	17	20	6	11	15	8	3	7	9	29	36	40	22	27	39	187
283	104	56	17	11	14	16	8	9	15	10	3	4	7	29	17	32	26	24	29	157
284	116	55	42	15	12	12	8	6	14	7	5	9	12	24	31	30	25	30	35	175
285	83	59	48	7	15	16	11	6	20	3	8	7	7	31	35	25	36	31	23	181
286	48	29	15	11	16	11	8	6	11	11	7	9	10	23	30	32	31	37	23	156
287	81	40	16	12	13	15	7	9	12	11	6	8	9	27	20	28	31	28	25	159
288	89	40	13	9	15	12	9	10	12	7	7	10	9	23	31	24	22	27	29	156
289	101	76	13	9	8	11	6	7	9	8	18	19	5	29	26	37	36	32	20	180
290	107	29	14	10	9	14	5	7	14	3	14	9	7	35	26	31	35	34	32	193
291	87	30	15	11	13	10	3	10	14	10	10	15	6	24	33	38	40	39	28	202
292	98	44	17	15	12	14	9	3	16	6	10	6	8	31	26	29	30	22	29	173
293	113	60	12	8	4	9	12	10	12	14	6	11	13	25	31	30	28	35	28	187
294	62	40	10	5	18	12	9	5	5	6	5	5	9	28	23	25	24	25	27	152
295	98	30	12	8	14	17	11	8	13	7	6	6	8	32	28	29	25	20	29	163
296	98	40	15	8	17	16	12	3	16	4	3	10	9	28	26	33	30	29	26	184
297	102	30	18	14	6	15	8	10	9	8	12	8	8	40	37	28	34	26	31	196
298	112	49	33	9	19	9	4	7	15	11	10	5	6	30	29	33	32	38	28	190
299	78	54	32	9	14	12	5	11	12	9	9	13	8	20	28	25	24	26	22	171
300	130	55	28	7	14	13	6	10	20	12	10	4	4	30	33	26	28	26	20	163

FORM B. (Rural)

पत्नीय

सामाजिक-आर्थिक स्तर परिसूची

(Socio-economic Status Scale)

निर्मित एवं मानकीकृत द्वारा

डा० एस० पी० कुलश्रेष्ठ

शिक्षण विभाग

डी० ए० वी० कालेज, देहरादून

[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]

कृपया इन्हें भरिये

नाम .... आयु ....

ग्राम .... तहसील ....

जिला .... तारीख ....

पूरा ....

[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]

निर्देश

इस परिसूची में तुम्हारे परिवार के बारे में कुछ सूचनायें माँगी गयी हैं। अतः तुम अपने माता पिता, सबसे बड़े भाई/बहिन के बारे में सही सूचनायें भरो। विश्वास रखो कि तुम्हारे द्वारा दी गयीं सूचनायें गुप्त रखी जायेंगी और किसी भी हालत में किसी को भी नहीं बताई जायेंगी। इस परिसूची में में प्रत्येक प्रत्येक के कई सम्भावित उत्तर दिये गये हैं — तुम इनमें से अपने परिवार के ऊपर लागू होने वाले उत्तरों को चुनो और उनके सामने बने गोलों में (सही) का निशान लगा दो।

[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]
[ ]

नेशनल साइकलाजिकल कारपोरेशन राजामंडी, आगरा-२८२००२

	माता	पिता	सबसे बड़ा भाई	सब बड़ [illegible]
१- आप क्या काम करते हैं ?				
क) कोई काम नहीं करते	( )	( )	( )	(
ख) कृषि-मजदूर	( )	( )	( )	(
ग) पशुपालन, वन, मछली, व पौध लगाना आदि	( )	( )	( )	(
घ) छोटे-छोटे घरेलू काम	( )	( )	( )	(
य) घरेलू काम के अलावा अन्य प्रकार का सामान तैयार करना	( )	( )	( )	(
र) निर्माण कार्य	( )	( )	( )	(
ल) व्यापार एवं दुकानदारी	( )	( )	( )	(
व) यातायात, संग्रहण तथा संचार	( )	( )	( )	(
स) अन्य प्रकार के कार्य	( )	( )	( )	(
ह) खेती	( )	( )	( )	(

२- आप किस जाति के हैं।

शूद्र ☐, वैश्य ☐, क्षत्री ☐, ब्राह्मण ☐

३- आप कितने पढ़े लिखे हैं ?				
क) बिलकुल नहीं पढ़े	( )	( )	( )	(
ख) केवल पढ़ सकते हैं	( )	( )	( )	(
ग) पढ़ व लिख सकते हैं	( )	( )	( )	(
घ) प्राईमरी	( )	( )	( )	(
य) मिडिल	( )	( )	( )	(
र) हाई स्कूल	( )	( )	( )	(
ल) स्नातक	( )	( )	( )	(
व) स्नातकोत्तर	( )	( )	( )	(

४- आप कितनी संस्थाओं के [राजनीतिक, सामाजिक, ग्रामीण व सांस्कृतिक आदि] सदस्य हैं ?

- क) किसी के नहीं [ ]
- ख) एक संस्था के [ ]
- ग) एक से अधिक संस्था [ ]
- घ) पदाधिकारी [ ]
- य) बड़े सार्वजनिक नेता [ ]

५- आपका कैसा घर है ?

- क) अपना घर नहीं है [ ]
- ख) झोंपड़ी [ ]
- ग) कच्चा [ ]
- घ) कच्चा-पक्का [ ]
- य) पक्का [ ]
- र) पक्का बड़ा [ ]

६- आपके घर में क्या क्या चीजें हैं ?

कैमरा ☐, घड़ी ☐, अलमारी ☐, साईकिल ☐, दीवार घड़ी ☐ रेडियो ☐, कुर्सी मेज ☐, सिलाई मशीन ☐, स्टोव ☐, मोटर-साइकिल ☐, उन्नतशील कृषि यन्त्र ☐, बैलगाड़ी ☐, अन्य ☐, हाथी ☐, घोड़ा ☐, ऊंट ☐

१५– क्या आपको परिवार नियोजन में विश्वास है ?

हां [], नहीं [], अनिश्चित []

१६– क्या आपके घर पत्र पत्रिकायें आती हैं ?

हां [], कभी–कभी [], नहीं []

१७– गांव में कोई विशेष बात या घटना होने पर आपसे राय ली जाती है ?

नहीं [], कभी–कभी [], बहुधा []

१८– क्या आपके घर नौकर रहता है ?

हां [], नहीं,

१९– क्या आप कृषि के नये ढंगों, फसल की नई किस्मों आदि को एक दम स्वीकार कर लेते हैं ?

क) हां [ ]

ख) अनिश्चित [ ]

ग) नहीं [ ]

२०– आपके परिवार का कितना रुपया जमा है, उधार या जरूरत पड़ने पर एक दम इकट्ठा कर सकते।

	धन	जमा	उधार	एकदम जरूरत पड़ने पर इकट्ठा कर सकना
क)	५० रु० से कम	[ ]	[ ]	[ ]
ख)	५० व १०० रु० के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
ग)	१०१ व २०० रु० के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
घ)	२०१ व ३०० रु० के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
य)	३०१ व ४०० रु० के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
र)	४०१ व ५०० रु० के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
ल)	५०१ व ७०० रु० के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
व)	७०१ व १००० रु० के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
स)	१००० रु० से अधिक	[ ]	[ ]	[ ]

Total Score = [ ] Category [

७– आपके परिवार की औसत मासिक आमदनी कितनी है ?

क) ५० रुपये से कम [ ]
ख) ५० से १०० रुपये के बीच [ ]
ग) १०१ व २०० रुपये के बीच [ ]
घ) २०१ व ३०० रुपये के बीच [ ]
य) ३०१ व ४०० के बीच [ ]
र) ४०१ व ५०० के बीच [ ]
ल) ५०१ व ७०० के बीच [ ]
व) ७०० से १००० के बीच [ ]
स) १००० रुपये से ऊपर [ ]

८– आपके पास कितनी जमीन है ?

क) नहीं है [ ]
ख) १ बीघा से कम [ ]
ग) १ व ५ बीघा के बीच [ ]
घ) ६ व २० बीघा के बीच [ ]
य) २१ व ५० बीघा के बीच [ ]
र) ५१ व ७५ बीघा के बीच [ ]
ल) ७५ व १०० बीघा के बीच [ ]
व) १०० बीघा से ऊपर [ ]

९– आपका परिवार कैसा है ?

क) एकाकी [ ]
ख) संयुक्त [ ]

१०– आपके परिवार के कितने सदस्य हैं ?

क) ३ या ३ से कम [ ]
ख) ३ व ५ के बीच [ ]
ग) ५ से ऊपर [ ]

११– आपके पास कितने बच्चे हैं ?

क) नहीं हैं ? [ ]
ख) केवल लड़कियां हैं [ ]
ग) लड़के व लड़कियां दोनों हैं [ ]
घ) केवल लड़के हैं [ ]

१२– आपके घर में कितने जानवर हैं ?

क) नहीं है [ ]
ख) २ से कम हैं [ ]
ग) ३ व ५ के बीच [ ]
घ) ५ से अधिक [ ]

१३– आपके घर पर दूध देने वाले जानवर कितने हैं ?

	भैंस	गाय	बकरी
क) नहीं हैं	[ ]	[ ]	[ ]
ख) २ से कम	[ ]	[ ]	[ ]
ग) २ व ३ के बीच	[ ]	[ ]	[ ]
घ) ३ से अधिक	[ ]	[ ]	[ ]

१४– क्या आप—

क) खुद खेती करते हैं। [ ]
ख) दूसरों से कराते हैं। [ ]

गोपनीय

व्यावसायिक आकांक्षा मापनी (O. A. S.)

डॉ० जे० एस० ग्रेवाल
रीडर, शिक्षा विभाग
रीजनल कॉलेज ऑफ एजूकेशन,
भोपाल

नाम ....

आयु ....

कक्षा ....

विद्यालय/महाविद्यालय ....

दिनांक ....

निर्देश

आपकी रुचि के विभिन्न व्यवसायों से सम्बन्धित कुछ प्रश्न दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न में कुल दस व्यवसाय दिए गए हैं। इन दस व्यवसायों में से आपको केवल एक व्यवसाय को चुनना है। प्रत्येक व्यवसाय को सावधानी से पढ़िए। सभी प्रश्न एक दूसरे से भिन्न हैं। अपनी पसन्द के व्यवसाय के सामने एक क्रौस (×) का चिह्न लगा दीजिए। कोई भी प्रश्न छोड़ना नहीं है।

फलांकन तालिका

प्रश्न —	१	२	३	४	५	६	७	८	
प्राप्तांक—									

मानक प्राप्तांक.................... टी प्राप्तांक.................... शतांशीय क्रम....................

नेशनल साइकलॉजीकल कारपोरेशन

4/230, कचहरी घाट, आगरा–282004 (यू० पी०)

प्रश्न १—नीचे दिए गए व्यवसायों में से कौन सा व्यवसाय सर्वश्रेष्ठ है, जिसके बारे में आपको वह निश्चय हो कि स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद वह आपको अवश्य मिल सकता है ?

१·१………… वकील	१·२………… कृषि निरीक्षक
१·३………… डॉक्टर	१·४………… प्राथमिक स्कूल का अध्यापक
१·५………… भारतीय विदेशी सेवा में डिप्लोमेट	१·६………… नाई
१·७………… मनोवैज्ञानिक	१·८………… मोटर मैकेनिक
१·९………… थोक फर्म का भ्रमणकारी विक्रेता	१·१०………… पोस्टमैन

प्रश्न २—यदि आपको स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद नीचे दिए गए व्यवसायों में से किसी भी व्यवसाय को अपनी इच्छानुसार चुनने की पूरी स्वतन्त्रता हो तब आप उनमें से किसे चुनेंगे ?

२·१………… गवर्नमेंट ठेकेदार	२·२………… बीमा एजेण्ट
२·३………… संसद सदस्य	२·४………… ऑफिस क्लर्क
२·५………… राज्यपाल	२·६………… घरेलू नौकर
२·७………… प्रिंटिंग प्रेस का स्वामी	२·७………… विद्युत मैन
२·९………… पुजारी	२·१०………… ट्रक ड्राइवर

प्रश्न ३—यदि आपको स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद नीचे दिये गये व्यवसायों में से किसी भी व्यवसाय को अपनी इच्छानुसार चुनने की पूरी स्वतन्त्रता हो तब आप उनमें से किसे चुनेंगे ?

३·१………… एअर होस्टेस	३·२………… प्रशिक्षित मिस्त्री
३·३………… सेना में कैप्टिन	३·४………… दाई/परिचायिका
३·५………… उच्चतम न्यायालय का जज	३·६………… रेस्ट्राँ वेटर
३·७………… संगीत वादक	३·८………… फैक्टरी का मशीन ऑपरेटर
३·९………… पुस्तकालयाध्यक्ष	३·१०………… प्लमबर

क) खुद खेती करते हैं। [ ]
ख) दूसरों से कराते हैं। [ ]

प्रश्न ४—यदि आपको स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद नीचे दिए गए व्यवसायों में से किसी भी व्यवसाय को अपनी इच्छानुसार चुनने की पूरी स्वतन्त्रता हो तब आप उनमें से किसे चुनेंगे ?

४·१..................उपन्यासकार
४·२..................सैनिक
४·३..................बैंक प्रबंधक
४·४..................टैक्सी ड्राइवर
४·५..................केंद्रीय सरकार में मंत्री
४·६..................पैट्रोल पम्प का नौकर
४·७..................चित्र बनाने वाला चित्रकार
४·८..................ग्राम सेविका
४·९..................फोटो ग्राफर
४·१०..................कोयला खदान श्रमिक

प्रश्न ५—नीचे दिये गए व्यवसायों में से कौन सा व्यवसाय सर्वश्रेष्ठ है, जिसके विषय में आपको पूरी तरह यह निश्चय हो कि ३० साल की आयु तक पहुंचने पर वह आपको अवश्य मिल सकता है ?

५·१..................दाँतों के डॉक्टर
५·२..................शारीरिक शिक्षा का निरीक्षक
५·३..................वैज्ञानिक
५·४..................बढ़ई
५·५..................नगरपालिका चेयरमैन
५·६..................लकड़ी काटने वाला
५·७..................समाचार-पत्र संवाददाता
५·८..................बस ड्राइवर
५·९..................किसी अधिकारी का स्टेनो-टाइपिस्ट
५·१०..................फर्म कार्यकर्त्ता

प्रश्न ६—यदि आपको ३० साल की आयु तक पहुंचने पर नीचे दिए गए व्यवसायों में से किसी भी व्यवसाय को अपनी इच्छानुसार चुनने की स्वतन्त्रता हो, तब आप उनमें से किसे चुनेंगे ?

६·१..................किसी सरकारी कार्यालय में एकाउन्टेंट
६·२..................पटवारी
६·३..................प्रवक्ता
६·४..................मछियारा
६·५..................राज्य सरकार के किसी विभाग का कर्मचारी
६·६..................चौकीदार
६·७..................रेडियो एनाउन्सर
६·८..................पुलिस का सिपाही
६·९..................रिसेप्सनिष्ट
६·१०..................रेलवे सिगनलमैन

प्रश्न ७ नीचे दिये गए व्यवसायों में कौन-सा व्यवसाय सर्वश्रेष्ठ है, जिसके विषय में आपको पूरी तरह यह निश्चय है कि ३० साल की आयु तक पहुंचने पर वह आपको अवश्य मिल सकता है ?

७·२………… कैमिस्ट
७·२ ………… नर्स
७·३………… सौ कर्मचारियों वाली फैक्टरी का स्वामी
७·४………… दुकान का नौकर
७·५………… जिला मजिस्ट्रेट
७·६………… जूते पॉलिश वाला
७·७………… कॉमर्शियल आर्टिस्ट
७·८………… टाइपिस्ट
७·९………… समाज कल्याण कार्यकर्ता
७·१०………… लाउण्ड्री में कपड़े पर आयरन करने वाला

प्रश्न ८—यदि आपको ३० साल की आयु तक पहुंचने पर नीचे दिये गए व्यवसायों में से किसी भी व्यवसाय को अपनी इच्छानुसार चुनने की पूरी स्वतन्त्रता हो, तब आप उनमें से किसे चुनेंगे ?

८·१………… फार्म स्वामी/संचालक
८·२………… रेलवे गार्ड
८·३………… इन्जीनियर
८·४………… घर-घर वस्तुएँ बेचने वाला सैलसमैन
८·५………… एअर पाइलट
८·६………… मेहतर
८·७………… छोटे होटल का मालिक
८·८………… दर्जी
८·९………… फर्म का खजांची
८·१०………… रेस्ट्रॉं में रसोइया

ARCHNA PRINTERS, AGRA-7

क) खुद खेती करते हैं। [ ]
ख) दूसरों से कराते हैं। [ ]

गोपनीय

गोपनीय

EAS (Form V)

Dr. V. P. SHARMA
Km. ANURADHA GUPTA

नाम...लिंग...................................

विद्यालय/महाविद्यालय..............................आयु...................................

शैक्षिक स्तर.......................................दिनांक.................................

गत बोर्ड एवं विश्वविद्यालय परीक्षा में प्राप्त किए अंक (प्रतिशत में).....................

निर्देश

इस प्रश्न-पत्र में शैक्षणिक डिग्रियों की आठ सूचियाँ दी गई हैं। प्रत्येक सूची में दस डिग्रियाँ अंकित की गई हैं। आपको उन डिग्रियों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उचित स्थान पर किसी भी एक डिग्री के सामने सही (√) का निशान लगाना है जिसे आप या तो अपने शैक्षिक जीवन में प्राप्त कर लेंगे अथवा प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं अथवा 20 वर्ष बाद प्राप्त कर लेंगे अथवा 20 वर्ष बाद प्राप्त कर लेने की इच्छा व्यक्त करेंगे। यह प्रश्न-पत्र आपकी शैक्षिक आकांक्षा को मापने के लिए बनाया गया है। अतएव आप हमें इस कार्य के लिए पूर्ण सहयोग दीजिए। क्या कोई कठिनाई है ? जब तक कहा नहीं जाए, पृष्ठ मत उलटिए।

फलांकन तालिका

सूची	1	2	3	4	5	6	7	8	योग
प्राप्तांक									

Estd : 1971 Phone : 63551

नेशनल साइकलॉजीकल कारपोरेशन

4/230 कचहरी घाट, आगरा-282004 (उ० प्र०)

सूची 1–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में इन परीक्षाओं को पास करने वालों का आदर होता है परन्तु किसी में कम तो किसी में अधिक। अपनी मेहनत करने की शक्ति, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, योग्यता, स्मरण-शक्ति आदि परीक्षा पर प्रभाव डालने वाले कारकों को मद्दे नजर रखते हुए, उस सबसे ऊँची परीक्षा के सामने सही (✓) का चिह्न लगाकर बताइए जो आप अवश्य पास कर सकते हैं।

1. 1. ....Cambridge High School Examintion
1. 2. ....B. Lib.
1. 3. ....M. Tech.
1. 4. ....P. M. T.
1. 5. ....Middle School Board Exam.
1. 6. ....B. Sc.
1. 7. ....Dip. in Journalism
1. 8. ....Indian Navy Examination
1. 9. ....B. Sc. (Textiles)
1.10. ....B. E. (Mining)

सूची 2–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में इन परीक्षाओं को पास करने वालों का आदर होता है, परन्तु किसी में कम तो किसी में अधिक। यदि आपसे किसी ने पूछा कि इन परीक्षाओं में से सर्वश्रेष्ठ परीक्षा कौनसी है उसे किस परीक्षा का नाम बतायेंगे। सही का चिह्न (✓) उस परीक्षा के सामने लगाइए।

2. 1. ....Indian Military Academy Examination
2. 2. ....B. V. Sc.
2. 3. ....B. Sc. (Hons.)
2. 4. ....A. C. F. (Asstt. Conservator of Forest)
2. 5. ....M. Ed.
2. 6. ....Board Primary Exam.
2. 7. ....M. D.
2. 8 ....M. Sc. (Agr.)
2. 9. ....H. Sc.
2.10. ....Ph. D. in Journal

सूची 3–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में इन परीक्षाओं को पास करने वालों का आदर होता है, परन्तु किसी में कम तो किसी में अधिक। 20 वर्ष बाद की अपनी योग्यता, आपकी मेहनत करने की शक्ति, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, स्मरण रखने की शक्ति आदि परीक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों को मद्दे नजर रखते हुए बताइए कि 20 वर्ष बाद आप जिस सर्वोच्च परीक्षा को अवश्य पास करने की शक्ति रखेंगे। उस परीक्षा के सामने सही का चिह्न (✓) लगाइए।

3. 1. ... Poly Technic Exam.
3. 2. ....B. E. (Elect.)
3. 3. ....M. Sc.
3. 4. ....I. T. I.
3. 5. ....H. Sc. (Commerce)
3. 6. ....B. H. Sc.
3. 7. ....F. A. A. Sc. (Fellow of the Australian Academy of Science)
3. 8. ....F. L. A. (Fellow of the Library Association)
3. 9. ....M. Phil in Social Sciences
3.10. ....Ph. D. in Lib.

क) खुद खेती करते हैं। [ ]
ख) दूसरों से कराते हैं। [ ]

सूची 4–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में परीक्षाओं को पास करने वालों को आदर सम्मान मिलता है परन्तु किसी में अधिक तो किसी में कम। यदि आपसे किसी ने पूछा कि इन परीक्षाओं में से सर्वश्रेष्ठ परीक्षा कौन सी है, जिसे आप 20 वर्ष बाद पास करने की इच्छा प्रकट करेंगे। उस परीक्षा के नाम के आगे सही का चिह्न (√) यथोचित खाली स्थान में अंकित कीजिए।

4. 1. ....M. Sc.
4. 2. ....M. B. B. S.
4. 3. ....F. C. S. (Fellow of Chemical Society)
4. 4. ....B. Ed.
4. 5. ....M. Phil. in Science
4. 6. ....Chartered Accountancy Examination
4. 7. ....B. Sc.
4. 8. ....LL. B.
4. 9. ....M. S.
4.10. ....D. Lit.

सूची 5–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में इन परीक्षाओं के पास करने वालों का आदर होता है, परन्तु किसी में कम तो किसी में अधिक। यदि आपसे किसी ने पूछा कि इन परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ परीक्षा कौन सी है जिसे किसी भी व्यक्ति को पास करने का उद्देश्य होना चाहिए, तो आप उसे किस परीक्षा का नाम बतायेंगे ? सही का चिह्न (√) उस परीक्षा के सामने लगाइए।

5. 1. ....M. Lib.
5. 2. ....B. I. D. (Bac. of Industrial Design)
5. 3. ....F. E. R. (Red-cross First-aid Exam.)
5. 4. ....L. L. D.
5. 5. ....M. Com.
5. 6. ....H. Sc. (Agr. Group)
5. 7. ....F. I. E. (Fellow of the Institute of Engineers)
5. 8. ....Science Talent Search Exam
5. 9. Ph. D. in Com.
5.10. I. P. S.

सूची 6–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में इन परीक्षाओं को पास करने वालों का आदर होता है, परन्तु किसी में कम तो किसी में अधिक। अपनी मेहनत करने की शक्ति सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, योग्यता, स्मरण शक्ति आदि परीक्षा पर प्रभाव डालने वाले कारकों को मद्दे नजर रखते हुए उस सबसे ऊँची परीक्षा के सामने सही का (√) चिह्न लगाकर बताइए जो आप अवश्य पास कर सकते हैं।

6. 1. ....M. J.
6. 2. ....B. Sc. (Tech.)
6. 3. ....A. C. F. (Asstt. Conservator of Forest)
6. 4. ....B. B. A
6. 5. ....B. C. E.
6. 6. ....LL. M.
6. 7. ....B. J.
6. 8. ....I. A. S.
6. 9. ....B. M.
6.10. ....B. A. M.

सूची 7–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में इन परीक्षाओं के पास करने वालों का आदर होता है, परन्तु किसी में कम तो किसी में अधिक। 20 साल बाद की अपनी योग्यता, आपकी मेहनत करने की शक्ति, सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ स्मरण रखने की शक्ति आदि परीक्षा को प्रभावित करने वाले कारकों को मद्दे नजर रखते हुए बताइए कि 20 साल बाद आप किस सर्वोच्च परीक्षा को अवश्य पास करने की शक्ति रखेंगे। उस परीक्षा के सामने सही (√) का चिह्न लगाइए।

7. 1. ....H. Sc. (Science Group)
7. 2. ....B. Com.
7. 3. ....D. Sc.
7. 4. ....D. C. L. (Doctor of Civil Law)
7. 5. ....B. E. (Mech.)
7. 6. ....Ph. D. in Agri.
7. 7. ....M. Phil. in Humanities
7. 8. ....M. A.
7. 9. ....Dip. in Lib.
7.10. ....M. Sc. (Tech.)

सूची 8–नीचे परीक्षाओं की सूची दी गई है। समाज में इन परीक्षाओं को पास करने वालों को आदर मिलता है, परन्तु किसी में अधिक तो किसी में कम। यदि आपसे किसी ने पूछा कि इन परीक्षाओं में से सर्वश्रेष्ठ परीक्षा कौन सी है, जिसे आप 20 साल बाद पास करने की इच्छा प्रकट करेंगे। उस परीक्षा के नाम के आगे सही का चिह्न (√) यथोचित खाली स्थान में अंकित कीजिए।

8. 1. ....LL. B.
8. 2. ....B. Ed.
8. 3. ....M. B. B. S.
8. 4. ....B. E. (Elect.)
8. 5. ....B. E. (Mech.)
8. 6. ....B. E. (Tech.)
8. 7. ....B. A. M.
8. 8. ....B. Lib.
8. 9. ....B. J.
8.10. ....B. P. Ed.

ARCHNA PRINTERS, BODLA, AGRA-7

क) खुद खेती करते हैं। [ ]
ख) दूसरों से कराते हैं। [ ]

गोपनीय

व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (PVQ)

डॉ. (श्रीमती) जी. पी. शैरी
निदेशिका
दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा-5

डॉ. आर. पी. वर्मा
प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-5

T. M. No. 458715

द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत

कृपया निम्नलिखित संगत विवरण दीजिये :—

1. नाम ....
2. आयु ....
3. लिंग ....
4. जाति ....
5. धर्म ....
6. ग्रामीण/शहरी ....
7. विवाहित/अविवाहित ....
8. शैक्षिक योग्यता ....
9. व्यवसाय ....
10. मासिक आय ....

फलांकन तालिका

पृष्ठ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ
4										
5										
6										
7										
8										
योग										

Estd. : 1971

Phone : 63551

PSYCHOLOGICAL CORPORATION
4/230 KACHERI GHAT, AGRA - 282 004 (INDIA)

निर्देश

कुछ परिस्थितियों में आप क्या करना पसन्द करेंगे/करेंगी यह जानने के लिये यह प्रश्नावली तैयार की गयी है प्रत्येक प्रश्न के तीन उत्तर दिये गये हैं। इन उत्तरों को अपनी पसन्द के अनुसार नीचे दिये गये ढंग से आप कृपया क्रम (order) प्रदान करें।

किसी प्रश्न के :

1—[अ] जिस उत्तर को आप सबसे अधिक पसन्द करते/करती हैं उसके सामने कोष्ठक में आप (✓) का चिह्न लगा दीजिये।

[ब] जिस उत्तर को आप सबसे कम पसन्द करते/करती हैं उसके सामने कोष्ठक में (×) का चिह्न लगा दीजिये।

[स] अब जो उत्तर बच रहे उसके सामने कोई चिह्न न लगाइये।

[द] केवल एक उत्तर के सामने (✓) का चिह्न और एक उत्तर के सामने क्रौस (×) का चिह्न लगाना है।

उदाहरण—नीचे दिये उदाहरण को ध्यान से पढ़िये।

प्रश्न	उत्तर के लिये स्थान
★ आपके विचार में आवश्यकता से अधिक धन का अच्छा उपयोग क्या है ?	
(च) और धन कमाने के लिये पूँजी के रूप में लगाना।	च (×)
(छ) दीन दुखियों को दान देना।	छ (✓)
(ज) जीवन के भौतिक सुखों और आरामों को प्राप्त करने के लिये खर्च करना।	ज ( )

इस उदाहरण में उत्तरदाता ने उत्तर (छ) सबसे अधिक पसन्द किया और उसके सामने कोष्ठक में 'सही (✓) का चिह्न' लगाया है। उसने उत्तर (च) को सबसे कम पसन्द किया है और उसके सामने कोष्ठक में क्रौस (×) का चिह्न लगाया है। उत्तर (ज) को उसने छोड़ दिया है। आपकी पसन्द इससे भिन्न हो सकती है।

2—प्रत्येक परिस्थिति में दिये गये उत्तरों से भिन्न बहुत से उत्तर हो सकते हैं, जो आपको सबसे अधिक या सबसे कम पसन्द होंगे। किन्तु आपको केवल दिये गये उत्तरों पर ही विचार करना है।

3—यह ज्ञान परीक्षण नहीं है। अतः सभी उत्तर सही माने जायेंगे।

4—आपके उत्तर पूर्णतया गोपनीय रखे जायेंगे।

5—प्रश्न सामाजिक परिस्थितियों पर आधारित हैं। अतः आप यह सोच सकते/सकती हैं कि उसी उत्तर को सबसे अधिक पसन्द किया जाये जिसे समाज अच्छा समझता है। लेकिन यह ठीक नहीं होगा क्योंकि तब आप अपने विचारों को सही रूप में नहीं प्रकट कर सकते/सकती हैं। अतः आप अपनी पसन्द को निडर होकर व्यक्त करें चाहे समाज उसे अच्छा समझता है या नहीं।

6—सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये, किसी प्रश्न को छोड़ना नहीं है।

7—समय की कोई सीमा नहीं है, किन्तु जो उत्तर आपको पहले विचार में उचित मालूम पड़े उसे ही अंकित कर दीजिये।

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (✗)

1. अपने निजी सम्बन्धी (बहिन, लड़की) के लिये योग्य वर के चुनाव में आप किस बात को महत्व देंगे/देंगी ?
   (ट) वर का कुल — ट ( )
   (च) वर की अधिक धन कमाने की योग्यता। — च ( )
   (ठ) वर का अच्छा स्वभाव। — ठ ( )

2. आप कैसे काम को पसन्द करते/करती हैं ? ऐसा काम जिसमें—
   (झ) आपके नियन्त्रण में कुछ लोग हों। — झ ( )
   (ज) आपके शरीर को सुख और आराम मिले। — ज ( )
   (च) आपके धन कमाने की अच्छी सम्भावना हो। — च ( )

3. यदि दण्डित होने का भय न हो तो आप किस परिस्थिति में असत्य बोल सकते/सकती हैं ?
   (ख) अपने मित्र की भलाई के लिये। — ख ( )
   (ट) अपने खानदान की इज्जत के लिये। — ट ( )
   (झ) अपने पद की इज्जत के लिये। — झ ( )

4. आप कहाँ नौकरी/व्यवसाय पसन्द करते/करती हैं ?
   (च) जहाँ पर अन्य जगहों से अधिक आय हो। — च ( )
   (ठ) जहाँ की जलवायु आपके लिये स्वास्थ्यवर्धक हो। — ठ ( )
   (ग) जहाँ सबके साथ समानता का व्यवहार होता हो। — ग ( )

5. यदि ईश्वर है तो आपके विचार में उसे कैसे समझा जा सकता है ?
   (छ) ज्ञान से। — छ ( )
   (क) भक्ति से। — क ( )
   (ख) लोक सेवा से। — ख ( )

6. अवकाश को आप किस प्रकार बिताना पसन्द करते/करती हैं ?
   (घ) अपने घर फुलवारी को सजाने या किसी कलात्मक रचना को पूरा करने में। — घ ( )
   (ख) समाज हित के कार्यों को करने में। — ख ( )
   (ज) सिनेमा, सर्कस देखने या किसी अन्य मनोरंजन के कार्य में। — ज ( )

7. सुखी जीवन के लिये आप किस बात को महत्व देते/देती हैं ?
   (ठ) बहुत अच्छा स्वास्थ्य। — ठ ( )
   (छ) मानव स्वास्थ्य का अच्छा ज्ञान। — छ ( )
   (घ) ललित कलाओं में अभिरुचि। — घ ( )

8. आप किस कार्य को करना बुरा मानते/मानती हैं ?
   (ज) विपरीत लिंगी (opposite sex) मित्र के सिनेमा देखने के प्रस्ताव को ठुकराना। — ज ( )
   (ग) अपने खिलाफ होने पर पंचायत का फैसला न मानना। — ग ( )
   (क) धन कमाने के लिये झूठ बोलना। — क ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

9. आप किसी नीची जाति के घर किस अवस्था में खाना खा सकते हैं ? यदि
   (ठ) खाना पौष्टिक (healthful) हो। ठ ( )
   (ख) वह आपका मित्र हो। ख ( )
   (झ) वह आपका अफसर हो। झ ( )
10. अनुचित तरीके से धन कमाने/कोई आचरण करने में आपको क्या भय लगता है ?
   (क) भगवान के दण्ड का। क ( )
   (झ) कानूनी दण्ड का। झ ( )
   (ख) बदनामी का। ख ( )
11. आपके विचार में शिक्षा कैसी होनी चाहिये ? जिसमें—
   (ग) लोग धर्म और जाति का विचार किये बिना सबके साथ समानता का व्यवहार करें। ग ( )
   (च) लोग जीविका कमाने के योग्य बनें। च ( )
   (क) लोग धर्म की मान्यताओं के अनुसार जीवन में आचरण करें। क ( )
12. आपके विचार में अधिक मेहनत से पढ़ना कब सफल होता है ? जब
   (च) अधिक धन कमाने की योग्यता बढ़ती है। च ( )
   (झ) ऊँचे अधिकारी बनते हैं। झ ( )
   (छ) नवीन सत्यों का पता लगाने की क्षमता उत्पन्न होती है। छ ( )
13. आप किस चित्रकला को अच्छी मानते/मानती हैं ?
   (ज) जो मनोरंजन करे। ज ( )
   (घ) जो सुन्दर भाव उत्पन्न करे। घ ( )
   (छ) जो किसी सत्य बात का निरूपण करे। छ ( )
14. आजकल के लोगों में आपको कौन-सी कमी नापसन्द है ?
   (क) ईश्वर में विश्वास की कमी। क ( )
   (घ) कलाओं में रुचि की कमी। घ ( )
   (ट) कुल मर्यादा की कमी। ट ( )
15. आप किस श्रेणी के व्यक्तियों को पसन्द करते/करती हैं ?
   (छ) विद्वान जो नवीन खोजों से ज्ञान बढ़ाते हैं। छ ( )
   (ठ) डाक्टर, वैद्य, हकीम जो स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। ठ ( )
   (च) उद्योगपति जो देश की आर्थिक उन्नति करते हैं। च ( )
16. यदि आपका भाई/लड़का नीचे कुल की लड़की से शादी करना चाहता है, तो आप क्या करना पसन्द करेंगे/करेंगी ?
   (ग) शादी करने देना क्योंकि आप सभी कुलों को समान समझते/समझती हैं। ग ( )
   (ट) शादी नहीं करने देना क्योंकि इससे कुल का सम्मान कम हो जायेगा। ट ( )
   (ज) शादी करने देना क्योंकि आप प्रेम में कुल की अपेक्षा सुख को अधिक महत्व देते/देती हैं। ज ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

17. आप किससे मित्रता पसन्द करते/करती हैं ? जो
- (ट) आपके समान खानदान का हो। ट ( )
- (क) अपने धर्म में पूर्ण विश्वास रखता हो। क ( )
- (घ) कला या साहित्य में रुचि रखता हो। घ ( )

18. आप महात्मा गाँधी को किस लिये पसन्द करते/करती हैं ?
- (झ) उन्होंने कांग्रेस संगठन को अपने नियन्त्रण में रखकर काम किया। झ ( )
- (क) उनका ईश्वर में अटूट विश्वास था। क ( )
- (ग) उन्होंने सबको समान अधिकार दिलाने का प्रयास किया। ग ( )

19. अपने व्यवसाय/नौकरी में सफलता पाने के लिये आप किस बात को महत्व देते/देती हैं ?
- (झ) अपने अधीन कर्मचारियों को नियन्त्रण में रखने की योग्यता। झ ( )
- (छ) काम के मुख्य सिद्धान्तों का ज्ञान। छ ( )
- (ग) सभी के साथ जाति, वर्ग (अमीर-गरीब) या धर्म का भेद। ग ( )

20. आपको अपनी किस भूल से दुख होगा ? जिससे
- (च) बड़ी आर्थिक हानि होती है। च ( )
- (क) धार्मिक मान्यता टूटती है। क ( )
- (ठ) स्वास्थ्य खराब होता है। ठ ( )

21. कलाओं को सीखने के लिये किये गये परिश्रम (साधन) को कब सफल मानते/मानती हैं ? जब
- (घ) उससे कलाकार को आत्म-सन्तोष मिलता है। घ ( )
- (ख) उससे दूसरे को आनन्द मिलता है। ख ( )
- (च) उसे जीविका का साधन बनाया जा सकता है। च ( )

22. लड़के/लड़की को अपनी शादी में किस बात का ध्यान रखना चाहिये ?
- (च) नये सम्बन्धी की आर्थिक दशा का। च ( )
- (ज) अपनी स्वयं की पसन्द का। ज ( )
- (ट) अपने कुल के लोगों की राय का। ट ( )

23. आप कैसे खाने को पसन्द करते/करती हैं ?
- (ख) जिसे कोई प्रेम-पूर्वक खिला दे। ख ( )
- (ज) जो खाने में आपको स्वादिष्ट लगे। ज ( )
- (ठ) जिसमें पोषण पदार्थ उचित अनुपात में हों। ठ ( )

24. आपने एक साथी के साथ काम करना प्रारम्भ किया। किस परिस्थिति में आप उस काम को नहीं करना चाहेंगे/चाहेंगी ?
- (ट) जब उससे आपके कुल पर धब्बा लगने का भय हो। ट ( )
- (ज) जब उससे आपके शरीर को कष्ट होने का भय हो। ज ( )
- (छ) जब आप निश्चित रूप से जान लें कि काम बुरा है। छ ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

25. आप कैसे मुहल्ले में रहना पसन्द करेंगे/करेंगी ?
(घ) जो कायदे से बसा हो और देखने में सुन्दर लगे। घ ( )
(ट) जहाँ आपके जैसे खानदान के पड़ोसी हों। ट ( )
(झ) जहाँ आप लोगों का नेतृत्व कर सकें। झ ( )

26. आप किसे अच्छा प्रशासन मानते/मानती हैं ?
(ख) जिसमें सहानुभूति एवं दया हो। ख ( )
(झ) जो सख्त अनुशासन रखे। झ ( )
(छ) जिसे प्रशासन के सिद्धांतों का ज्ञान हो। छ ( )

27. धन कमाने के लिये अत्यधिक आवश्यकता पड़ने पर भी आप किस काम को करना कठिनता से स्वीकार करेंगे/करेंगी ?
(ठ) जहाँ आपके स्वास्थ्य के खराब होने का डर हो। ठ ( )
(झ) जहाँ आपको बहुतों के अधीन रहकर काम करना पड़े। झ ( )
(ट) जिसे आपके कुल के लोग नीचा समझते हों। ट ( )

28. एक-एक लाख रुपया लाटरी में इनाम पाने पर तीन व्यक्तियों ने उसका अधिकांश भाग निम्नलिखित तरीके से व्यय किया। आपके विचार में किसने धन का अच्छा उपयोग किया ?
(ज) अपने सुख-सुविधा की सामग्रियों को खरीदने में। ज ( )
(च) अपनी आय को बढ़ाने के लिये पूंजी के रूप में लगाने में। च ( )
(ख) अपनी जाति की तरक्की करने के लिये। ख ( )

29. तीन व्यक्तियों में आप निम्नलिखित भिन्न-भिन्न गुण पाते हैं। आप किसका सम्मान करेंगे/करेंगी ?
(क) जिसका जीवन सादा और जिसके विचार धार्मिक हैं। क ( )
(ग) जो अमीर-गरीब का भेद किये बिना सबके साथ एक-सा व्यवहार करता है। ग ( )
(ख) जो जरूरतमंद लोगों को मदद करने में अपने सुख-दुख की परवाह नहीं करता है। ख ( )

30. आपके विचार में कविता का उद्देश्य क्या होना चाहिये ?
(छ) समाज को यथावत चित्रित करना। छ ( )
(घ) सुन्दरता का चित्रण करना। घ ( )
(ज) मनोरंजन करना। ज ( )

31. आपके विचार में, सुबह के अच्छे समय में किस काम को वरीयता (प्रमुखता) देनी चाहिये ?
(ठ) स्वास्थ्य ठीक रखने के लिये टहलना, कसरत करना। ठ ( )
(छ) ज्ञान-वर्धन के लिये अध्ययन करना। छ ( )
(क) ईश्वर की पूजा या चिन्तन करना। क ( )

32. आप अच्छे स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण क्यों समझते/समझती हैं ? क्योंकि तभी :
(ज) आप इस दुनिया के सुखों का आनन्द ले सकते/सकती हैं। ज ( )
(ट) आप अपनी योग्यताओं का पूर्ण विकास तथा उपयोग कर सकते/सकती हैं। ट ( )
(ग) आप निडर होकर सभी के साथ समानता का व्यवहार कर सकते/सकती हैं। ग ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

33. यदि आपको व्यक्तिगत सहायक की आवश्यकता हो तो आप किस उम्मीदवार को रखना पसन्द करेंगे/करेंगी ?
   (ट) जिसके पास आवश्यक योग्यता है और साथ ही जो अच्छे कुल का है। ट ( )
   (ग) जिसकी योग्यता सबसे अच्छी है ग ( )
   (ख) जिसके पास आवश्यक योग्यता है और साथ ही जो बहुत जरूरतमन्द (needy) है। ख ( )

34. आप किसी शुभ अवसर (जैसे जन्म-दिन) पर किस उपहार को लेना पसन्द करेंगे/करेंगी ?
   (घ) ड्रॉइंग रूम की सजावट के लिये नई शैली की वस्तु। घ ( )
   (च) सोने की अंगूठी। च ( )
   (ठ) किसी स्वास्थ्यवर्धक खेल का सामान जैसे बैडमिण्टन सेट। ठ ( )

35. आपके विचार में आज की परिस्थिति में अपने देश की भलाई के लिये कौन महत्वपूर्ण है ?
   (क) सच्चा धार्मिक नेता। क ( )
   (छ) अच्छा वैज्ञानिक। छ ( )
   (च) परिश्रमी उद्योगपति। च ( )

36. यदि कुछ समय के लिये आपको घर से बाहर एक कमरे में किसी के साथ रहना पड़े तो आप किसे पसन्द करेंगे/करेंगी ?
   (ट) जो आप जैसे कुल का हो। ट ( )
   (ग) जो जाति, धर्म, भाषा एवं वर्ग का भेद न रखता हो। ग ( )
   (घ) जो संगीत, चित्रकला, काव्य में रुचि रखता हो। घ ( )

37. कोई काम करने में आप किस बात का ध्यान रखते/रखती हैं ?
   (ख) उससे किसी व्यक्ति को दुःख न हो। ख ( )
   (ट) उससे खानदान की इज्जत कम न हो। ट ( )
   (ठ) उससे आपका स्वास्थ्य खराब न हो। ठ ( )

38. निम्नलिखित कुलों में से आप किसका सम्मान करेंगे/करेंगी ?
   (छ) जिसमें बहुत विद्वान/वैज्ञानिक पैदा हुये हों। छ ( )
   (ग) जिसके सदस्य अपने प्रजातान्त्रिक गुणों (जैसे धर्म में उदारता, भेदभाव न करना) के लिये प्रसिद्ध हों। ग ( )
   (झ) जिसमें से प्रशासक (जैसे कलक्टर, पुलिस कप्तान) पैदा हुये हों। झ ( )

39. आपके विचार में सच्चा क्या है ? जो यह विश्वास उत्पन्न करे कि—
   (ग) जाति, धर्म, भाषा आदि के आधार पर भेद नहीं करना चाहिये। ग ( )
   (घ) ईश्वर सभी सुन्दर चीजों में वास करता है अतः सुन्दता (कला) की साधना करनी चाहिये। घ ( )
   (क) ईश्वर सर्व-शक्तिमान, सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापी है, अतः धर्म-भीरु होना चाहिये। क ( )

40. किस कथन में आपका विश्वास है ?
   (झ) बड़ी जगह में सेवा करने से अच्छा है कि छोटी जगह में शासन किया जाये। झ ( )
   (ज) दुनियाँ में आकर जिसने अपनी इच्छाओं को तृप्त नहीं किया, वह जीते हुये मरा हुआ है। ज ( )
   (घ) साहित्य, संगीत और कला के लिये प्रेम से विहीन पुरुष पशु के समान हैं। घ ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

Confidential

आत्म-सम्बोध प्रश्नावली

[Self Concept Questionnaire]

SCQ

आर. के. सारस्वत
प्रवक्ता मनोविज्ञान
एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली–16

कृपया निम्न सूचनाओं को भरिये :—

नाम.................................... आयु.............................. ग्रामीण/शहरी..............................

लिंग.................................... जाति.............................. धर्म..............................

पिता का व्यवसाय.................................... मासिक आय..............................

SCORING TABLE (Area-wise)

Item No.	A	Item No.	B	Item No.	C	Item No.	D	Item No.	E	Item No.	F
2		1		4		5		6		7	
3		8		10		13		34		11	
9		21		14		15		35		12	
20		37		16		17		41		18	
22		40		19		25		42		33	
27		43		23		26		44		36	
29		46		24		30		45		38	
31		48		28		32		47		39	
Total											

Sum of all areas..............................

Est. : 1971 Phone : 65780

नेशनल साइकलॉजिकल कारपोरेशन

४/२३०, कचहरी घाट, आगरा–२८२००४

उद्देश्य—

सभी व्यक्ति एक से नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेषतायें होती हैं जो उनको दूसरों से भिन्न करती हैं। इन विशेषताओं के आधार पर व्यक्तियों के स्वभाव अलग-अलग होते हैं। व्यक्तियों में पाई जाने वाली कुछ विशेषताओं को लेकर आपसे आपके बारे में कुछ प्रश्न पूछे गए हैं। आप में यह गुण अलग-अलग मात्रा में होंगे। हम यह जानना चाहते हैं कि आपके इन गुणों का आपके जीवन के अन्य पहलुओं पर कैसा प्रभाव है। इस उद्देश्य की सफलता आपके सहयोग पर निर्भर है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि आपके द्वारा दिए गए उत्तर गोपनीय रखे जायेंगे। अतः आपसे अनुरोध है कि हर एक प्रश्न का उत्तर निःसंकोच भाव से दें।

निर्देश—

अगले पृष्ठों पर इस प्रश्नावली में दिए गए प्रश्नों और उनके सामने अथवा नीचे कुछ सम्भावित उत्तर दिए गए हैं। आप इन प्रश्नों तथा उत्तरों को ध्यान से पढ़ें तथा जो उत्तर आप अपने जैसा अर्थात् आप पर उचित हो उसके सामने रिक्त स्थान में सही का चिन्ह (√) बनायें; **आपको केवल एक ही उत्तर पर चिन्ह लगाना है।** आपकी सहायता के लिए एक उदाहरण नीचे दिया गया है। इस कार्य को करने के लिए कोई नियत समय नहीं हैं; परन्तु आपको प्रश्नों के उत्तर शीघ्रता से देने हैं।

उदाहरण—

यदि आप समझते हैं कि आपके दाँत सुन्दर हैं तो सही का चिन्ह (√) सुन्दर के सामने या नीचे दिए गए रिक्त स्थान में लगाइए जैस नीचे दिखाया गया है।

	अति सुन्दर	सुन्दर	सामान्य	सुन्दर नहीं	बिल्कुल सुन्दर नहीं है
● आपके दाँत कैसे हैं ?	( )	(√)	( )	( )	( )

प्रश्न						Obtained R. S.
1. क्या साथ के मित्र आप के पास सलाह लेने आते हैं ?	हमेशा ( )	अधिकतर ( )	कभी-कभी ( )	सामान्यतः ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[ ]
2. आपको अपना रूप कैसा लगता है ?	बहुत सुन्दर ( )	सुन्दर ( )	सन्तोषजनक ( )	अच्छा नहीं ( )	कुरूप ( )	[ ]
3. शारीरिक परिश्रम करते समय आप अपने को किस स्थान पर पाते हैं ?	बहुत शक्तिशाली ( )	शक्तिशाली ( )	सामान्य ( )	नाजुक ( )	अधिक नाजुक ( )	[
4. आपको अपना स्वभाव कैसा लगता है ?	सदा प्रसन्नचित ( )	प्रसन्नचित ( )	सामान्य ( )	अप्रसन्नचित ( )	सदैव अप्रसन्नचित ( )	[
5. आपको स्कूल की पढ़ाई कैसी लगती है ?	बहुत अच्छी ( )	अच्छी ( )	सामान्य ( )	अच्छी नहीं ( )	बिल्कुल अच्छी नहीं ( )	[
6. क्या आप धार्मिक रीति-रिवाजों में विश्वास रखते हैं ?	बहुत अधिक ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[
7. क्या आप दूसरों की आलोचना करने में भाग लेते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	अधिकतर नहीं ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[
8. क्या आप अपने विचार दूसरों के सम्मुख स्पष्ट रूप से व्यक्त कर देते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[
9. आपको अपना चेहरा कैसा लगता है ?	अति सुन्दर ( )	सुन्दर ( )	सामान्य ( )	विशेष नहीं ( )	कुरूप ( )	[
10. क्या आप अपने को खुश रखने वाले व्यक्तियों में से एक समझते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्य ( )	नहीं ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[

						Obtained R
11. क्या आप असामान्य व्यवहार भी कर देते हैं ?	सदैव ( )	प्रायः ( )	कभी-कभी ( )	अधिकतर नहीं ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[
12. क्या आप अपने को अनुभवी व्यक्ति समझते हैं ?	बहुत अधिक ( )	अधिक ( )	सामान्य ( )	कम अनुभव ( )	अनुभव रहित ( )	[
13. क्या आप अपने अध्यापकों के विषय में सोचते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	अधिकतर नहीं ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[
14. क्या आप अपने को शान्त प्रकृति का व्यक्ति मानते हैं ?	बहुत अधिक ( )	अधिक ( )	सामान्यतः ( )	कुछ अशान्त ( )	बहुत अशान्त ( )	[
15. क्या आप स्कूल द्वारा दिए गए गृह कार्य को पूरा करने में नियमित हैं ?	सदैव नियमित ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[
16. क्या आप दूसरों का अपमान कर देते हैं ?	कभी नहीं ( )	नहीं ( )	सामान्यतः ( )	अधिकतर ( )	सदैव ( )	[
17. कक्षा में जब शिक्षक कुछ समझाते हैं तो क्या आपको समझने में कुछ कठिनाई होती है ?	बिल्कुल नहीं ( )	अधिकतर नहीं ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	अधिकतर होती है ( )	[
18. क्या आप समझते हैं कि यदि आपको अवसर मिले तो आप कुछ नयी खोज कर सकते हैं ?	अवश्य ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	सन्देहात्मक ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[
19. आपके कार्य में यदि कोई व्यक्ति गलती निकाले तो क्या आप चिड़चिड़ा जाते हैं ?	बिल्कुल नहीं ( )	अधिकतर नहीं ( )	सामान्यतः ( )	अधिकतर ( )	सदैव ( )	[
20. आपको अपना व्यक्तित्व कैसा लगता है ?	अति आकर्षक ( )	आकर्षक ( )	सामान्यतः ( )	आकर्षक नहीं ( )	कुरूप ( )	[

R. S.	प्रश्न						Obtained R. S.
[ ]	21. आपको दूसरे लोगों का साथ कैसा लगता है ?	सदैव अच्छा ( )	अधिकतम अच्छा ( )	सामान्य ( )	कभी-कभी अच्छा नहीं लगता ( )	बिल्कुल अच्छा नहीं लगता ( )	[ ]
[ ]	22. आपको अपने वजन से कितना सन्तोष है ?	पूर्ण सन्तुष्ट ( )	सन्तुष्ट ( )	सामान्य ( )	असन्तुष्ट ( )	पूर्ण असन्तुष्ट ( )	[ ]
[ ]	23. छोटी-छोटी मुश्किलों के आने पर क्या आपका व्यवहार चिड़-चिड़ा हो जाता है ?	बिल्कुल नहीं ( )	अधिकतर नहीं ( )	सामान्यत: नहीं ( )	कभी-कभी हो जाता है ( )	सदैव हो जाता है ( )	[ ]
[ ]	24. क्या आप डरपोक स्वभाव के हैं ?	बिल्कुल नहीं ( )	नहीं ( )	सामान्य: ( )	अधिकतर ( )	बहुत अधिक ( )	[ ]
[ ]	25. पढ़ाई में इस समय आपका जो स्थान है उससे आपको किस हद तक सन्तोष है ?	पूर्ण सन्तुष्ट ( )	सन्तुष्ट ( )	सामान्य ( )	कुछ असन्तुष्ट ( )	पूर्ण असन्तुष्ट ( )	[ ]
[ ]	26. विद्यालय में ली जाने वाली परीक्षायें आपको कैसी लगती हैं ?	बहुत अच्छी ( )	अच्छी ( )	सामान्य ( )	अच्छी नहीं ( )	बिल्कुल अच्छी नहीं ( )	[ ]
[ ]	27. आपकी आवाज कैसी है ?	बहुत अच्छी ( )	अच्छी ( )	सामान्य ( )	कुछ अच्छी नहीं ( )	असन्तोषजनक ( )	[ ]
[ )	28. उपन्यास पढ़ते या चलचित्र देखते समय उसका अन्त जानने की क्या आपको प्रारम्भ से ही उत्सुकता रहती है ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यत: ( )	नहीं ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[ ]
[ ]	29. आपको अपना स्वास्थ्य कैसा लगता है ?	बहुत अच्छा ( )	अच्छा ( )	सामान्य ( )	कमजोर ( )	अशक्त ( )	[ ]
[ ]	30. कक्षा में आपकी उपस्थिति कैसी है ?	सदैव उपस्थित ( )	अधिकतर उपस्थित ( )	सामान्य ( )	प्राय: अनुपस्थित ( )	अधिकतर अनुपस्थिति ( )	[ ]

प्रश्न						Obtained R. S.
31. आपको अपनी ऊँचाई से कितना सन्तोष है ?	पूर्ण सन्तुष्ट ( )	सन्तुष्ट ( )	सामान्यतः ( )	कुछ असन्तुष्ट ( )	पूर्ण असन्तुष्ट ( )	[ ]
32. क्या आप अपनी कक्षा में ली जाने वाली परीक्षाओं में प्रथम स्थान पाने का प्रयत्न करते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	प्रायः नहीं ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[ ]
33. क्या आप कोई कार्य करने से पहले उसके गुण, दोषों को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[ ]
34. सत्य बोलने में आप अपने को किस स्थान पर पाते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	कभी नहीं ( )	[ ]
35. सार्वजनिक नियमों, जैसे सड़क, पार्क, रेलवे स्टेशन आदि सार्वजनिक स्थानों के नियमों का पालन करने में आप अपने को किस स्थान पर पाते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	कभी नहीं ( )	[ ]
36. क्या आप अपने सहयोगियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	कभी नहीं ( )	[ ]
37. जब आपकी कक्षा के साथी किसी पिकनिक आदि पर जाते हैं तो क्या आप उसकी व्यवस्था में भाग लेते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	कभी नहीं ( )	[ ]
38. क्या आप अपनी पढ़ाई की कठिनाईयों तथा अन्य समस्याओं को स्वयं हल कर लेते हैं ?	सदैव ( )	अधिकतर ( )	सामान्यतः ( )	कभी-कभी ( )	कभी नहीं ( )	[ ]
39. आप किसी चित्र को बनाते या देखते समय उसकी कलात्मकता पर कितना ध्यान देते हैं ?	बहुत अधिक ( )	अधिक ( )	सामान्यतः ( )	कुछ-कुछ ( )	बिल्कुल नहीं ( )	[ ]

आप अपना कोई विशेष कार्य कर रहे हों और आपके मित्र आपसे घूमने चलने के लिए कहें तो आप क्या करेंगे ? | Obtained R. S.

( )

सी समय चल देंगे ( )

कुछ विचार करने के बाद जायेंगे ( )

आप चुप रहेंगे ( )

विचार करने के बाद नहीं जायेंगे ( )

वक्त मना कर देंगे ( ) [ ]

देते समय आपको किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आ रहा हो और उसी विषय की पुस्तक आपके ी हो तो क्या आप पुस्तक की सहायता ले लेंगे ?

कभी भी नहीं करेंगे ( )

ने पर भी साहस नहीं होता ( )

न्यत: ऐसा नहीं करते ( )

देखकर पुस्तक का प्रयोग कर लेंगे ( )

ातिशीघ्र उस पुस्तक का प्रयोग कर लेंगे ( ) [ ]

दि आपको किसी तथाकथित नीची जाति वालों के घर पानी पीने का अवसर मिले तो आप क्या ?

( )

अवश्य पी लेंगे ( )

चार करके पानी पी लेंगे ( )

ई पर ध्यान देंगे ( )

पी लेंगे पर किसी को बतायेंगे नहीं ( )

नहीं पीयेंगे ( ) [ ]

आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों से मिलने-जुलने में संकोच करते हैं ?

ल संकोच नहीं करते ( )

भी संकोच करते हैं ( )

तः संकोच नहीं करते ( )

र संकोच होता है ( )

कोच करते हैं ( ) [ ]

बस की लाइन में खड़े हुए बहुत समय हो चुका हो और जब बस आई तो कुछ पैसेन्जरों को ण्डक्टर आपका नम्बर आने पर आपको रोक देता है क्योंकि बस में जगह नहीं है ऐसी

ा में आप क्या करेंगे ( )

स की प्रतीक्षा करेंगे ( )

डक्टर से विनती करेंगे ( )

गकर बस पर चढ़ने का प्रयत्न करेंगे ( )

ी के पैसेन्जरों को धक्का देकर बस पर चढ़ने का प्रयत्न करेंगे ( )

गुल करेंगे ( ) [ ]

Obtained

45. यदि आपको अपने किसी मित्र के दुश्चरित्र होने के बारे में पता लगे तो आप क्या करेंगे

मित्रता बिल्कुल तोड़ देंगे ( )

मित्रता कम कर देंगे ( )

मित्रता बनाए रखेंगे पर मित्र को समझायेंगे ( )

मित्रता पूर्ववत् ही बनाए रखेंगे ( )

मित्रता और प्रगाढ़ कर देंगे ( ) [

46. आपको चार कार्य करने हैं—(क) बीमार भाई को दिखाने के लिए डॉक्टर को बुलाना है; (ख) दूसरे दिन बाहर जाने के लिए तैयारी करनी है; (ग) उपन्यास पढ़ना है; तथा (घ) मित्र बाहर जा रहा है इसलिए उससे मिलने जाना है। इन चार कार्यों में से आपकी पहली पसन्द क्या होगी ?

बीमार भाई को दिखाने के लिए डॉक्टर को बुलायेंगे ( )

बाहर जाने की तैयारी करेंगे ( )

उपन्यास पढ़ेंगे ( )

मित्र से मिलने जायेंगे ( )

ऊपर के कोई भी कार्य नहीं करेंगे ( ) [

47. आपका मित्र आपको एक हजार रुपए रखने को देता है और जब आप उसको गिनते हैं तो उसमें एक सौ रुपए अधिक निकलते हैं तो आप क्या करेंगे ?

सौ रुपए उसी समय मित्र को वापस कर देंगे ( )

मित्र को उसी समय बता देंगे ( )

पर्स वापिस करते समय 1100 रुपए वापस कर देंगे ( )

यदि मित्र को पता न चले तो जहाँ तक सम्भव हो एक सौ रुपए निकाल लेंगे ( )

100 रुपए अवश्य निकाल लेंगे ( ) [

48. क्या आप दूसरों की इच्छा को ध्यान में रखकर कार्य करना पसन्द करते हैं ?

सदा दूसरों की इच्छा को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं ( )

अधिकतर दूसरों की इच्छा को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं ( )

सामान्यतः दूसरों की इच्छा को ध्यान में रखकर कार्य करते हैं ( )

कभी-कभी दूसरों की पसन्द पर ध्यान नहीं देते हैं ( )

सदा अपनी इच्छानुसार कार्य करते हैं ( ) [

ARCHNA PRINTERS, AGRA-2